ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

मई - 2026 / वर्ष - 11, अंक - 2

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group

Shri Ram
Associates

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

बुकिंग मात्र
11000 में

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS | FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

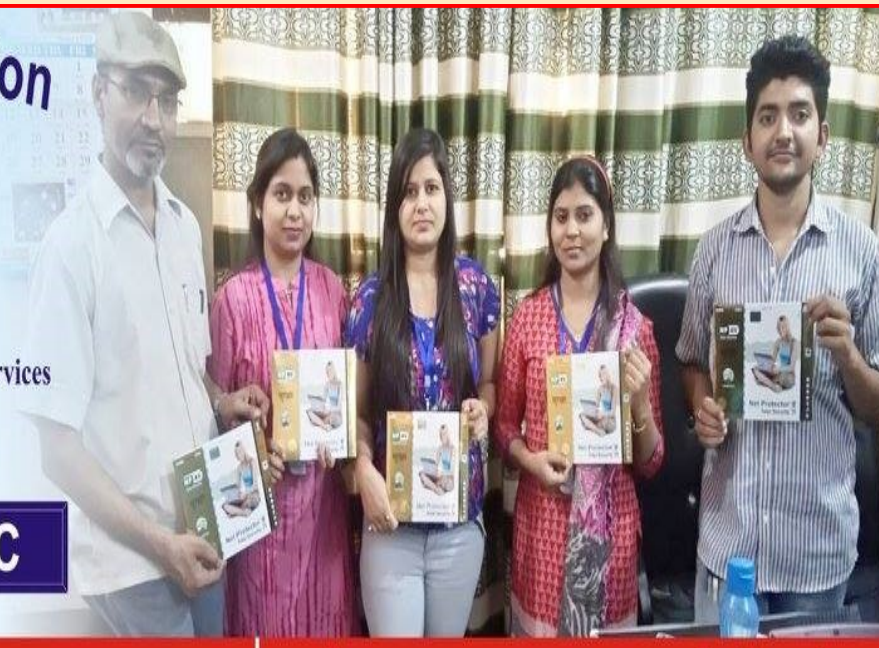

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला

विनोद यादव, गाजियाबाद

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय (दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)
प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
सौरभ पाण्डेय,नैनी, प्रयागराज (उ0प्र0)
दिनेश पाण्डेय, पटना
डॉ जयंत शुक्ला, इंदौर (म0प्र0)

तकनीकी एडिटिंग-कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र (कवर पेज)सहयोग

केशव मोहन पाण्डेय –**नई दिल्ली**

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्य गण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),

डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना, डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002

PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com

Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

संपादकीय

समय के संगे साँप-सीढ़ी के खेला- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/5

धरोहर

सोचा आजादी पउलस के –राम जियावन दास 'बावला'/6

विविधा

एगो मसखरापन के भाव-कुभाव हर जगह हावी बा-डॉ चंद्रेश्वर/7-8

आलेख/शोध लेख/निबंध

भोजपुरी लोकगीतन में नारी जीवन के समाजशास्त्र
-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /9-15
मारीशस देस के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि ब्रजेन्द्र कुमार मधुकर भगत
-पं. अपूर्व नारायण तिवारी 'बनारसी बाबू'/16-19
भोजपुरी भाषा: एगो पड़ताल-डॉ रजनी रंजन /31-32
कुँवर सिंह के आखिरी रात – मनोज भावुक/37-38

कहानी/लघुकथा / रम्या रचना

आम बजट के कड़वा घूँट
- पं. अपूर्व नारायण तिवारी 'बनारसी बाबू'/19
नकाबपोस-रामयश अविकल/24-29
सुखिया के माई-छाया प्रसाद/32-35

कविता/गीत/गजल

पतलो के छान्ही पर-उमेश कुमार पाठक 'रवि'/8
चंद्रदेव यादव जी के पाँच गो गीत- प्रो. चंद्रदेव यादव/20-21
कवितन के जोरे करमकुटाई-डॉ सुनील कुमार पाठक/22
बिरही बारहमासा- डॉ शंकर मुनि राय 'गड़बड़'/23
हो झुलावे हिंडोलना लांगुरिया-प्रियंका पाण्डेय/29
अँगना में उतरे लें सूरज मुँडेर से –डॉ मोहन पाण्डेय 'भ्रमर'/30
धीया के बिदाई- शरण आशुतोष/30
अचरा-उदय शंकर प्रसाद/35

कविता / गीत / गजल

दू गो कविता-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/36
गमछा-गणेश नाथ तिवारी 'विनायक'/43
नेह के पाती-अभियंता सौरभ कुमार/43
माई हमार !- महेंद्र तिवारी/44
पइचा प पानी-सन्नी भारद्वाज /44
पसीना-लाल बहादुर चौरसिया 'लाल'/45
हमरे अछते कुँअरि के बरे- दिनेश पाण्डेय/45

रिपोर्ट

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के बिहार मेंआयोजित पहिलका अधिवेशन-1976 के रिपोर्ट
– अंकुश्री /39-42

बेगर लाग लपेट के

बड़का रंगदार के –जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /46

■■

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

समय का संगे साँप-सीढ़ी के खेला

समय लोगन का संगे साँप-सीढ़ी के खेल हर काल-खंड में खेलले बा,अजुवो खेल रहल बा। चाल-चरित्र-चेहरा के बात करे वाला लो होखें भा सेकुलर भा खाली एक के हक-हूकूक मार के दोसरा के तोस देवे वाला लो होखे,समय के चकरी के दूनों पाट का बीचे फंसिये जाला। एहमें कुछो अलगा नइखे। कुरसी मनई के आँखि पर मोटगर परदा टाँग देले, बोल आ चाल दूनों बदल देले। नाही त जेकरा लगे ठीक-ठाक मनई उनुका कुरसी रहते ना चहुंप पावेला, कुरसी जाते खीस निपोरले उहे दुअरे-दुअरे सभे से मिले ला डोलत देखा जाला। ई साँच जनला का बादो लो चेतबे ना करत। भा इहो कहल जा सकत बा कि समय अइसन लोगन के चेते ना देला। कबीर बाबा ई बाति बहुते पहिले बता देले रहें बाकि ओकर अरथ अभियो लोगिन के बुझाइल कि ना, समझ के परे बा। हम चाहतानी कि कबीर बाबा के बाति रउवो सभे एक बेर फेर से पढ़ीं, सुनी आ गुनी----

'चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय।।'

एह देस में धरम आ अध्यात्म के अनगिन सोता फूटल आ बहल, समय का संगे आपुसो में मिलल आ फेर एह समाज के महासमुंदर में समा गइल। ई एगो पक्ष रहल, दोसरका पक्ष इहो बाकि ओही समय में एगो धरम के लो दोसरा के मेटावे खाति कुल्हि उधातम कइल, मेटा ना पवलस आ खुदे बिला गइल। कतने राज आ राजा लो अइने, आपन राज फइलवलें, आपन आपन धरम जबरियो फइलवलें, बाकि उहो लो दोसरा धरम के खतम ना क पवलें, खुदे बिला गइलें। इहे खेला अजुवो चल रहल बा। कुछ लो अजुवो अइसन बा जे दोसरा मानसिक,सामाजिक अउर धार्मिक हानि पहुंचावे ला कुल्हि उधातम क रहल बा। उहो लो के हाल उहे होखी, जवन उनुका पहिले वाला लोगन के भइल रहे बाकि लो बूझल नइखी चाहत भा उहाँ सभे के बुझाते नइखे। एह कुल्हि करतूतन से देस, समाज आ साहित्य सभे प्रभावित होला, अजुवो हो रहल बा। बाकि आजु के नीति नियंता लो के हाल 'आन्हर गुरु, बहिर चेला' वाला भइल बूझाता।

कुछ लो कबों देस आ समाज के सनमान न करे खाति जामेला। अइसन लोगवा एहू घरी बा आ ढेर बा। आजाद देस में कब के आजादी माँगे लागता आ केहुके ई देस आजाद बा कि ना, पते नइखे। ढेर लो मिलके कबर खोने में लागल बा। कवनों कबर खोनला पर का भेंटाला, ई सभे मालूम बा। तबो लो खोने में जुटल बा। कुछ लो पाप नाशिनी गंगा के आशीष के सगरे ठेका उठा के बइठल बा आ लोगिन के जलाभिसेक करवा के पवित्तर करि रहल बा तबे नु काल्हु तक ले जे बाउर रहल भा अश्लील रहल, उहो लो अब नीमन हो गइल सुने में त इहों आवता कि संगे अवते आधा पाप असहीं बिला जाला। अब ओह लोगन का संगे मिल के सबकुछ हो रहल बा। इहे हाल साहित्य के लेके हो चुकल बा।

भोजपुरी साहित्य सरिता परिवार आपन लय बनवले साहित्य के बढ़न्ति में जतना संभव बा करे के परयास में लागल बा। यति गति के आपन रंग होला, आपन पौरुष होला, आपन वितान होला, ओहु से सभे परभावित हो जाला, त हमनिए के कइसे बाचब। तबो परयास बा कि कुछ नीमन होखे, एही सोच का संगे पत्रिका के ई अंक रउरा सभे के सोझा परोसा रहल बा। जय भोजपुरी !!

रउरा सभे के आपन--

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

सोचा आजादी पउलस के

देश भयल आजाद मगर रण कै बरबादी पउलस के।
सोचा आजादी पउलस के॥

के के आपन खून बहावल।
के आपन सर्वस्व लुटावल।
केकर लड़िका बनै कलक्टर ई ओस्तादी पउलस के।
सोचा आजादी पउलस के॥

केकरा बदे किरिन मुसुकाइल।
धरती केकरे नाम लिखाइल।
के तरुनी संग मउज उड़ावै, बुढ़िया दादी पउलस के।
सोचा आजादी पउलस के॥

केकरे आह से पर्वत टूटल।
शिव ब्रम्हा क आसन छूटल।
के जोगी बन अलख जगवलस, पर परसादी पउलस के।
सोचा आजादी पउलस के॥

शक्ति दीन कै अबहीं बाय।
जवने से सुरपति डर खाय
लोहे क बिटिया के ब्याहल, मगर दामादी पउलस के।
सोचा आजादी पउलस के॥

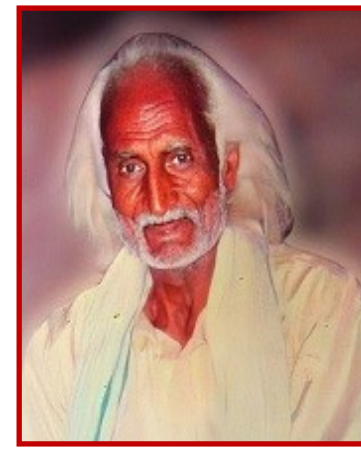

रामजियावान दास 'बावला'

जन्म—1 जून 1922
मृत्यु—1 मई 2012

प्रकाशित पुस्तक -

- गीतलोक
- गीत मंजरी

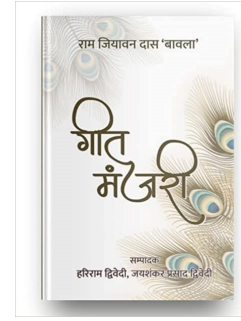

■■

❍ भीषमपुर , चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

"एगो मसखरापन के भाव-कुभाव सब जगह हावी बा।"

डॉ चंद्रेश्वर

1.एगो भोजपुरी निरगुन के मरम

"सभकर ख़ूनवा एकही रे हऊवे, धरमवा अलगा - अलगा बा। केहू माई-बाप के चरनिया के धोवे, केहू के माई-बाप दिन -रात रोवे। माई के ममता एकही रे हऊवे, ललनवा अलगा - अलगा बा। हीरा जनम पवल- s सुंदर तन हो, तब काहे गंदा बाटे तोहार मन हो। सभकर नेहिया एकही रे हऊवे,बिचारवा अलगा-अलगा बा।"

एह भोजपुरी पारंपरिक निर्गुण में जीवन के जइसे मए मरम राखि दिहल गइल बा। सभकर ख़ून के रंग एकही होला,लाल रंग। धरम अलग-अलग होला। अर्थात् धरम इंसानियत के बांटे के काम करेला। किछु लोग माई - बाप के ख़ूब सेवा करेला,किछु लोग के माई-बाप दिन-रात रोवत रहेला। माई के ममता एकही होला,ओकर संतान अलग-अलग होले। एह गीत में मनुष्य जीवन के हीरा लेखा बेशकीमती मानल गइल बा आ सवाल कइल गइल बा कि एतना कीमती आ सुंदर तन पा के ओकर मन काहे गंदा बाटे। आखिर में ईहो कहल गइल बा कि नेहिया एकही होले,बिचार अलग-अलग होला। कहे के गरज ई बा कि प्रेम जोड़ेला आ बिचार अलग करेला,एक से दोसरा के। एह निर्गुण में जेवन संदेश छुपल बा ऊ इंसान के इंसान से जोड़े वाला बा। एहिजा संवेदना प सब ज़ोर बा बिचार प किछुओ ना।

***

2. ग्लोबल रंगदार डोनाल्ड ट्रंप

"राजा हमार हंवें रंगदारवा जवारवा उन्हुकर नाँव जानेला।
नेता -अभिनेता-पुलिस थानवा लोगवा तमाम जानेला।"

उपरोक्त भोजपुरी गीत के बोल में केवनो विशेष कथ्य नइखे बुझात। एह गीत में एगो मेहरारू आपन मरद के तारीफ़ के पुल बांध रहल बिया। ऊ उन्हुका के राजा कहि के संबोधित कर रहल बिया। ऊ कह रहल बिया कि हमार राजा रंगदार हंवें। ज़िला-जवार उन्हुकर नाँव जानेला। एहिजा हम बतावल चाहब कि भोजपुरी अंचल में रंगदार गुंडा - अपराधी, धौंस जमा के काम करावे वाला, जबरन वसूली करे वाला के कहल जाला। भोजपुरिया समाज में मेहरारू राजा, राजा जी, रजऊ आदि संबोधन आपन मरद के देला लोग। एह भोजपुरी गीत में आपन रंगदार मरदो पर गरब कइल गइल बा। नेता, अभिनेता, पुलिस थाना सब जगह पर उन्हुका के लोग जानेला। एह गीत में अपराध आ गुंडई के एगो मेहरारू ग्लोरीफाई कर रहल बिया। ओकरा के आपन समर्थन दे रहल बिया। एह गीत में नैतिकता खातिर केवनो जगह नइखे। फिर भी भोजपुरी समाज में एह गीत के बोल सोशल मीडिया पर ख़ूब वायरल हो रहल बा। माफिया, अपराधी छवि के स्थानीय नेता लोग पर गीत के ई बोल सोशल मीडिया में रील के रूप में देखल जा सकत बा। एह भोजपुरी गीत के बोल से जानल जा सकेला कि हमार भोजपुरिया समाज केवना दिशा में जा रहल बा! लोग के पसंद का बा! एह गीत के बारे में गूगल जानकारी दे रहल बा कि एकर रचनाकार बिट्टू तिवारी हंवें। एकरा के दीपक तिवारी आ मुकुल सिंह गवले बा लोग। एही साल के फरवरी में एह गीत के लोकप्रियता मिलल बा। अब समय तेज़ी से बदल रहल बा। रचना में पहिले अच्छाई के पक्ष लिहल जात रहे। बुराई के कंडेम कइल जात रहे। अब बुराई के ऊपर गरब करे के सनेस दिहल जात रहल बा। एह गीत के वायरल भइला के परिघटना इहो सनेस दे रहल बा कि समाज में अब ऊहे महत्व पाई जे दबंग बा। धाक् जमा के बा। कमज़ोर अब रचना में भी जगह ना पाई। एह बात के आज वैश्विक संदर्भ में भी देखल जा सकेला। एह घरी वैश्विक परिप्रेक्ष्य में रंगदारी के सबसे बड़हन उदाहरण बाड़न डोनाल्ड ट्रंप।

***

3.सोशल मीडिया में वायरल भइल भोजपुरी गाना

आजुकाल्हु सोशल मीडिया में भोजपुरी गाना ख़ूब वायरल हो रहल बाड़े स। ई सब गाना भोजपुरी पारंपरिक लोक गीत के पैरोडी के रूप में सामने आ रहल बाड़े स। एगो पारंपरिक निरगुन ह -" एक दिन नदी के तीरे,जात रहनी धीरे - धीरे। हम आंखिन देखनी, सुंदर सरीरिया अगिया में जरेला हो राम।"
अब एही धुन प एगो गाना वायरल भइल बा -
" हम अंखियां देखनी, पियवा नचनिया ले के सुतेला हो ना।"
केहवां त एगो निरगुन में शरीर के नश्वरता के पाठ पढ़ावल गइल बा आ पैरोडी में ओकर धुन के रूपांतरण श्रृंगार रस में क दिहल गइल बा। एगो नारी के सौतिया डाह के,विरह -वेदना के मखौल उड़ावल गइल बा।

एही तरह से भोजपुरी में भतार,ईयार के बीच एगो नारी के अतिरंजित चित्र के उरेहल जा रहल बा। एगो वायरल गाना में प्रेमी के दयनीय दशा प कहल जा रहल बा -" सांझु -भिनुसरवा रोवे,दिन दुपहररवा रोवे। दिलवा तूड़ि -ओड़ि चलेले चिरइयां कि माड़ो के बांस धइ के ईयारवा रोवे।"

एही तरह से एगो दोसर वायरल गाना में अतिरेक में जा के कहल जा रहल बा -" बगसर से हमरा मजनुआ के पटना

रेफर कइले बा,जाए द ना नइहरवा ए सइयाँ,हमार ईयारवा जहरवा खइले बा।"
ऊपर के गाना में एगो लगले के बियहुता मेहरारू अपना मरद से अरज-निहोरा करत बाड़ी कि हमार ईयारवा जहर खा ले ले बा, बिछोह में। हमरा के नइहर जाए द,ओकरा से मिले खातिर।
साँच कहल जाई त कहल जा सकेला कि ई भोजपुरी के पापुलर धारा में पैरोडी जुग बा। एह में जन जीवन के रियल लाइफ के चित्र नइखे उभरत। हर बात आ रचल गइल दृश्य तर्कहीन आ अतिरंजना से भरल बा। कहे के परत बा कि एह सब गाना के समाज प उल्टा असर परि रहल बा। एक ओर त सोशल मीडिया में एह वायरल भइल गीतन के तर्ज़ आ धुन पारंपरिक आ मोहक बा त दोसरा ओर एह गीतन में जेवन अतिरंजित जथारथ के परोसल गइल बा ऊ नैतिक छरन के दरसा रहल बा। ई एगो तक़लीफ देह प्रसंग बा।
***

4. आखिर में जगरनाथवा बो

किछु दिन पहिले एगो भोजपुरी संवाद सोशल मीडिया प ख़ूब वायरल भइल रहे -"हमरा के जगरनाथवा बो क देले बिया।" एकरा प सैकड़न गो रील देखे के मिलल रहे। एह के देखि के लागत रहे कि ई एगो भोजपुरी प्रहसन के भीतर के संवाद ह। बाकिर ईहो बुझाय कि डाइन के जादू - टोना सांच होला। सोशल मीडिया के ई सब बात आसमान से नइखे टपकल। ई भोजपुरिया समाज के भीतर के अराजकता आ दशा -दिशा के दरसा रहल बा। एकर छवि एगो अइसन समाज के बन रहल बा जेवन अब आपन मौलिकता खो रहल बा आ पैरोडी के अपना रहल बा। एगो मसखरापन के भाव

❑❑

❍ लखनऊ,(उ0 प्र0)

उमेश कुमार पाठक 'रवि'

पतलो के छान्ही पर

पतलो के छान्ही पर, होरहा भुँजाइल।
बड़का ठग चाल चले,हिंदू अझुराइल।।

आरक्षण आइल,आ जोग जन छँटइले,
वोट लेबे खातिर, सब हिंदू बँटइले,
प्रमोशन आरक्षण दे, प्रतिभा हताइल।
पतलो के छान्ही पर, होरहा भुँजाइल।।

एक्ट एससी-एसटी, कतने बधइले,
यूजीसी-रेगुलेशन, जनरल सधइले।
राष्ट्रवाद, हिंदूराष्ट्र, खाड़े तँवाइल।
पतलो के छान्ही पर, होरहा भुँजाइल।।

पेंशन खतम कके, सब कर्मचारी के,
पारा-मिलिट्री, सीमा पहरदारी के,
नेतन के कइ-कइ गो, पेंशन लिआइल।
पतलो के छान्ही पर, होरहा भुँजाइल।।

माइनस चालीस प अब, डॉक्टर चुनइले,
पा नब्बे परसेंट, जनरल फेंकइले,
नफरत के बियवा बा, सगरी बोआइल।
पतलो के छान्ही पर, होरहा भुँजाइल।।

एक हिंदू करेके , ऊपर ले चरचा,
सभकरा में समरसता, भरे के परचा,
तहिया देश बँटल,आज हिंदू बँटाइल।
पतलो के छान्ही पर, होरहा भुँजाइल।

❑❑

❍ वनशक्ति नगर, वार्ड:08,
महिला आई टी आई रोड,
बक्सर (बिहार) 802101

भोजपुरी लोकगीतन में नारी जीवन के समाजशास्त्र

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी लोक साहित्य में लोकगीतन के बहुते समरिध परंपरा बा। लोकगीतन में सगरे समाज के संवेदना मुखर होके सोझा आइल बा। कवनो परिवार आ समाज के जाने-समुझे के एगो बरियार माध्यम लोकगीतनके मानल जा सकेला। भोजपुरिया समाज अपने रीति-रेवाजन के जी भर जियेला,बरतेला आ ओहमें सउनाइलो रहेला। जब भोजपुरिया समाज में मनोरंजन के कवनो साधन ना रहे त लइकन-बचवन के बझावे-मनावे खाति जवन सभे ले कारगर उपाय रहल, उ कहनी सुनल-सुनावल रहल। ओहि लेखा समाज आपन मनोरंजन गीत,संगीत आ नाच में हेरत-पावत रहे ।एकरा चलते भोजपुरी समाज के सोझा लोकगीतन के लमहर भंडार तइयार भइल । मनई त मनई ,भोजपुरी समाज के महिला लोग अपना प्रेम, बिरह, खुसी आ पीर के एही लोकगीतन में हेरत-पावत रहलीं। इहे उ भोजपुरिया लोक संस्कृति ह, जवन सदियन से बलखात अल्हण नदी लेखा बहत चलल आ रहल बा। भोजपुरी लोकगीतन में नारी जीवन के ओह हर पहलू –जनम, बियाह, प्रेम आ घर-परिवार में होखे वाले खिटिर-पिटिर के मरम के छुवे वाली बाति सोझा आवेले। ई लोकगीत महिला लोगन खातिर खाली मनोरंजने भर नइखे बलुक प्रतिरोध आ ईयादन के जोगावे के साधन रहल ह। भोजपुरिया लोकगीत जन-मानस के अंतस से निकलल एकदम निरइठ आ पावन मानसिकता आ भावुक-सरस सोच के देखावे वाला हमनी के पहिचान ह। जब कबो लोक साहित्य के बात होखी मने ओकरा के अनुभव से अलगा कऽ के ना देखल जा सकेला। मने देखल जाव त लोकगीतन में ओह समाज के लोगन के आपन बयान, अपने सुख-दुख के बयान,अपने इच्छा आ चाहत के बयान होला। ई लोकगीत अपना में गाँव-घर,सहर-बजार,सास-ननद,मरद-मेहरारू,खेत-खरिहान,देवर-भउजाई, गोतिया-गोतिनी,परजा-पवनी सभेके संहरियाय के आगु बहत रहेला। जवने लेखा लोक के आपन लय आ गति होले ओही लेखा लोकगीतन में ओकर झाँक देखाला। एह झाँक के सभेले बेसी मेहरारूवे जिएली, भोगेलीं आ निबाहेलीं। एही से कहल जाला कि लोकगीतन के अपनही कान्ह पर ढोवेली मेहरारू । मरद-मानुस त एकरा के अँगना-दुआर के सोभा बस मानत रहल बा।

कृष्ण देव उपाध्याय जी अपने पुस्तक 'लोक साहित्य के भूमिका' में लोक के परिभाषित करत कहले बानी, "आधुनिक सभ्यता से दूर अपने प्रकृतिक परिवेस में निवास करे वाली अशिक्षित आ असंस्कृत जनता के लोक कहल जाला । लोक के आचार-विचार आ जीवन शैली परंपरा से नियंत्रित होले।" आ लोकगीत के लेके कृष्ण देव उपाध्याय जी क़हत बानी , "लोकगीत साहित्यिक श्रेणी के गीत ना ह, बाक़िर ओहमें साहित्यिकता के अभाव नइखे। काहें कि ओकर संरचना शिष्ट साहित्य से प्रभावित होत रहलि ह। मानव मन एक्के ह, उ चाहे लोक के रचना करे भा शिष्ट के, ओकर संवेदना हर स्तर पर मिली। एही से कहल गइल बा कि 'गीत मनुष्य के सोभाव ह' । लोक साहित्य में लोकगीतन के दू गो परकार भेंटाला- फुटकर गीत , गाथा गीत भा लोकगाथा । गाथा गीत कथात्मक होले । ई दुनों वाचिक परंपरा के चिजु हवे। समाज के चिजु हवे। मने ई लोकजीवन में सामुहिकता के बोध करावेले।

भोजपुरी लोकगीतन में नारी चित्रण अक्सरहाँ बिरह आ परेम ,परिवारिक रिस्ता,बेटियन के दरद,पुरुष के सत्ता के बिरोध, श्रम के रूप-सरूप में भेंटाला । एह सभे पर विस्तार में बात कइल समाचीन होई। औरतन के सपना आ इच्छा, बिरह आ परेम का संगे ओकर पारिवारिक संघर्ष आ पीड़ा लोकगीतन में दर्ज होत रहल बा। लोकगीत गेयता आ भाव से भरल-पूरल होले आ हिरदया के सभेले बेसी परभावितो करेले। एह लोकगीतन के गावे आ सम्हारे के जीमवारी मेहरारूवे के सिरे रहल बा। जवना का चलते एकरा सिरजनो उहे लोग ढेर कइले बा। ई एगो मुख्य कारन बा कि लोकगीतन में स्त्री आपन सब कुछ के बयान कइले बाड़ी सन। स्त्री जबले महतारी ना बन जाले , तब ले ओकर पूर्णता ना मानल जाला। ओकरा के बाझिन कहि के सम्बोधन देहल जाला । एह सम्बोधन से मुक्ति खातिर स्त्री देवी-देवता के मनावत देखाले । एगो गीत देखीं-

"सासू मारे हदुका ननदिया पारे गारी हो मइया
गोतिनी बाँझिनिया धइली नांव,
मोर गोद भरनी मइया, गोतिनि बाँझिनिया धइली नांव।"

ई क्रम अबो ले टूटल नइखे।अजुवो ओकरा ला इहे विशेषण बा। एह पीर सहला का बाद उहे स्त्री अजुवो छठी माई के गोहरावत कहि रहल बा-

बरिसे बरिस पूजिला पाँव, ए छठी मइया
छूटित बझिनिया के नाँव, ए छठी मइया॥
रूनुकी झुनुकी एगो देतु बिटियवा

आइत दमाद मोरे ठाँव, ए छठी मइया।
(- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी)

बाक़िर जब घर में कन्या के जनम हो जाला त ओकर नीमन से देखभाल परिवार के लोग ना करेला आ ओह पर सभे निसुराइले रहेला। ओह महतारी का संगे जवना के कोख से बिटिया के जनम भइल रहेला, ओकरा संगे जवन बेवहार होला,ओहके एह गीत से बखूबी समुझल जा सकत बा। इहो देखीं-

"कुस ओढ़न कुस डासन बन फल भोजन रे।
ए ललना सुखुड़ी के जरेला पँसगिया निनरियौ ना आवेला रे।

भा इहों गीत देखीं-

जब मोरे बेटी हो लीहलीं जनमवाँ
अरे चारों ओरियाँ घेरले अन्हार रे ललनवाँ
सासु ननद घरे दीयनो ना जरे
अरे आपन प्रभु चलें मुरुझाइ रे ललनवाँ।

मने परिवार के लोगन से इतर ओह मेहरारू के मरदो ना जा पावत रहे। एकरा पाछे अगर देखल जाव त एगो सामाजिक कुप्रथा के बड़ जोगदान रहे। लइकी होते ओकरा दहेज के चिंता माई-बाप के सतावे लागेले। लइका वाला के ओकरा माँग का हिसाब से अगर दहेज ना मिलल त लइकी के ससुरार में प्रताड़ना सहे के परत रहे,ई स्थिति ढेर-थोर अजुवो के समाज में बा।दहेज ला रकम जुटावल लोहा के चना चबाये लेखा रहे, भा ई कहीं बा। समाज के कमजोर लोगन से उहो ना जुट पावत रहे त बाल विवाह आ बेमेल विवाह समाज में ढेर संख्या में होत रहे। समाज के आर्थिक विषमता के उपजल, एह समस्या पर भिखारी ठाकुर जी आपन लेखनी चलवले बाड़न आ समाज के जगावे के परयास कइले बाड़न।'बेटी बेचवा' के ई गीत केहुओ के मन के झकझोर देवेले-

"रूपिया गिनाई लिहला, पगहा धराई दिहला
चेरिया के छेरिया बनवला हो बाबूजी। "

भा भिखारी ठाकुर के एगो इहों गीत जवन लोककंठ में अजुवो बा। इहो देखीं-

चलनी के चालल दुलहा सूप के फटकारल हे,
दिअका के लागल बर दुआरे बाजा बाजल हे।
आँवा के पाकल दुलहा झाँवा के झारल हे
कलछुल के दागल, बकलोलपुर के भागल हे।
सासु का अंखिया में अन्हवट बा छावल हे
आइ कऽ देखऽ बर के पान चभुलावल हे।
आम लेखा पाकल दुलहा गाँव के निकालल हे
अइसन बकलोल बर चटक देव का भावल हे।
मउरी लगावल दुलहा, जामा पहिरावल हे
कहत 'भिखारी' हवन राम के बनावल हे।

एकरा संगही भोजपुरी के आचार्य कवि धरीक्षण मिश्र के बहु चर्चित गीत 'कवना दुखे डोली में रोवत जाति कनिया' महिला लोगन के पीर के बहुत धारदार ढंग से समाज के सोझा लेके आइल बा।

भोजपुरी के लोकगीतन में लइकिन के पीड़ा कई गो बाप-बेटी संवाद गीतन में उभर के सोझा आइल बा। बर खोजे जा रहल अपने बाबा से बेटी निहोरा करि रहल बा कि ओकरे बियाह खातिर बर धान उपजावे वाला देस में ना जासु। ओकर उ कारनो अपने बाबा के बता रहल बा। धान के सुखावे, चलावे आ कूटे के सज्जी काम मेहरारूने के जी में रहत रहे आ ओह घरी के खान -पान के हालो के एह गीत से बखूबी समुझल –देखल जा सकत बा।

"गोड़ तोही लागिले बाबा हो बढ़इता से आहो रामा
धनवा-मुलुक जनि बियाह हो रामा।
सासु मोरा मरिहें गोतिनि गरिअइहें से आहो रामा
लहुरि ननदिया ताना मरिहें हो रामा।
राति फुलइहें रामा दिन उसिनइहें से आहो रामा
धनवा चलावत घामे तलफबि हो रामा।
चार महिना बाबा एहि तरे बितिहें से आहो रामा
खाये के माड़गिल भतवा हो रामा।
राजकुमारी सखी कहि समझावे आहो रामा
बिना सहुरे सब दुखवा हो रामा।"

बेटी अपने बाबा से बहुत दूर बर खोजे ला बरजि रहल बा ।बरिजे के आपन बरियार कारनो बा। जवना समय में एक जगहा से दोसरा जगह चहुंपल दुरूह काम होत रहल। आवे –जाये के साधन के अभाव रहे। अइसना बिटिया के नइहर से ओकरे भाई-बाप के न पहुंचला पर आ नइहरा में ना बोलवला पर ओके अपना ससुरे में बिंग बोल सुने के पड़त रहे। देखीं-

जवना बने सींकियों ना उपजइ, बघवो ना बोली बोले हो राम
रामा तवना बने बाबा मोर बियहलें त सुधिओ ना लिहलें हो राम।
मचिया ही बइठल मोर सासु बिरह बोलिया बोलेलीं हो राम
बहुवा केथुया के हउवें तोर माई-बाबा ,
केथुया के भइया भउजी हो राम
कठवा के हउवें मोरा बाबा त, बजर के माई हईं हो राम।
सासु भइया मोरा भउजी के बस में त,
सुधियो ना लिहलन हो राम।
एक बने गइली, दूसरे बने, अउरी तीसरे बने हो राम
रामा बारह बरिस बीत गइलें त, नइहर ना गइलीं हो राम।

होत भिनसार पह फाटल, चिरइया एक बोलेले हो राम
रनिया छूटल मयारिया के गोंद, सपन भइलें भइया भउजी हो राम।
जवना बने सींकियों ना उपजइ, बघवो ना बोली बोले हो राम ॥

बेटी के बियाह ठीक हो गइला पर माड़ो छवावे के रसम होत रहे , तब बेटी अपने पति के चिंता करि रहल बा आ अपने बाबा से माड़ो कइसन छावल जाव, एह पर आपन विचार दे रहल बा –

झाँझर मड़उवा जिन छवइहा मोरे बाबा,
कि लाग जइहें सुरुजू कइ जोत।

ई गीत उहाँ छवात माड़ो से बेसी बेटी के जिनगी के चिंता के बखान करि रहल बा। बेटी सगरी कनिया लोगन के प्रतिनिधि का रूप में उहाँ बाड़ी। बेटी अपने बाबा से आश्वासन चाहत बाड़ी कि उनुके दुलरूई बिटिया के ससुरे में तनिको सा दुख-तकलीफ न होखे। बाबा उनुके मन के भाव बूझ जात बाड़ें आ अपने बिटिया के आस धरावत कहतारें-

'कहतू ते ये बेटी तमूवाँ तनवती, सुरुजू के करतीं अलोप।'

ए बेटी! अइसन जनि कहऽ। तू कहबू त हम अइसन तम्मू तनवा देबऽ जवना से सुरूज ढ़का जइहें। मने अइसन मजगुत घर तहरा हम देबऽ जवने के नियरे कवनो दुख-तकलीफ चहुंपबे ना करी। वैज्ञानिक लो के बुद्धि एकरा दंभ आ विद्वान लो एकरा झूठिया क आस बोली आ बस के बहरा के बाति बताई। बाकि अइसन बाति नइखे,अपना औकात से ढेर आगे बढ़िके केकरो ला सुरक्षा के आस बन्हावल मुरुखई ना बलुक गहिराह परेम के बाति होले। अइसना में कवनो बाप अपने दुलरूई बेटी खाति का-का ना सोच सकेला। चाहे जइसे होखे, अपना दुलरूई बेटी के आस बन्हइबे करी। अइसन ना कइला पर उनुकर कुल्हि तपस्या बिरथा नु हो जाई।

अइसने आस बन्हावे वाले सुख के परिखे में ना जाने कतने बरिस से घूमी रहल बाड़ें। अपना बिटिया के जोग दुलहा खोजे खाति कहवाँ-कहवाँ के धूर नाही छनलें। उ जात रहलें आ लउट के खलिहा चलि आवत रहलें। हर बेर अइसने होत रहे , थकला का बाद उनुका लागत रहे कि उनुकर बेटी कुँवारे रहि जाई।

'पूरुब में खोजली बेटी पछिम में खोजली
खोजि अइली देस संसार।
तोहरे सरीखे बेटी बर नाही पवली,
अब बेटी रहि जइहें कुँवार।'

इहवाँ सरीखे सबद विचार करे जोग बा। बर त हर गाँव में बाड़ें, गाँव के घर-घर में बाड़ें। बाकि हमरे कनिया के जोग बर कहीं नइखे मिल पावत। कतों घर बा त बर नइखे आ कतों बर बा त घर नइखे। बाबा के मन के भावते नइखे, त कइसे तइयार होखें। सुन्नर घर आ बर बाड़ें, इनको कमी नइखे। बाकि उहाँ चहुंपे खाति बाबा के समरथ नइखे। थाकल बाप के लागता कि उनुकर बेटी कुँवारे रहि जाई। ई गीत अजुवो के लइकिन के बाबूजी लो के मजबूरी आ उनुका लो के मन के टीस के एकदम नीमन से उकेर रहल बा।

बेटियो भारत के रहनिहार बिया। संस्कार से भरल-पूरल आ आतमा के आवाज सुने वाली। उ अपने बाबूजी के पीर बूझ गइल। उ आपन जिनगी दाँव पर लगा सकेले। उ अपना के मेटा के दोसरा के खुस राखे वाली भावना से अपने करेजा पर पाथर राखि के बाबा के दुख हर लेवेले। अपना बुद्धि से अपने बाबा के राह असान बना देवेले। अपने बाबा के सोझा आपन विचार राख देवेले-

''साँवर बर देखि जिनि भरमा ए बाबा,
साँवर सिरी भगवान।''

ए बाबा ! तूँ साँवर बर देखि के ओकरा के हमरा जोग नइखे,अइसन सोचि के भरम में मति पड़ा। साँवर होखल कउनों बाउर बाति नइखे, साँवर त भगवान सिरी क्रिसनों रहलें। अब बताईं, आपन बलिदान देके, अपना के दुख चहुंपा के दोसरा के सुख चहुंपावे वाली भावना आउर कतों भेंटाई?

त केनहूँ बाति बन गइल। आगु क हाल ढेर अझुराइल बा-

जब बेटी ससुरे जाये लागेले, त माई बाबूजी के करेजा फाटे लागेला। गलानी, छोभ, करुना मतिन भाव से मन भरि जाला। कंठ रुन्हा जाला। इहाँ खुसी आउर दुख दूनों बा। बाकि अपना आँखि के पुतरी से बिछोह नाही सहाला आ माई-बाबूजी लो बउराह लेखा हो जाला आ फेर ओरहनों देला लो-

'खोनवन-खोनवन बेटी दुधवा पिअउली
दहिया खिअउली साढ़ीवाल।
कोरवाँ से कबों नाही भुइयाँ उतरली
रखली मे अँखिया के छाँव।
एकहु नुकुति नाही मनलू मोरि बेटी
लगलू सुन्नर बर साथ।''

भोजपुरी लोकगीतन में नारी के एक्के पक्ष के नइखे उकेरल गइल । ओकर एगो दोसरों पक्ष बा, उहो देखल जाव।अयोध्या के राजमहल में राम के जनम के उत्सव मनावे के तइयारी चल रहल बा , बाक़िर राजा दशरथ के वाटिका के हिरनी उदास बा, हिरन-हिरनी के आपस के संवाद के एगो लोकगीत देखीं-

''छापक पेड़ छिउलिया न पतवन गहबर हो
ललना ताहि तरे ठाढ़ हरिनियाँ त चितवति अनमनि हो
चरतहिं-चरत हरिनवाँ त हरिनी से पूछेला हो

हरिनी किया तोर चरहा हेरइले, कि पानी बिना मुरझल हो
नाहीं मोर चरहा हेरइलें, न पानी बिनु मुरझल हो
स्वामी आजु हउवे राम के बरहिया त तोहें मारि खइहनि हो"

हिरन मारि के ओकर मास लोगन के खाये के खातिर पकावल जा रहल बा। त उहे हिरनी रानी कोसिला से अरज करि रहल बा कि हमरा के हमरे हिरन के खाल दे देहीं बाक़िर रानी ओकरो खातिर मना कऽ देत बाड़ी-

"मचिया बइठली रानी कोसिला त हरिनी अरज करे हो
रानी मसवा त सिंझले रसोइयाँ, खलरिया हमके देतू न हो।
पेड़वा पर टँगबो खलरिया त मन समुझावन हो
रानी हिरीफिरी देखबि खलरिया मानहूँ स्वामी जीयत हो।
जाहू-जाहू हरिनी अपन बने, खलरी ना देइबि हो
हरिनी! खलरी से खँजड़ी मढ़इबो त,राम मोरा खेलिहनि हो".

हिरनी कुछ ना कर पावत बिया, महल से आवत खझड़ी के अवाज सुनि के अपने हिरन के इयाद में बिसुरति बा-

"जब-जब बाजेले खँजड़िया हरिनी सुनि बिलखेली हो
ललना छापक पेड़ छिउलिया बइठि हरिनी बिसुरेली हो"

ई प्रसंग एके संगे पीड़ा के कई गो परत खोल रहल बा आ संगही राजतंत्र के निरंकुसता के बाति सोझा लेके आ रहल बा।

उहें एगो अइसनो गीत बा जहाँ रानी कोसिला राम के बन चलि गइला का बाद अपने गोतिन केकई के कोस रहल बानी। राम के वियोग उनुका सहात नइखे।

केकई बड़ा कठिन तूँ कइलू
राम के बनवा भेजलू ना।
हो हमरो केवल हो करेजवा
तुहू काढियो लेहलू ना।
हमरा राम हो लखन के
तुहू बनवा भेजलू ना।
हमरा सीतली हो पतोहिया
के तूँ बनवा भेजलू ना।
केकई बड़ा कठिन तूँ कइलू
राम के बनवा भेजलू ना।।

भोजपुरी अस्मिता के नायक महेंदर मिसिर के गीतन में नारी के सगरी पीर के शब्द मिलल बा। मरद के बहरा कमाये चल गइला पर ओकरे बिहउती से ओकर सासु कइसे दुख दे रहल बिया।घर-परिवार के सागरी काम ओह मेहरारून के करे के परत रहे। घर-बाहर, चुल्हा-चउका, बरतन-बासन, खेती-खरिहानी जइसन कामन के कइला का बादो नदी भा ईनार से पनियो भरि के लियावे के पड़त रहे। देखीं एगो बानगी -

सासु मोरा मारे रामा बांस के छिउंकिया, ए ननदिया मोरी रे
सुसुकत पनिया के जाय, ए ननदिया मोरी रे।
हथवा में लिहली ननदो सोने के घरिलवा, ए ननदिया मोरी रे।
चली भइली जमुना किनार , ए ननदिया मोरी रे।

मेहरारून के पिया परदेस गइले, त उहें के जइसे होके रहि गइले, बरिसो-बरिस बीत जात रहे , ना कवनो चिट्ठी ना सनेसा भेजत रहे लोग। एगो ई प्रसंग देखे जोग बा। एगो मरद अपने मेहरारू के घरे छोड़ि के कमाये चलि जात बा। जात के बेरा अपनी मेहरारू के एगो सुग्गा दे के जात बा। ओह मेहरारू पर जब ओकरे सास, ननद आ गोतिनी के जुलुम बढ़ जात बा, त उ मेहरारू ओही सुग्गा से अपने स्वामी जी के लगे अपने हाल के सनेसा भेजवा रहल बा।

पिया मोरे गइले रामा पुरबी बनिजिया, से देके गइले ना,
एगो सुगना खेलवना से दे के गइले ना।
उड़त-उड़त सुगना गइले कलकतवा, से जाके बइठे ना,
ओही सामी जी के पगिया , से जाके बइठे ना।
पगड़ी उतारी सामी जांघे बइठवले, से कह सुगना ना,
मोरा धनि के कुसलिया, से जाके बइठे ना।
माई कइली कूटनी, बहिनिया कइली पीसनी, से जइया कइली ना,
तोहरो दउरी-दोकनिया से जइया कइली ना।
क़हत महेन्दर सुनि सुगना के बतिया, पिया सुसुके लगलें ना,
सुनि के धनिया के हलिया, पिया सुसुके लगलें ना।

आल्हा बीर रस में लिखाइल बा, आ ओही रस में गावलो जाला। एगो समय अइसन रहल बा, जब लोग आपन बीरता देखावे के खातिर दोसरा के बिटियन के बलात उठवा लेत रहे। एह बाति के परतोख महाभारतो में भेंटाला। जहाँ भीष्म कासी नरेश के कन्या भा गंधार से गांधारी के बलाते लेके आइल रहलें।

जाकी बिटिया सुन्दर देखी, ता पर जाई धरे तरवार।।

जवना घरी समाज में मेहरारून के सुरक्षा के हाल बाउर रहे , ओह घरी मध्य वर्गीय भा निम्न मध्य वर्गीय परिवारन के बड़-बूढ़ सुरक्षा के सिखावन परतोख का संगे देत रहलें। एह गीत से ई बाति के सत्यता सोझा आ रहल बा-

"पिसना के परिकल मुसरिया, तुसरिया;
दूधवा के परिकल बिलार;
आपन जोबनवा संभारिये बिटियवा,
रहरी में लगल बा हुंड़ार"।

पित्र सत्ता के विरोध मने नारी विमर्श के जवन बाति हिन्दी साहित्य में 1980 के बाद शुरू भइल रहे, उहे बाति एकरे सैकड़न बरीस पहिले भोजपुरी लोक कंठ के गीतन में रहल । माई-बहिन लोग गावत रहलीं। एह गीत में बिटिया अपने महतारी से सवाल करत बिया ।

खाइ लेहू रे लेहू दहिया से रे भतवा
तोहरी बिदइया ए बेटी बड़े रे भिनुसार॥1॥
बिरना कालेउवा ए अम्मा हसी खुसी दिहीला
हमरा कलेउवा ए अम्मा दिहेलू खिसिआई॥2॥
हम बिरना ए अम्मा जन्मे एक्के संगी
संगे-संगे खेलनी ए अम्मा खइलीं एक संग ॥3॥
भइया के लिखल ए अम्मा बाबा कइ राजवा
हमरा लिखल ए अम्मा घर बड़ी दूरि॥4॥
अँगना घूमि-घूमि बाबा रे जे रोवैले।
कतहूँ ना सकीला हा बेटी के नेपुरवा झनकार ॥5॥

भोजपुरी लोकगीतन में खाली मेहरारून के दुख-दरद भर नइखे। परेम, मनुहार आ आपुस के चुहुल कम नइखे । ननद-भउजाई के चुहल से भरल दू गो कजरी गीत –

कवन रंग मूंगवा कवन रंग मोतिया कवन हो रंगे ना
ननदो रउरे बीरनवा, कवन हो रंगे ना ।
लाल रंग मूंगवा, सबुज रंग मोतिया, सांवरे हो रंगे ना
भउजी मोर बीरनवा, सांवरे हो रंगे ना।
टूटी गइलें मूंगवा, खरकी गइलें मोतिया , रुसी हो गइलें ना
भउजी मोर बिरनवाँ , से रुसी हो गइलें ना।
गूँथी लेबो मूंगवा गुंथाई लेबो मोतिया, मनाई हो लेबो ना
ननदी रउरे बिरनवाँ, मनाइ हो लेबो ना।

भा एह कजरी गीत में भौजाई अपना ननद के झूला झूले भा कजरी खेले खाति बरजि रहल बा , संगही चुहुलो करि रहल बा। भोजपुरी लोकगीतन के एही ला समृद्ध मानल गइल बा।

कैसे खेले जइबू सावन में कजरिया
बदरिया घेरि आइल ननदी।

तू तौ जात हौ अकेली
कौनो संग न सहेली
गुण्डा रोकि लींहें तोहरी डगरिया
बदरिया घेरि आइल ननदी।

भौजी बोलेलू तू बोली
सुनिके लागल हमरा गोली
काहे पड़ल बाड़ू हमरी नगरिया
बदरिया घेरि आइल ननदी।

केतने दामुल फाँसी चढ़िगे
केतने गोली खाके मरिगे
केतने पीसत होइहैं जेल में चकरिया
बदरिया घेरि आइल ननदी।

भोजपुरी लोक साहित्य में श्रम गीतन के लमहर परम्परा रहल बा। समय का संगे नई तकनीकि आवक भइल । ओकरा चलते कई गो विधन के गीत गवें-गवें अलोप होखे लागल बा। एह श्रम गीतन में जाति आधारित गीत खूब गवात रहलें, जवना में मेहरारून के सुख-दुख त रहबे कइल,उनुका मनोरंजन का संगही थकान मेटावे के एगो अस्त्र लेखा रहे। अक्सरहाँ एह गीतन के थकान के भुलवावे भा काम पर जाये के पहिले के तइयारी के बेरा गावल जात रहे। धोबी जाति के एगो गीत देखल जा सकत बा-

"मोटी-मोटी लिटिया लगइहे धोबीनिया की
बिहने चले के बा घाट,
तीनहूँ चीज मति भूलिहे धोबिनिया की
टिकिया, तमाकु, थोड़ा आग।"

भोजपुरी लोक साहित्य में श्रम गीतन के लमहर परंपरा रहल बा। अलगा-अलगा श्रम करे वाली जातियन के आपन पारंपरिक काम करत बेरा ओह गीतन के गावे क रेवाज़ देखाला। उ रेवाजन से बेसी उनके अपने काम में मस्ती के सुवास भरत रहे । तेली जाति ओह लोगन के बीच एगो अइसन समूह रहल जवन तेलहन से तेल निकाले के काम करत रहे। एगो गीत जवना में घानी अउर ओहसे तेल निकाले का जिकर बा। जवना में तेली अपने मेहरारू से पूछ रहल बा कि कवने जूने घानी लगवले बाड़ू आ तेलिन ओकरे के बता रहल बा-

कौनी जुनियां तेलिनि घनिया लगावे
अरे कौनी जुनियां ना ।
कोइलरि सबद सुनावे कि कौनी जुनियां ना
आधी की रतिया तेलिनि घनिया लगावे
कि पिछली रतिया ना ।
कोइलरि सबद सुनावे कि पिछली रतिया ना ।

कौनी जुनियां बाबा पूता के जगावे
कि कौनी जुनियां ना।
गोरिया चुड़िया खन-खनकावे कि कौनी जुनियां ना।
भिनुसहरा के बेरिया बाबा पूता के जगावे
कि भिनहीं बेरिया ना।
गोरिया चुड़िया खन-खनकावे
कि भिनही बेरिया ना।

रोपनी सोहनी गीतो अपने में महिला लोग के दुख-दरद का संगही इच्छो के अपना मरद के सोझा राखे क एगो सुखद मोका लेखा होत रहे। अबो रोपनी के समय में रोपनी करत बेरा अइसन गीत सुने के भेंटा जाले। एह गीत में मेहरारू अपने मरद से जवन-जवन निहोरा करी रहल बा , उ देखे जोग बा-

रतिया में हमरा सेजरियो नाही भावे,
मोर बलमुआ रे, सलवा–दुसलवा मँगाव। 2
सलवा-दुसलवा से चढ़ले सिर गरमिया
मोर बलमुआ रे, रसे-रसे बेनिया डोलाव।2
बेनिया डोलवते मोर मुरुकल कलइया
मोर बलमुआ रे, पटना से बयदा बोलाव।2
पटने के बयदा रे, मागे सात सै रुपइया
मोर बलमुआ रे, मोहर भजवलो ना जाय। 2
मोहरा भजावत हमरा पलटल पुतरिया
मोर बलमुआ रे, मेहर लइका जियरा के जवाल।2

जब फसल पाक जात रहे त मेहरारून के घर से ढेर खेतन में खटे के परत रहे।भिनसारे से खेतन से चूड़ी खनके के अवाज सुनाये देवे लागत रहे। उनुका जिनगी के सब जिमवारियन का संगे बरिस भर के अनाजों जुटावे के भीर रहत रहे।

''पाकि गइलय खेतवा लागल रेतवा,
झनकि बाजे हो धन खेते खेते चुरिआ, झनकि बाजे हो।
झूकि गइले गेहुंआ, लटकि गइले जउआ,
चटकि बाजे हो धन मटर के छिमिआं, चटकि बाजे हो
होत भिनुसार धनि लिहली हंसुअवा, चलि गइली हो
खेत काटे के सरेहिया, चली गइली हो।''

श्रम गीतन के एगो विधा जँतसार बिया , पाथर के जाँत में अनाज (गोहूँ, जव भा रहिला) पीसत के बेरा मेहरारू लोग गावत रहे। अक्सरहाँ दरद भरल बिरह गीत एह विधा में मिलेलीं। सास-ननद के बिरही बोल आ पलायन के पीर सहत नारी के हिया के बाति सोझा आ जाले। जँतसार के गीतन के सुनके ई लागेला कि ओह घरी के सास ढेर बहू लोग पर अत्याचार करत रहली। जइसही जाँत पीसत बेरा ओह लोगन एकांत भेंटाय, गीत का बहाने उनुका आपन पीर गवा जाय। एगो गीत जवना में नारी सवत के पीर त देखाते बा ,संगही ओह घरी समाज में पहिरावा से लोगन के जाति तक पता चल जात रहे,एहु के बरनन मिलत बा। ओह घरी राजा लोग एगो से बेसी रानी राखत रहलें आ परजा के बीच कवनो सुन्नर सुरेख कनिया मिल जात रहे त ओकरो से बियाह करे खातिर निहोरा कर देत रहलें। उनुका निहोरा के ठुकरावे के बिसात केकरो भीतरि ना रहत रहे।

नीची रे कुइयवाँ के ऊंची रे जगतिया ए राम
ए रामा पनिया जे भरेली बराम्हनी ए राम
घोड़वा चढ़ल अइलें जयसिंह रजवा ए राम
ए रामा तनिए सा पनिया पियादा ए राम
कइसे मैं पनिया पियाई जयसिंह रजवा ए राम
ए रामा जतिया के बानी हम जोलाहीन ए राम
जोलहीन जोलहीन मती करा बराम्हनी ए राम
ए रामा नकिया में सोभेला बुलकिया ए राम।
झर रे झरोखा चढ़ी बियही निरेखे ए राम
ए राम जस पियवा सवती ले अइलें ए राम
ए राम जस पियवा उढ़री ले अइलें ए राम
बियही बनावे राम सोनाचूर क भतवा ए राम
ए रामा अउरी रहरिया केरी दलिया ए राम
जेवहीं जे बइठेले जयसिंह रजवा ए राम
ए रामा आजु के भोजन नीक ना लागे ए राम
उढ़री बनावेली कोदो क भतवा ए राम
ए रामा अउरी अंकरिया के दलिया ए राम।
जेवही जे बइठेले जयसिंह रजवा ए राम
ए रामा आजु के भोजन मनभावन ए राम।
केकरा के मारी रामा केके गरियाइ ए राम
ए रामा केकरा के झूलनी गढ़ाई ए राम।
बियही के मारा बाबू बियही गरियावा ए राम
ए रामा / बाबू उढ़री के झूलनी गढ़ावा ए राम।
गंगा रे नहाये चललें जयसिंह रजवा ए राम
ए रामा संगवा मे उढ़री बियाहीन ए राम
उढ़री के डलिया राम मखमल सोभे ए राम
ए रामा बियाही के डड़िया माछीझोकत ए राम
बियही के नइया रामा गंगा पर गइलें ए राम
ए रामा राजा के नइया के मझधार ए राम
गोड़ तोरा परिला बियही तिरियवा ए राम
ए रामाँ हमरो के पार लगा दा ए राम
याद करा ए पिया ओहि दिन के बतिया ए राम
ए रामा जहिया तू उढ़री ले अइला ए राम।

एगो अउर जँतसार गीत में देखल जाव, जवना में मेहरारू आपन दरद आ अपने सास , ननद से मिले वाली बिरही बोल के उकेर रहल बा –

"ऐ राम हरि मोरे गइलें विदेसवा,
सकल दुःखवा देइ गइलें हो राम।
ए राम सासु ननदिया बिरही बोलेली,
केकर कमइया खइबू हो राम"।

भोजपुरिया समाज में रोजी-रोजगार के इतरो कुछ पलायन होत रहे। ओहू पलायन के प्रताड़ना मेहरारूये लोग के सहे के पड़त रहे। एह गीत से ई बाति सोझा आ रहल बा-

''ननदी झगरवा कइली, पिया परदेस गइले।
किया हो रामा, भउजी रोवेली छतिया फाटे हो राम।''

भोजपुरी लोकगीतन में कुछ अइसनो गीत मिलेलीं जवना में मेहरारून के जानवर के जइसन मानि के बात-बेवहार होत रहे भा अइसन कुछ बोलिके डेरवावल जात रहे। मने मेहरारून के भाग से दुःख के लगाव कम होत ना देखात बा –

"आरे तोहि के बेचिए धनि भँइसी लेअइबों,
बछरू चरइबों सारी राति ए।"

एह तरे देखल जाव त भोजपुरी लोकगीतन के फ़लक बहुत लमहर बा। इहाँ जवन सुर पकड़ि के हेरल जाई, ओह सुर के खूब बहुलता मिली।जहवाँ भोजपुरी के संस्कार गीतन में मनई के जिनगी के हर पक्ष पर गीत जीवंतता के संगे मिली, उहें ऋतु गीतन में उल्लास, ओरहन ,चुहुल, बिरह मजगर ढंग से भेंटा जाई। श्रम गीतन में भोजपुरिया जगत के ओकरा श्रम के जीयला के रेखा चित्र भेंटा जाला आ ओकरा संगही पलायन के पीड़ा के दरद मन के सोझा उतिरा जाला। भोजपुरी लोकगीतन में भोजपुरिया इलाका के मध्यवर्गीय परिवेस के नियरे अतीत के सगरे खास पक्ष हमनी सभे के सोझा आइये जाला। भोजपुरिया लोकगीत अपने गेयता का संगही भोजपुरिया समाज के श्रमजीवी होखला के आ मेहरारून के पीर के दमगर तोख समाज के सोझा बेगर लाग लपेट के रखले बा। पलायन के पीड़ा मुखर ढंग से सब कुछ बखान करि रहल बा, जवना का चलते मेहरारून के ढेर त्रासद स्थिति बनल रहे।

सन्दर्भ :–

1 कुछ चिंतन कुछ सुध- केशव मोहन पांडेय
2 अइसन गारी के गारी जनि जानी – डॉ शंकर मुनि राय
3 कविता कोश
4 भोजपुरी लोकगीत में करुण रस- दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह
5 दियरिया जरत रहे – जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
6 आखर पेज (धनवा-मुलुक जनि बिआह हो रामा- डॉ बलभद्र)
7 कृष्णदेव उपाध्याय, लोकसाहित्य की भूमिका, साहित्य भवन, इलाहाबाद,
8 भोजपुरी लोकगीतों की सामाजिकता - डॉ. जितेंद्र कुमार यादव
9 कुबेर का अभिशाप –डॉ उमेश प्रसाद सिंह
10 जितेंद्र यादव, भिखारी ठाकुर : प्रतिरोध का लोकस्वर, आरोही प्रकाशन, नई दिल्ली,
11 झनकि बाजे हो – डॉ बलभद्र
12 कृष्णदेव उपाध्याय : भोजपुरी लोकगीत, भाग 1

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

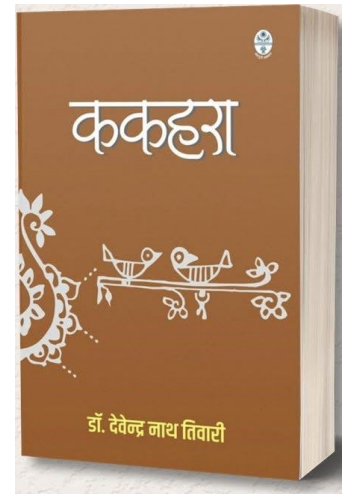

मारीसस देस के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत

पं.अपूर्व नारायण तिवारी 'बनारसी बाबू'

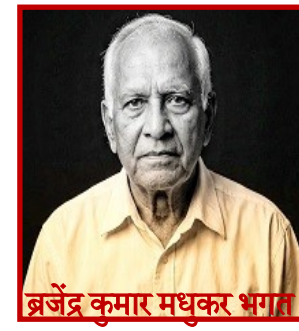
ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत

सन् उन्नीस सौ पचास,साठ आ सत्तर के दसक में पराधीन मारीसस देस में, गिरमिटिया आंदोलन के राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधि कवि ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत केवल एगो कवि साहित्यकार ना रहलन, बल्लुक ओह धरती पे बसल भारतीय मूल के सभे लोगन के आत्मा के आवाज़ रहलन । ओहिंजा पत्रकार,आंदोलनकारी, आजादी के सिपाही भी उ रहलन ।।
मारीसस में "गिरमिटिया" पीड़ा, संघर्ष आ अस्मिता के जवन इतिहास हौ, उ ओकरा के गीत, कविता आ भावनात्मक अभिव्यक्ति में ढाल के अमर कर देहलन ।।
"गिरमिटिया आत्मा के आवाज़ रहलन ब्रजेंद्र मधुकर भगत"

हिंद महासागर में एगो मोती जइसन द्वीप हौ – मारीसस – जहवाँ भारत के माटी से मजूरी बदे गइल हजारन गिरमिटिया मजदूर आपन खून पसीना से एगो नई दुनिया बसवलन । ऊ पीड़ा, ऊ विरह, ऊ संघर्ष – सभे कुछ जीवंत हो जाला जब हम ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत के कविता लोक के पढ़िलां,सुनीलां ।
ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत के रचनालोक में सिरिफ सबद ही ना, बल्लुक एगो भावुक इतिहास बोलेला । ओनके हर गीत में पानी के जहाज़, कुली घाट के घोर सन्नाटा, ईंखन के खेतन में बहत खून पसीना आ जीऊ में पलत भारत के इयाद समाइल हौ । उ गिरमिटिया सभ्यता के परसिद्ध इतिहासकार भी रहलें आ संवेदना से भरल गवैया भी ।ओह जमाना में जब गिरमिटिया मजदूर लोगन के आवाज कहीं सुनाई ना देत रहल, तब ब्रजेंद्र मधुकर भगत के कलम ओह आवाज़ के पहचान बन गयल । उ लिखलें ना, बल्कि जीयलें – हर पीड़ा, हर आंसू, हर उम्मीद के ।
ओनके कवितावन में मातृभूमि के ममता, परदेश के पीड़ा आ संघर्ष के गरिमा एक साथ झलकेला ।
चंद बानगी देखीं -
"हम ना झुकब कबहूं, चाहे जुलुम होवे हजार,
माटी के सपूत हईं, राखब देस के लाज अपार ...

"माई के अंचरा, माटी के सुगंध,
सपना में आजो आवे, बसल बा ओहि गंध..."

"मातृभूमि छूटल बिछुड़ल देस हमार, अंखिया में नीर भरल,
सागर पार आ अइनी, किस्मत हमार फूटल..."

"दिन भर काटीं गन्ना, रात में नींद ना आवे,
मालिक के डाँट सुनी, करेजा रो-रो जावे..."

"हम भले भारत देस से दूर बानी, लेकिन आत्मा से भारत हमार भीतर आजुवो जिंदा हौ ।"

इ सभे गीतन के आजुवो जबहुं कवनो भारतीय आ परवासी भारतीय सुनेला त जीयरा लोर भर जावेला ।

ओनके गीतन में भारत के राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त जी के अइसन झलक दिखेला कि ओनके मारीसस देस के मैथिलीशरण गुप्त कहल जाला आ मारीसस के राष्ट्र कवि के दरजा ओनहे मिलल हौ ।

भोजपुरी आ हिंदी दुनों में ओनके रचना लोक परसिद्ध रहल ।ऊ अंग्रेजी,क्रियोली आ फ्रेंच भासा के भी विद्वान रहलन आ मारीसस के प्रतिष्ठित समाचार पत्र मारीसस टाइम्स में नियमित लेखन करत रहलन। ओनकर भोजपुरी, हिंदी के रचना रोमन लिपि में रहत रहल ।काहें से मारीसस में देवनागरी लिपि समझे वाला लोग तब ना रहलन, अपवाद छोड़ के ।

☞ **गिरमिटिया गीतन के झलक -**
राष्ट्र कवि ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत के गीतन में खासतौर पे गिरमिटिया जिनगी के जथार्थ देखे के मिलेला । कुछ प्रमुख भावधारा आ नमूना लखीं -
1. **बिरह आ पीड़ा -**
"कलकत्ता से छूटल नाव, अंखियांँ में नीर भरल,
माई के अंचरा छूटल, दिलवा होअत अधीर जरल..."
☞ एह गीत में घर-परिवार छोड़ के परदेस जावे के दुःख दरद गहराई से उभरेला ।
2. **संघर्ष आ श्रम(मेहनत मजदूरी)-**
"ईंख के खेत में हमार खून पसीना बहेला,
धरती पे हमार मेहनत मजूरी के फूल
खिलेला..."
☞ मजदूर जीवन के कठिनाई आ श्रम के महिमा के चित्रण
3. **पहचान आ अस्मिता -**
"हम भारत के संतान हईं, भुलाए ना जाई आपन जड़ के

सुगंध,
परदेस में भी जीवित हौ, आपन माटी के सोनाहट भरल गंध …"

☞ आपन जड़ से जुड़ल गौरव के भाव केहू के भी भावुक कर देई।

4. आस आ नवका निर्माण -
"नव बिहान आई, दुःख के बदरी छंट जाई,
मेहनत के रंग से, नई दुनिया फेर बस जाई…"

रचना लोक -

ओनके कुछ सृजित पुस्तकन के नाम अइसन रहे -
मधुपर्क,
मधुकलश,
मधुबहार,
मधुलिका,
वीरगाथा,
रागिनी,
रस रंग,
रणभेरी,
बंदेमातरम,
स्वतंत्रता का सुप्रभात,
मधु गुंजार (या गुंजन)
अमर संदेश,
एक कहानी कुली की (लमहर कविता, जेहमें प्रवासन आ गिरमिटिया जीवन के चित्रण हौ)।
एकर अलावां तमाम अन्य किताबन में भी एनके रचना लोक समाहित हौ।इ सभे साहित्यिक लोक के अनमोल वैश्विक धरोहर भी हौ।

✿ सार संक्षेप -

मारीसस के राष्ट्र कवि ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत के साहित्य जगत फकत कविता ना, बल्लुक एगो जीवित दस्तावेज हौ – गिरमिटिया इतिहास के, भारतीय अस्मिता के, आ मानव धैर्य के। ओनके रचना लोक से हम जानीलां कि पीड़ा के बीचो-बीच भी संस्कृति के दीयना आ उम्मीद कइसे जलावल जाला।
उ मारीसस में भोजपुरी भासा,हिंदी आ भारतीय संस्कृति के अइसन जाज्वल्यमान दीपक आ संवाहक रहलन, जवन आजुओ उजाला देहत हौ।
ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत मारीसस के चंद अइसन रचनाकारन में गिनल जावेलन, जेनकर साहित्य सिरजन गिरमिटिया इतिहास, भोजपुरी अस्मिता आ भारतीय सांस्कृतिक चेतना के एक साथ अभिव्यक्त करे वाला जीवंत दस्तावेज बन गयल हौ। ओनके लेखन में कविता, गीत, लोकधर्मी अभिव्यक्ति आ सांस्कृतिक पुनर्जागरण—सभे एक साथ बहेला।

✍☐ रचनात्मक स्वरूप आ विधा -

1. **गिरमिटिया काव्य-धारा-**
मधुकर भगत के सभसे प्रमुख पहचान ओनके गिरमिटिया गीत आ आजादी के कविता हईं। ई रचना Indentured Labour System के दर्दनाक इतिहास के मानवीय स्वर देहत बाड़ीं।
जहाज़ जातरा (कलकत्ता से मारीसस तक के),
कुली घाट के त्रासदी,
ईंख खेतन में खटनी खटाई,
ज्वालामुखी पहाड़ी के तुर समतल करल आ खेती जोग्य बनावल,
परदेस में पहचान के संघर्ष जातरा।
ई सभे ओनके काव्य जगत के मुख्य बिसय रहलन।जे मन के छू लेवें।

2. **भोजपुरी लोकधर्मी गीत -**
ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत भोजपुरी के माटी से गहिर जुड़ल रहलन। ओनके गीतन में कजरी, बिरहा, सोहर, फगुआ जइसन लोकछंदन के प्रभाव साफ दिखेला।
भासा सहज, भाव गहन आ
लोकजीवन के सजीव चित्रण,
सांस्कृतिक स्मृति के संरक्षक रुप में ओनके अतुलनीय जोगदान हौ।
ऊ मारीसस में भोजपुरी के जीवित रखे में बहोत सकारात्मक जोगदान देहले रहलन।

3. **देसपरेम आ सांस्कृतिक चेतना-**
ओनकर कई रचना भारतीय मूल के लोगन में आपन जड़ से जुड़ल रहे के प्रेरणा देवेला।
भारत के प्रति परेम, आ मारीसस में नई पहचान के निर्माण—ई द्वंद्व
ओनके लेखन के खासियत रहे।

4. **मानवीय संवेदना आ तत्वज्ञान -**
ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत खाली इतिहास ना लिखलें, बल्कि मनई के भीतर के पीड़ा, संघर्ष आ आस के तात्विक रूप में भी देखेलन।
जीवन के अस्थिरता,
श्रम के गरिमा,
जिनगानी के संघर्ष में सौंदर्यबोध भी ओनकर गीतन में दिखेला।

📚 प्रमुख रचनात्मक पहलु -

❀ 1. सरलता में गहराई
ओनकर भासा कठिन ना, लेकिन भाव बहुत गहिर। आम आदमी के बोली में असाधारण अनुभूति रहे।

❀ 2. इतिहास आ भावना के संगम
गिरमिटिया जीवन के तथ्य आ भावना—दुनो के नीमन संतुलन

रहे।
ना सूखल इतिहास, ना खाली भावुकता रहे—बल्लुक सजीव जिनगी के कटु अनुभव रहे।

❀ 3. संगीतात्मकता-
गीतन में लय, ताल आ गेयता—जवन ओनके रचना के जन-जन तक पहुँचावे में बहुत सहायक बनल।

❀4.देस लोक से संसार लोक तक-
स्थानीय भोजपुरी जीवन से उठ के ओनकर रचना मानवता के व्यापक संदर्भ तक पहुँच गयल आ जगव्यापी हो गयल रहे।

♪♪ प्रमुख गिरमिटिया गीतन के भावात्मक मंथन -
1. "कलकत्ता से छूटल जहाज" (प्रवास के करुण गाथा)
ई तरह के गीतन में गिरमिटिया मजदूरन के सभसे पहिला अनुभव—बियोग—दिखेला।

☞ भाव-
घर-परिवार से बिछोह के पीड़ा, जवन आजीवन टीस बन के रह जाला।
2. "कुली घाट के सन्नाटा" (जथार्थ से सामना)
जब मजदूर लोग मारीसस पहुँचलन, त ओनके सामने कठोर सच्चाई खड़ी हो गयल। ओहिंजा के अजनबी जमीन,कठोर नियम,अपमानजनक बेवहार आ दुसर धरम संस्कृति।

☞ भाव-
आस टूटे के पीड़ा, लेकिन जीवे के जिद भी।आपन धरम संस्कृति बचावे के जुनून भी।
3. "गन्ना के खेत" (श्रम गीतन के महाकाव्य)
ई गीत श्रम के भी पूजा बना देहल।

☞ भाव -
दुःख के बीचो-बीच मेहनत मजदूरी करत गरिमा राखल आ आत्मसम्मान के रक्षा करल।
4. "परदेस में भारत" (पहचान के गीत)
ब्रजेंद्र मधुकर भगत के कई गीतन में आपन पुरखन के देस भारत के इयाद जिंदा रखल गयल हौ।
गीतन में परब-तेवहार, भाषा, परंपरा,माई-बाप के इयाद आदि भरपूर दिखेला।

☞ भाव-
देहिया परदेस में, आत्मा भारत में।

✍☐ गीतन के खासियत -

❀ 1. लोकधर्मी लय-
ओनकर गीत कजरी, बिरहा, फगुआ के लय में बहेला—जवन सुनते ही करेजा में सोझे उतर जाला।

❀ 2. चित्रात्मकता -
"अंखिया में नीर",
"पसीना के धार",
"समुंदर के लहर",
ई सभे परतीक बिंब लोगन के आँख के सामने एगो अद्भुत छबि खड़ा कर देवेला।जेहमें सभें भींज जाला।

❀ 3. संवादात्मक ढ़ंग -
कई गीतन में लागेला जइसे कवि सीधा पाठक या आपन माई से बात करत होखस।ई सभे मन के झकझोर देवेला।

❀ 4. सरल बकिया मार्मिक भासा
कठिन सबद ना—सोझा हिया से निकलल भासा।
जेहसे हर वर्ग के लोग जुड़ जाला।

✿ समापन -
ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत के रचना लोक केवल साहित्य ना, बल्लुक इतिहास के धड़कन हौ। ओनके गीतन में गिरमिटिया जीवन रोवेला, गावेला,हंसेला आ आखिरकार जीतेला।

♪♪ ब्रजेंद्र मधुकर भगत के प्रमुख गिरमिटिया गीतन के भावात्मक समीक्षा -
1. "कलकत्ता से छूटल जहाज" (प्रवास के करुण गाथा)
ई तरह के गीतन में गिरमिटिया मजदूरन के सबसे पहिला अनुभव—दुःख दरद बियोग—दिखेला।
2. "कुली घाट के सन्नाटा" (जथार्थ से सामना)-
भारत से जब सन् 1834 में जब मजदूर लोग एग्रीमेंट पे गिरमिटिया बनके मारीसस पहुँचलन, त ओनके सामने कठोर सच्चाई खड़ा हो गइल रहे। पहचान के संकट।तब हनुमान चालीसा आ रामायन के गुटका आ भोजपुरी भासा ओनके धरम करम आ संस्कृति के एकमात्र सहारा रहे आपन धरोहर गीतन के साथ।
3. "गन्ना के खेत" (श्रम के महाकाव्य)
ई गीत श्रम के भी पूजा बना देला।
4. "परदेस में भारत" (पहचान के गीत)
राष्ट्रकवि ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत के कई गीतन में भारत के स्मृति भरपूर जिंदा हौ।
सनातनी परब तेवहार, भासा, परंपरा
संस्कार आ संस्कृति सरुप में।

पं.अपूर्व नारायण तिवारी 'बनारसी बाबू'

♪♪ सृजन के प्रभाव-

राष्ट्र कवि ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत के रचना जगत के प्रभाव कई स्तर पे देखल जा सकेला—

मारीसस में भोजपुरी भासा के पुनर्जीवन, संरक्षण आ पुनः जागरण

करल,गिरमिटिया इतिहास के कुल्हि साहित्यिक पहचान के सहेजल।

नयकी पीढ़ी में सांस्कृतिक चेतना के अलख जगावल।

प्रवासी भारतीय साहित्य जगत के अउर समृद्ध करल।

✿ समापन-

ब्रजेंद्र कुमार मधुकर भगत के साहित्यिक सृजन एगो सेतु हउअन—अतीत आ वर्तमान के बीच, भारत आ मारीसस के बीच, पीड़ा आ उम्मीद के बीच।

ओनकर रचना लोक आजुवो ई सिखावेला कि जड़ से जुड़ल रहल ही असली पहचान हौ।उहे आपन पुरखन के देस हिंदूस्तान हौ॥

ओनके जन्म सन् 1916 में आ निधन सन् 2003 में भयल रहे।

❑❑

❍ वाराणसी (उ0 प्र0)

(लेखक ख्यात साहित्यकार,पत्रकार, कवि संगे विश्व भोजपुरी संघ के अंतर्राष्ट्रीय महासचिव, सनातनी समाज के अध्यक्ष हउअन आ बुद्धिजीवी परिषद कासी के महासचिव)

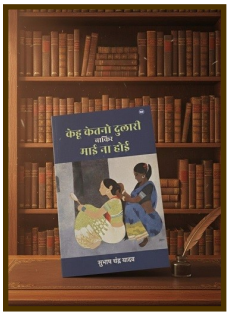

आम बजट के कड़वा घूँट

आम बजट के बाजा बाजत रहे, पर राघव के घरे सन्नाटा छायल रहे। सन्नाटा... अइसन जेकर मौन आवाज कलेजा चीर देवे। राघव, एगो निजी कंपनी में चपरासी रहल, रेडियो पे बजट सुन के अइसन हतास भयल जइसे कवनो सपना आ आस टूट गइल होखे।

"का भयल ? का कहलीं निर्मला सीतारमण बहन जी ?" आपन टूटल ऐनक साफ करत, खटिया पे बइठल राघव से मेहरारू जानकी पूछलीं।

राघव के आँख में आंसू आ गयल। कहलन, "जानकी, ई बजट नइखे, ई हमनी जइसन गरीब-गुरुबा के गला दबावे वाला तहरीर हौ। एहमें आम मनई बदे कछु ना हौ।जे कछु हौ,उ बस जुमलाबाजी हौ।

दुई जून के रोटी त ईंहा जुरत ना हौ अउरी उ कहत हईं कि बचत बढ़ी।

जानकी के हाथ से लोटा छूट गयल। "बचत ? हमनी के त कवनो बचत ना हौ ! पिछले महीना के आखिरी में गेंहू पीसान बदे पड़ोसी से उधारी लेवे के पड़ल रहे,अभी तक चुकता ना भयल हौ। इहाँ बचत कहाँ हौ ?"

राघव बेबसी से कहलन, "का करीं ! वित्त मंत्री कहत हईं कि महँगाई से लड़े के पड़ी। लेकिन हमार पगार त बढ़ल ना हौ ? प्राइवेट कंपनी में ढेर तगादा करे पे उ नौकरी से निकाल दीहन।तब हम का करब हो ??

लइका के मास्टरी के फीस भरे के हौ, टूटल साइकिल हौ, अउरी ई बजट ! एहमें त बचत के नांव पे कछु ना लखात हौ।"

संझा के बेटा, कहलेस, "बाबूजी, बाज़ार से कापी-कलम ला देब ?"ओराय गयल हौ।

राघव के कलेजा फाट गयल। जेब में फकत सौ रुपैया ही बचल रहल आ वेतन सात तारीख के ही मिली।

लाचारी में कहलेस, "बबुआ ! अउरी तनी दु-तीन दिन रुक जा ! अभी पैसा नइखे।"

जानकी कोने में बइठ के रोवे लागल। बजट के कड़वापन, कमरतोड़ महँगाई आ घर के आर्थिक अभाव ओनकर जान लेवे पे आमादा रहे।

राति के दुनों परानी तय करलन कि उ दुनों दु चार दिन तक एक समय के उपास धरिहन आ चाय पीयल छोड़ दीहन,ताकि बेटवा के कापी कलम खरीदा सके॥

❑❑

❍ वाराणसी (उ0 प्र0)

चंद्रदेव यादव जी के पाँच गो गीत

प्रो0 चन्द्रदेव यादव

एक

जीवन क परिभासा का ह?
रोज कमाना आउर खाना
ईहै जिनगी? ईहै सुख? त
पानी बुड़ल बतासा का ह?

जनम-मरन के बीच जवन कुछ
जिनगी ओम्में साँसा लेले,
आछर-गूछर कि बिसमाधल
मनई पीतल-काँसा होले l
आपन-गयर में सब अँझुराइल
ई अँझुरा ना l लासा का ह?

छल-छद्म में परेसान केहु
सिधवा क मुँह कुक्कुर चाटे,
गाय बिआय फटे बरधा क
अबरा के हर केहू डाँटे l
राजा सच्चों हितकारी, त
सकुनी वाला पासा का ह?

समय बड़ा सरहंग ह, सबके
सोना से माटी कइ देला,
केहु क घी क दिया बुताला
कहीं पनियैं से दीप जरेला l
सुख जेकर दुख से कट जाला
ओकरे बदे गँड़ासा का ह?

एक तनल रस्सी ह जिनगी
नट बनके सब येह पर धावे,
लचक सम्हारे जे रसड़ी क
ऊहै आपन मंजिल पावे l
जे उकताइल ऊ बिनसाइल
फिर का जिनगी! आसा का ह?

दो

धरती उदासल ह , रोसनी ह कम,
घना-घना कोहरा ह, ठंढ क सितम।
कठुआइल बिरछा रोवेलं दिना-रात,
रूठल-रूठल लागें करें नहीं बात l
चिरई चुनमुन भूल गइलीं सरगम l

पथरू क पोता अ नन्हकू क नाती,
उछरत-कूदत हउवें बान्ह-बान्ह गाँती l
दमहीं दुलहिया क फूलत ह दम l

बुढ़ऊ न मनलैं अमौसा नहइलैं,
आड़े बइठ के दही-चूड़ा खइलैं l
अउतै घरे होइ गइलैं बेदम l

फूलल सरसोइया के चूसेलीं माहो,
चिलरू बो कहलीं कलप के कि आहो!
मरिहैं किसान, हउवे केहु के ना गम l

कउनी कनुनियाँ क चारों लंग सोर,
हर लीहैं ई कुल किसान क अँजोर l
एनसे बनिया बनिहैं साक्छात जम l

तीन

जिनगी घर क फूटल-पचकल
धुँअसल बासन ह
कब से खुसी बदे तरसत
ई चेहरा आपन ह l

लिख के बारहखड़ी समय, फिर
एके पचरेला,
सतर खींच, अनलिखा छोड़ के
पल में बिसरेला l
जिनगी खरिहाने में सूखल
पड़ल बढ़ावन* ह l

उमिर हवे पगडंडी जेह पर
काँट-कूस ह जामल,
ठिल्ली के बेंगा नाईं दुख
घर में ह तावल l
सुख गोहरउले वाला सँच के

रक्खल आलन ह l

बहुत जतन कइली सुख-सम्पत
घर में आइल ना,
नादी में क दूध पसर भर
कबों फोंफाइल ना l
कइसे आई खुसी घरे, जब
फेरल तावन** ह l

.....

* बढ़ावन :पहिले खरिहान में गोबर क गोल पिंड बना के पइर या अनाज के रास पर एह उमेद से रक्खल जात रहल कि एसे अनाज में बढ़ोत्तरी होई l येही पिंड के बढ़ावन कह ल जात रहल l भूसा आ अनाज त लोग घरे ले जाय, बाकी बढ़ावन खरिहनवें में छोड़ देयं l

** तावन :नारी के पानी के अपने खेत में ले जाए बदे ओ करी मेड़ के काट के बित्ता भर आगे नारी के बान्ह दीहल जाला l नारी के बान्हे बदे माटी से जवन रोक लगावल जा ला ओके 'तावन' कहल जाला l ई क्रिया संपन्न भइले पर कहल जाला कि 'तावन फेर गइल ह'l

.....

चार

हम अपने आँगन क माटी
सँच के रक्खीला,
माटी ना, पुरखन क थाती
सँच के रक्खीला l

कबों-कबों पलकन से छू के
एकर तिलक लगाईं,
माँ क ममता, प्यार पिता क
छन भर में पा जाईं l
ई माटी ह राग प्रभाती
सँच के रक्खीला l

जानल-अनजानल चीजन क
एसे खुसबू आवे,
भूलल-बिसरल पितरन क
ई माटी अलख जगावे l
एम्में ह आपन परिपाटी
सँच के रक्खीला l

येह में जब-तब तुलसी चौरा
कोहबर क छबि दीखे,
येह में जियन-मरन क छाया
सारे सपन सरीखे l
दियवट पर क दीया-बाती
सँच के रक्खीला l

पाँच

काम पे मजूर
साम हवे अभी दूर
हौ थकान भरपूर
ई मजूरन क सदियन क जंग ह,
राह जिनगी क सचमुच में तंग ह l

रोज कुआँ खोद खोद रोज जल पीएलंऽ,
एही तरे कामगार जीवन भर जीएलंऽ l
लहू के निचोड़ेलंऽ
पाथर के तोड़ेलंऽ
सुख के कन जोड़ेलंऽ
ओनकर खुसी त कुबेर घरे बंद ह l

जबले ह जाँगर तबै ले अहार ह,
पौरुख के थकतै ई जिनगी पहाड़ ह l
साँझ क दुकूल
ओम्में चाँदनी क फूल
समै सदा प्रतिकूल
येह मजूरन क जिनगी बदरंग ह l

उमिर घटे रोज नाहीं कर्जा कभी रे,
लइकन के मिले कहाँ दूध आउर घी रे l
जीवन गरीबी में
अउर बदनसीबी में
कटे नाउमीदी में
जीवन का एनकर? अँधेरी सुरंग ह l
हाथ में ह दीया मगर जोत मंद मंद ह l

❑❑

जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली -110025

कवितन के जोरि करमकुटाई

डॉ सुनील कुमार पाठक

1- फाफर

~~~~~~

फाफर उहाँ के खोजत रहीले
काहे कि केहू खड़े-खड़े
धकिया जनि देव
धाका से बचत
पूरा फरछीन बनल
होठन लाली चढ़ावे बदे
भीतरे पान चभुलावत
जीभी के नोखी के
चूना चटावत
पीक मारे खातिर
फाफर खोजे के फेरा में
बराबर अगुताई रहेला उहाँ के-
बाकिर कवितवा
थाहुरे पर थाहुर परात बिया।

2- उरेब

~~~~~

उरेब कतहूँ नीमन ना मानल जाला
बाकिर जहाँ सभे उरेबिये चाल चलिके
एक दोसरा के मात देबे में
माहिर हो गइल होखे
ओजवा कायदा से करमकुटाई
केतना दिन चली?

3- करमकुटाई

~~~~~~~~

करमकुटाई खातिर
कविताई ले नीमन
कवनों धंधा ना हो सके -
सुनते बिखिया गइनीं कविराज, कहनीं-
साधना हियऽ धंधा काहे कहाई?
पंचर साटत धेयान मिसतिरी कहलें-
त जाईं मुखिया जी से
बेरोजगारी भत्ता में नाँव टँकवा लीं
भा मठिया के महंथ जी के
चेलवाही पकड़ लीं।

4-अकरहर

~~~~~~~~

अकरहर त अकरहरे होला
एमें नीक-जबून का खोजे के बा?
बाकिर संगलोरवा कहलें-
ई कइसे होई ?
हमरा राजाजी के त अकरहरो
अइसन होला कि
मय दुनिया चकरा जाले
आ उन्हके अपना देश के
बड़का खिताब थम्हाके
'ग्लोबलगुरु' के हवा भर देले
आ एने राजाजी
अईंठत अगराइल चल आईले
कवनों नवका अकरहर के
बिया बो के ओके फरावे-फुलावे
अपना धरती पर।

5-मरखाह

~~~~~~~~

छरिआह भइल-
तनिका बरदासो होला त मरखाह के-
के अपना दुआरे बान्ही महाराज?
सम्हारल त दूनू के कठिन होला
बाकिर लोचन काका कहस कि
लईकाँई के छरिअहवे नू
गोंठा के मरखाह हो जालें
आ बुढ़ारी आवते हूँफे लागेलें।

❑❑

❍ फ्लैट नंबर–303,परमानन्द पैलेस
(दानापुर–801503(पटना),बिहार।
~~~~~~~~

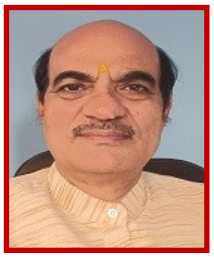

बिरही बारहमासा

डॉ शंकर मुनि राय "गड़बड़"

कवन सवतिया रामा भोर कइली मतिया संघतिया रे
भूली गइले तीज-तेवहार मोर संघतिया रे!

'गड़बड़' रतिया के बिसुरे ना बतिया संघतिया रे
जियरा भइल तारे तार, मोर संघतिया रे !

बटिया जोहत बीते दिन-दुपहरिया सँवरिया रे
रतिया भइल बा पहार, मोर सँवरिया रे !

चढ़ते आषाढ़ पिया गरजे बदरिया सँवरिया रे
सुन लगे अंगना दुआर, मोर सँवरिया रे---१

सावन भदउआ के जुलुमि अररिया सँवरिया रे
नाहीं अइले पिया पहरेदार, मोर सँवरिया रे---२

छिलबिल अररिया पर गोड़ बिछिलइहें सँवरिया रे
मिली जइहें जुलुमि इयार, मोर सँवरिया रे---३

आसिन आस लगले दिन बितले, सँवरिया रे
आजुओ ना अइले इयार, मोर सँवरिया रे---४

कातिक मास कतेक दिन बितले सँवरिया रे
बीती गइले छठ-अतवार, मोर सँवरिया रे---५

अगहन मास रामा बिहँसे किसनवाँ सजनवां रे
लहरेला खेत खरिहान, मोर सजनवां रे---६

ठिठुरी- ठिठुरी बीते पुसवा के रतिया संघतिया रे
याद आवे बतिया-दुलार, मोर संघतिया रे---७

मघवा मघेर चुवे अइले ना सजनवां भवनवाँ रे
फेंकरे ला कुकुरा-सियार, मोर भवनवाँ रे --८

अइले फगुनवां ना बनले सगुनवां हरिनवां रे
गावे लोग फगुआ धमार, मोर हरिनवां रे---९

दिनवां गिनत बीते सखिया-सहेलिया बहेलिया रे
रतिया बितेला जियामार, मोर बहेलिया रे---१०

चइत चननियाँ बैरिन भइली धनियां कहनियाँ रे
सुने ना सुनावे मोर इयार, मोर कहनियां रे---११

साख बैशाख भइले फुदूक़े सुगनवाँ सजनवां रे
कब होइहें नयना दू-चार, मोर सजनवां रे---१२

जेठ होइहें हेंठ कब जगिहें सपनवाँ बेइमनवाँ रे
केई तोर देले मति मार, सुन बेइमनवाँ रे --१३

❑❑

❍ विभागाध्यक्ष–हिंदी/शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)

नकाबपोश

राम यश अविकल

"गोड़ लागतानी ..... बाबा !" पंडी जी के दसई, फरके से गोड़ लगलें।

"जय हो .....! का आइल बाड़े दसई, कवनो काम का बा रे हमरा से ?"

" हं ... बाबा ! तनी गृह प्रवेश के दिन पूछे के रहे रउवा से "

सुन ... दसई अब हम छोट जात में पूजा- पाठ, विवाह - शादी,कथा- वर्ता करावे खातिर अलगा - अलगा रेट बान्ह देले बानी। काम कके कीच कीच कइल ठीक ना लागे। हतना लेलीं, त होतना लेलीं । हं बाकिर चमरन के छोड़ के तोहनी के सई पचास कमो देब स त कवनो बात ना । चमरन खातिर एगो अधेली ना कम होई । जानते बाड़े कि अब, ऊ सब हमनी के पहिले लेखा ओतना मान सम्मान, इज्जत नइखन स करत। जवन पढ़ लिख गइल आ नोकरी ध लेलस त हमनी के सोझा परलो पर राम सलाम, पायलगी एकदम नइखन स करत। ओहनिए के देखा देखी जवन चमरा अनपढ़ों बा , उहो पायलगी नइखन सं करत। ढेर चमरा अब त विवाह शादी में हमनी के पूछते नइखन स । ना जाने कहां कहां से भंते बोला के काम करवा लेत बाड़े से। कुछ चमरा जवन बड़ अफसर बनल बाड़े सं । जइसे डांक्टर, इंजीनियर,बी०.डी ० ओ ० सी०ओ० उहे आजो आपन परम्परा आ संस्कृति नइखन स भूलल। ऊ आजो विवाह शादी आ कथा वर्ता में बुलावत बाड़े स। निकहा दानो दक्षिणा अनघा देत बाड़े सं बाकिर बड़ी तेजी से आंबेडकरवादी भइल जात बाड़े सं। अब मुसलमान से ना एहनिये से हिन्दू धर्म के खतरा बा। हं... बाकिर दलित में अउरी जतिया आजो ठीक बाड़े सं । ऊ हमनी के आजो पूछत बाड़े सं ।, आ मानो सम्मान देत बाड़े सं । पिछड़ा आ अतिपिछड़ा वर्ग आजो हमनी संगे लामबंद बाड़े सं। हिन्दू धर्म बचावे खातिर एकदम टाइट होके सड़क पर उतर जालें सं। मिंया लोग के मार पीट के सोझ कइले रहे लन सं। मस्जिद में जाके हनुमान चालीसा पढ़ें में एहनी के आहस ना लागे। एकदम मरद बाड़े सं । आरे... हं... रे दसई रेटवा त बतइबे ना कइनी । सुन... हमार रेट गृह प्रवेश के दिन बतावे खातिर एगारह सौ, आ गृह प्रवेश के पूजा करावे खातिर एगारह हजार । विवाह के दिन धरे खातिर एकइस सौ आ विवाह करावे खतिर तनी रेट कडेर बा, एकइस हजार बा, कारण कि रात भर जागे के परेला। कथा वर्ता खातिर पांच हजार में फरिया जाई । हं बाकिर जवन एकदमे गरीब बा ओकरो त निबाहे के बा नू। जवन ओकरा जुरी ओही पर ओकर काम निबाह देवे के बा । बाकिर नोकरिहन के तनिको मरउत ना। सुखदेव पांडे आपन रेट खोललें।"

रेट सुन के दसई तनी हिचकिचइले। बाकिर दोसर कवनो उपाय लउकत ना रहे, कारण कि गांव में पांच छव घर पंडी जी हलहीं बाड़े। ई पंडी जी, सब जने से विद्वान मानल जालें। जब ई रेट बन्हले बाड़े त सब जना मिल के राय सलाह करिए के बन्हले होई लोग। भले ऊ लोग चार पांच सौ कम लिही लोग। इनिका आगा केहू के पूछ नइखे । ई खाली ना रहेलन तबे ओह लोग के, लोग पूछे ला। आखिर चार पांच सौ खातिर काहे दब पंडी जी से काम करावल जाई। गृह प्रवेश कवनो बार बार थोरे करावे के बा। तनी महंगा परी बाकिर इनिके से करावल ठीक रही।

का सोचत बाड़े दसई.....?

कुछ ना बाबा, दिन बताई गृह प्रवेश के हम देहब एगारह सौ रोपया।

आरे..... पइसवा देबे तब नू पतरा खुली।

का कह तानी बाबा... ? ऊपर आसमान नीचे पासवान कबो पीछे हटे वाला जात ह ? लीं हई एगारह सौ रोपया।

आ एगो सिकवा ?

लीं एगो सिकवा लेलीं । आ ... गृह प्रवेश के पूजा रउवे करावे के बा।

(2.)

काहे ना करा देब ? बाकिर रोपया चार दिन पहिले पहुंचा जइहे ।

जरूर बाबा ! हम पहिलही पूरा एगारह हजार रोपया पहुंचा देब। "

एगो बात जानल चाहत बानी दसई । बइठ जो नीचे पकवा पर। "

जी... बाबा, बइठ जा तानी। कहीं बाबा का कहल चाह तानी ?

तू त जय भीम वाला हवे नू दसई ? हम तोरा के देखले बानी आ दोसरो के मुहें सुनले बानी, तोरा के जय भीम कहत। एही से ई बात पूछनी हां। "

ना बाबा, अइसन बात नइखे। जब चमरन मिले लन सं त जय भीम कहे परेला। बाकिर जब हमार आपन जात भा दोसर जात से मुलाकात होला तब जय श्री राम कहिला बाबा। "

अइसे काहे..... ? केनहूं एके ओर रह। चमरन से डर का लागे ला तोरा ? दूनो ओर काहे बाड़े ? कहाउत सुनले बाड़े नू ... दू नाव पर चढ़ना, का फाट के मरना। "

डेराय के बात नइखे बाबा ! दुसाध..., चमार से डेराई ? हमनी के एगो संगठन बा बाबा ! ओकर नाम अनुसूचित जाति/ जन जाति कर्मचारी संघ भोजपुर ह । ओकर सदस्य हमहूं बानी। कवनो किसिम के दिक्कत होला त कर्मचारी संघ मदद करे खातिर खाड हो जाला। बदली सदली में कबो कबो मदद मिल जाला। कर्मचारी संघ के जब सदस्य मिले लें त एकदूसरा से अभिवादन जय भीम बोलिए के कइल जाला। जब ओह संगठन में रहे के बा त जय भीम बोलल मजबूरी बा। ना त बाहर नू क दिहे स। असहू हमार जतीय के लोग जय भीम के फेरा में ना रहेला। मीटिंग भा कतहूं राह में कर्मचारी संघ के आदमी मिल जाला तब जय भीम कहे परेला। चमरे जादा जय भीम के फेरा में रहे लन सं। बाकिर चमरनो में सब ना। ढेरे देखावटियों बाड़े सं। तबो कुछ अधिके संख्या बा जवन डां आंबेडकर के प्रति समर्पित बाड़े। हमरा घरे आईब त डां आंबेडकर के एको फोटो ना मिली देखे के। देवी देवता दुर्गा, लक्ष्मी, गणेश के फोटो आ मूर्ति बा हमरा घर में। एगो लकड़ी के बने बनाई मंदिर पटना नाला रोड से किन के ले आईल बानी। ओही में लक्ष्मी गणेश जी के मूर्ति के पइसइले बानी। एक लेखा ऊ हमार पूजा घर ह। हमनी के दूनो बेकत बिना पूजा कईले मुंह में कुछो ना डाली ला जा। "

बहुत बढ़िया दसई...। अच्छा त हिन्दू राष्ट्र के बारे में तोर का ख्याल बा ? "

एह में का कहे के बा, बाबा ! हिन्दू राष्ट्र बनही के चाही। इहां हिन्दू के संख्या जादे बा त हिन्दू राष्ट्र बनल एकदम जरूरी बा। आ हम कवनो हिन्दू ना हई ? हमार पूरा समर्थन बा बाबा। "

बड़ी नीक सोच बा तोर दसई । तोरा लेखा सब दलित समर्थन करे लगिहें त हिन्दू राष्ट्र बनत देरी ना लागी। बाकिर चमरे ढेर रोड़ा अटकावत बाड़े स। तोहनी के जात में भा अउरी दलितन में कवनो दिक्कत नइखे । सभन के समर्थन बा। देखते बाड स तोहनी के नेता हिन्दू राष्ट्र के समर्थन में संगे बा लोग। जब तोहनी के नेता के समर्थन बा त तोहनी के पिछे हटे के सवाल कहां बा। कोशिश कर स चमरनों के एह पक्ष में लावे के।

ठीक बा बाबा ! हम त अइसे कोशिश करबे करी ला। अब राउर आदेश हो गइल त अब जोर शोर से एह काम में लाग जाईब। "

वाह ! दसई ..... माने के परी तू बडी होशियार बाड़े। बाकिर एगो काम अउरी कर। तोर छोटका बेटा बेरोजगार बा । अभी ले नोकरी ना लागल ओकरा। काहे ना राष्ट्रीय लोक सेवक संघ के शाखा में भेजस ? एह घरी त संघ के शाखा गांवे -गांव चलत बा। शहर में त का कहे के बा छोट बड सब शहर में पहिले से चलत बा। उहां एक से एक लोग आवे ला। जिला कार्यवाहक, नगर कार्यवाह कबो कबो प्रांतीय कार्यवाहक आवे लें। शाखा से जुड़ गइला पर कवनो नोकरी चाकरी खाति पैरवी प्रांतीय कार्यवाहक आवे लें। शाखा से जुड़ गइला पर कवनो नोकरी चाकरी खाति पैरवी जरूरत लागी त ऊ लोग पीछे थोरे हटी।

ठीक बा बाबा ! अभी त ऊ आरे रहत बा । गांव पर आई त ई बात ओकरा से कहब। "

(3)

दसई के गांव नवरंग पुर, भोजपुर जिला के देहात क्षेत्र में। दसई, प्रखंड कार्यालय में एगो किरानी के पद पर कार्यरत। बड बेटा रेलवे में ग्रुप डी में दू साल पहिले योगदान कइले रहे। दुसरका बेटा पढ लिख के बेरोजगार। ऊ अभी आरा शहर में नोकरी के तैयारी में लागल बा। बेटी सरिता एही साल बी ए पास कइलस । बडका बेटा के विवाह खातिर अगुआ दुआर के माटी कोडले बाड़े । बढ़िया दहेज आ सुनर लइकी के तलाश बा। साथे नयका घर में गइला के बाद विवाह फाइनल कइल जाई । शहरो में जमीन लेके छोडले रहन दसई। ओने अभी घर बने के शुरू ना भइल रहे । एह से दसई घर बनावे के काम ना लगावत रहन।असही छोडले रहन। गांव पर के घर में बांट बखरा के बाद जवन इनिका हिस्सा में परल।ओह में सकेसती होत रहे। एगो घर आ बरांडा इनिका हिस्सा में मिलल रहे। घर के बगले में खाली जमीन इनिके हिस्सा में मिलल रहे।ओही में नया घर बनवलें।ओही घर के गृह प्रवेश के पूजा रहे। घर तैयार हो गइल रहे। गृह प्रवेश के पूजा के बिना ओह घर के उपयोग ना होत रहे।

गृह प्रवेश के दिन निअराइल त दसई पंडी जी लगे जाके एगारह हजार रोपया दे अइले।

पंडी जी कहलें, " आसन खातिर शुद्ध कमर लागे ला दसई। ओढल बिछावल कमर ना होखे के चाही। एह काम खातिर एगो नया कमर किन लिहे।

अच्छा बाबा ! कमर किना जाई। कवन ढेर महंग बा। "।

एगो अउरी बात बा । घर में पूजा के पहिले बाछी ढुकावल जाला। तब पाछा से सब केहू ढूकी घर में। एगो बाछी आधा घंटा खातिर जोगाड कर लिहे। टोला में केहू लगे होई। "

बाबा ! मोहल्ला में त केहू लगे बाछी नूइखे लउकत। कइसे होई। ?

हंअ... ? आधा घंटा खातिर बाछी किनल ठीक नइखे। हमरा लगे एगो बाछी बिया। ओह दिन आ के ले चलीहे। एकरा खतिर अलगे से एगारह सौ रोपया दे दीहे।"

ओह दिन दसई दूनो बेकत भूखल। पंडी जी आगे बाछी के पगहा ध के पिछे से हांकत घर में ढुकलें। पाछा से दूनो बेकत। तब सब लोग पाछा से ढूकल। सब घर में बाछी घुमवा के पंडी जी बाछी के अपना दुआर पर भेजवा देवें।एकरा बाद ठाकुराई से बेदी आ हवन कुंड बनवलें। कलश रखाइल। गोबर के गणेश बनवलें आ अपना ठाकुर जी के मूर्ति कलश के सटा के रखलें। निकहा दू घंटा पूजा भइल। गोबर गणेश पर अलगे आ ठाकुर जी पर अलगे चढ़ावा चढल। सब बटोर के चेटिया लेले पंडी जी।

दसई कहलें," बाबा ! जवन बनल बा खा के जाइब।"

सुन दसई, तोहनी लगे पूजा करा देत बानी जा त कम बा? अब तोरा लगे खाय लागी जा? हमनी के धर्म नासही के का चाहत बाड़े ? हमनी के पुरनिया तोहनी के घर में ढुकत ना रहन। अब तोहनी के तनी ढंग के रहन सहन हो गइल।तब हमनी के आवे लगनी जा। एकर मतलब का तोहनी लगे खाय लागी जा ? जानते बाड़े कि हमनी के सीधा होला ,चाउर दाल आंटा आलू सब्जी, ई सब दे दे हम अब लेके चली।"

बढ़िया बा बाबा सब दिअवा देत बानी। थोरही देरी में सब मिलल। पंडी जी लेके पूरा गदगद हो के अपना घरे गइले। एक दिन बादे प्रखंड इकाई अनुसूचित जाति/जन जाति कर्मचारी संघ के बैठक, प्रखंड कार्यालय के नियरे प्रखंडअध्यक्ष के आवास पर रहे। ओह बैठक में जिला अध्यक्ष आ सचिव भाग लेले रहन। दसई के गांव से प्रखंड कार्यालय से नियरे रहे। दसई बैठक में भाग लेवे खातिर गइले। दसई के पांव रंगल देख, जिला अध्यक्ष चिहइले आ पूछ लें," आरे... का भाई दसई ससुरारी का गइल रह ? साली सरहज का पांव भर देले बा लोग ? बुढारियों में बड़ा मान जान होता तोहरा भाई। "

ना अध्यक्ष जी अइसन बात नइखे। एगो छोट मोट कार्यक्रम रहे। "

अइसन कवन कार्यक्रम रहे भाई कि पांव रंगे के परल ?

गांव पर गृह प्रवेश रहे अध्यक्ष जी।"

आरे... वाह...भाई घर के गृह प्रवेश क लेल आ हमनी के पूछबो ना कईल हो? ई काहे ? खीसिआइल का बाड़ भाई ? गृह प्रवेश कवनो छोट कार्यक्रम थोरे ह ? "

अइसन बात नइखे अध्यक्ष जी सोचनी कि अतना दूर से कमेटी के लोग के आवे जाय में दिक्कत होई। एही से केहू के ना पूछनी। "

अच्छा कवनो बात ना। तोहार घर बनल खुशी के बात बा। गृह प्रवेश के पूजा के करावल ?

का कहीं अध्यक्ष जी... ! पंडी जी से करावे परल। बड़ी महंग परल। पंडी जी के कुल्ह पंद्रह हजार रोपया देवे परल।

इहे कहल गइल बा कि जहां बुरबक रहिहें उहां चलाक भूखे ना मरी। बताव भाई साल में एक बेर बाबा साहेब डॉ आंबेडकर जयंती होला। एक हजार के रसीद काट दिआला त देवे खातिर तू कतना ना नूकुर करे ल। दसहन बहाना बनइब। आज ले पांच सौ से कबो जादा चंदा ना देल। एगो पंडित के खट से पंद्रह हजार दे देल। तुही लोग नू ब्राह्मणवाद आ मनुवाद के बढावा देत बाड़ ? ओहनी के आर्थिक मजबूती तुही लोग नू मजबूत करत बाड़ ? तोहार हक अधिकार के उहे विरोध करsता। आरक्षण के खिलाफ आग उगुलत बा उहे। आर्थिक आधार पर आरक्षण के बात उहे करsता। उहे हिन्दू राष्ट्र बनावे के बात करsता। तुही ना ...तोहरा लेखा अभी ढेर जना बाड़े जय भीम बोलत बा। पंडित के गोडो लागत बा। तोहरे लेखा आदमी ओहनी के दान दक्षिणा देके के आपन विरोधी के अउरी मजबूत करsता। ई अंधविश्वास, पाखंड से कब बाहर निकलब भाई ? हमनी के सोझा जय भीम बोले से कुछ ना होई। जहिया दिल से जय भीम बोले लगब ओह दिन से अंधविश्वास, पाखंड से बाहर निकले के राह सूझे लागी। हमरा मालूम बा कि तू जय श्री राम बोले ल। ई हमनी से छिपल नइखे। तू खुल के एने चाहे ओने रह। नकाबपोश मत बन। इहे हमार आग्रह बा।"

का कहीं अध्यक्ष जी हम त चहबे करी ला... कि पंडित के ना पूछी। हम त पकिया आंबेडकरवादी हई। बाकिर मेहरारू माने तब नू अध्यक्ष जी ? हम मेहरारू से लाचार बानी। हमरा त मनवा रहबे करेला कि कवनो भंते के बुला के पूजा पाठ करवाई। बाकिर जानते बानी कि मेहरारू के आगे केहू के ना चले ला। "

अइसन बात कहत बाड़ कि जइसे हमनी के बिना मेहरारू वाला बानी जा। तोहरे एगो मेहरारूए बिया। हमार मेहरारू भा अउरी लोग के मेहरारू कइसे आपन मरद के बात मानत बाड़ी सं ? कइसे ई लोग के भा हमार मेहरारू अंधविश्वास, पाखंड से बाहर निकल गइली सं। हमार मेहरारू कवनो जादे पढल लिखल ना। ओकरा से बतिया के देख, आंबेडकरवाद का ह तोहरा के समझा दी बढ़िया से। ओकर सोच के स्तर तोहरा से ऊंचा बा। नइखे विश्वास त बतिया के देख ल। हमार मेहरारू के कबो पूजा पाठ करत ना देखब,भा राह में मंदिर लउक गइल त हाथ जोड़ के गोड ना लागे। तीज, जीउतिया तक छोड़ देलस।

तबो हमार लइका भा हम तोहरा सोझा खंभा लेखा खाड बानी। तू कहताड कि मेहरारू के आगे केहू के चले ला? तू आपन कमजोरी अपना मुंहे कह के, भरल सभा में हंसी के पात्र बन गइल । पहिले अपना दिमाग से भरम आ डर हटाव तब आपन मेहरारू के दोष द। ई दिमाग में जवन डर भरल बा , ई बाबा साहेब, गुरु रैदास,कबीर के पढे से दूर होई। अतना जल्दी कइसे बदलाव होई अध्यक्ष जी ? गते - गते सब बदली। मेहरारू जोरे बरियारी ना नू कइल जाई । ओकरो त धार्मिक आजादी बा नू ? ई त संविधाने दे ता। "

भाई संविधान के लागू भइला पचहत्तर साल भइल । एकर मतलब ई बदलाव देखे खातिर तू , दू सौ का जीअब भाई ? तोहरा नोकरी करत तीस साल हो गइल। अब दू चार साल में तू रिटायर हो जइब । तोहरा कतना समय चाही बदलाव खातिर। हमार भा तोहार बाबूजी के समय बदलाव संभव ना रहे कारण कि अभी हाले मे संविधान लागू भइल। शिक्षा के माहौल ना रहे। बाकिर बाबूजी के त मन में आकांक्षा रहे कि लइकन के समय बदलाव जरूर हो जाई। अब हमनी के बदलाव के जिम्मेवारी आईल त आपन जिम्मेवारी से भाग के अपना लइकन के माथे थोपल चाहतानी जा । संविधान के जब दोहाई दे रहल बाड़ कि धार्मिक आजादी मिलल बा त, ओही में वैज्ञानिक सोच के बढावा देवे आ अपनावे के भी लिखल बा। हमनी के विकास खातिर वैज्ञानिक सोच अपनावल जरूरी बा ना कि धार्मिक अंधविश्वास। । जब पढल लिखल आदमी ब्राह्मणवाद के पोसी पाली त कइसे समाज बदली। बदलाव खातिर हमनिए के लीक बनावे के परी। तब लोग पाछा से ओह लीक पर चली। तोहरे लोग जइसन आदमी के कान्हा पर चढ़ के हिन्दू राष्ट्र आई। भले एकर लाभ हानी अभी ना बुझाई। जब बुझाई तब बड़ी देर हो चुकल रही। सब कुछ खतम हो गइल रही । एकरा बाद केहू कुछ ना कर सकी। ई सरकार अब संविधाने के अप्रासंगिक गते- गते कर रहल बिया। ढेर दिन ना लागी हिन्दू राष्ट्र बने में। ई हमनिये के देखे के मिल जाई। सब संस्थान पर संघ के कब्जा हो गइल कोर्ट कचहरी होखे थाना होखे, विश्वविद्यालय, चुनाव आयोग होखे चाहे सुप्रीम कोर्ट होखे। नोकरी खत्म आरक्षण खतम। सब सरकारी संस्थान बेचा रहल बा। प्राइवेट सेक्टर में आरक्षण बा ना।देश भर में हजारों इस्कूल बंद हो गइल। आ बंद हो रहल बा। दलितन पर उत्पीड़न रोज बढ़ रहल बा। उत्पीड़न करे वाला के साथ पूरा पुलिस प्रशासन खाड बिया। दलित नेता मंत्री के जबान बंद बा। देह पर मूत दिआता तबो आहनी के कुछ नइखे होत। ई सब बात तोहरा पता बा कि ना, कहल मुश्किल बा ? पता होई त एकर कारण के जड़ तक तू कबो ना पहुंच सक। ई हमरा मालूम बा। "

ई समुझवला से दसई के कवनो फरक ना। उनुका अंधविश्वास, पाखंड से परहेज कबो ना। हिन्दू राष्ट्र के समर्थक असहीं थोरे बाड़े ?

दसई के छोटका लइका गोरख बेरोजगार। ऊ शहर में रह के नोकरी के तैयारी खातिर कोचिंग में नाम लिखा के पढ़त रहे । एक दिन राष्ट्रीय लोक सेवक संघ के एगो कार्यकर्ता से परिचय हो गइल । गते - गते घनिष्ठता ओकरा से बढ़े लागल। गोरख अब ओकरा जोरे संघ के शाखा आ कार्यालय में जाय लागल। ओकरा उहां निम्मन लागे लागल। उहां किसिम किसिम खेल के माध्यम से भाषण आ प्रबचन के माध्यम से प्रशिक्षित होखे लागल गोरख। राष्ट्रीय लोक सेवक संघ के संस्थापक सदस्य के देश भक्त बतावल जाय। ई लोग ना रहते त देश आजाद ना होइत। गांधी जी देश खातिर खतरा बन गइल रहन । देश के सबसे बड़ खतरा मुसलमान आ वामपंथी के बतावल जात रहे। कांग्रेसी नेता के गद्दार बतावल जाय। नगर कार्यवाहक आ जिला कार्यवाहक प्रशिक्षण देवे के काम करत रहे लोग। कबो प्रांतीय कार्यवाहक आ के करत रहन । राष्ट्रीय लोक सेवक संघ के मूल मकसद रहे दिमाग में नफरत भरे के। संघ के घोषित दुश्मन रहे मुसलमान, इसाई आ वामपंथी। दलित अघोषित दुश्मन रहे। मुसलमान के प्रति अतना नफरत भर दिआइल कि गोरख अब मुसलमान के कट्टर विरोधी हो गइल। गोरख के सहयोग से कुछ अउरी दलित के लइकन संघ के शाखा में आवे लगलें। संघ के उद्देश्य रहे जादे से जादे दलित पिछड़ा वर्ग के लइकन के शाखा में ले आवल जाए। गऊ रक्षा के आंदोलन तेज कके मुसलमानन के निशाना बनावल जाए। मुसलमान के आर्थिक कमर टूटी आ दोयम दर्जा के नागरिक बनला के बादे मुक्कमल हिन्दू राष्ट्र बनी। कुछ गुप्त उद्देश्यो पर काम जारी बा कि कइसे दलित के आरक्षण खतम होई? आ संविधान कइसे बदली ?

अब गोरख के सोच पूरा बदल गइल रहे । जब जब गांव जाय त अपना घर के परिवार के अलावे मुहल्ला में घूम घूम के राष्ट्रीय लोक सेवक संघ के गुण के बखान करे। बतावे कि असली देश भक्त राष्ट्रीय लोक सेवक संघ के लोग बा। पहिले के इतिहास वामपंथी के लिखल ह ,जवन सब फर्जी बा। संघ के शाखा में सही इतिहास बतावल जाला । आपन बहिन सरिता के संघ से जुडे के कहलस । आ बतवलस कि लइकी खातिर अलगे महिला संघ नाम से शाखा चलेला। संघ के जतना शाखा बा कवनो किसिम के जात पात, भेदभाव नइखे। उहां के कवन जात बा पता ना चले। गोरख अपना बहिन सरिता के महिला संघ से जुड़वा देलस । सरितो अब महिला संघ से जुड़ के प्रशिक्षण लेवे लागल । अब तक सावन के महीना आ गइल रहे । नगर कार्यवाहक आ जिला कार्यवाहक के नेतृत्व में एगो बैठक भइल अबकी तय भइल कि गोरख के नेतृत्व में जल ढारे खातिर कांवड़िया जत्था भेजल जाई।

कांवड़िया जत्था के जाय खातिर राह ओह बैठक में तय भइल कि कवन राह से जत्था जाई। इहो तय भइल कि ओह राह में मस्जिद जरूर होखे के चाही। गोरख के कहाइल कि शहर के दलित मुहल्ला से जादे से जादे लइकन के कांवड़िया के जत्था लके जाय के बा। राह के पूरा खर्चा दिआई। गोरख के साथे पहिले से संघ से जुड़ल दलित लइकन मिला के कुल्ह डेढ़ दर्जन लइकन जल ढारे जाय खातिर तैयार। जिला कार्यवाहक सभन के गंजी पैंट , गमछा आ कावंड कीन के देलें। मस्जिद के पास जाके का करे के बा सब जिला कार्यवाहक गोरख के समझा देलें। आ राह के खर्चा देलें। हरी झंडी देखा के कांवड़िया के जत्था के रवाना कइले जिला कार्यवाहक।।

(6)

गोरख के जत्था बड़ी उत्साह में रहे। जत्था के राह में मस्जिद मिलल। ओह समय नमाज़ शुरू रहे। गोरख कांवड़िया के जत्था लेके मस्जिद में ढुक गइल आ जय श्रीराम, बोल बम के नारा लगावे लागल। आ पूरा उत्पात मचा के नमाज़ में बाधा डाल देलस। अफरा तफरी के माहौल हो गइल। पुलिस प्रशासन सब आ गइल। तब जाके ममिला शांत भइल। टी भी चैनल पर समाचार चले लागल कि मुसलमाने कांवड़िया के जत्था पर पथल फेकलें तब कांवड़िया के जत्था उग्र भइल। जिला कार्यवाहक आ नगर कार्यवाहक गोरख के उत्पात करत टी भी चैनल पर देख के खूब खुश। गोरख के जत्था जल ढार के लवटल त शहर में फूल माला से स्वागत कइल गइल।

मस्जिद में गोरख के उत्पात मचावत टी भी पर देख दसई बड़ी खुश। पंडी जी के ऊ बतावे खातिर उनुका दुआर पर गइलें।

गोड़ लागत बानी बाबा ! "

जय हो ! का ह रे दसई ... फेर का कुछो काम बा ?

टी भी देखनी हा बाबा ...?

हं रे... देखनी कि कांवड़िया के जत्था मस्जिद में घूस के बड़ी उत्पात मचवले सं। बड़ी वीर वाला काम कइले सं।

जान तानी बाबा ओह में अगहरिया हमरे नू लइकवा रहे। "

हंअ...... लइका त तोर बड़ा वीर बा रे। खूब बढ़िया दसई।

एगो अउर बात जान ली बाबा !, हमार ऊ लइकवा राष्ट्रीय लोक सेवक संघ में नू शामिल हो गइल बा। "

कब से रे.........?

हो गइल साल भर से अधिके।"

वाह दसई ! खूब नीक काम कइले तू।

अब गोरख के हुडदंग दल में भेज दिआइल। उहां गोरख हुड़दंग दल के साथे मुख्य सड़क पर रात में जाके मवेशी ले जाय वाला गाड़ी के रोक के रोपया उगाहे के काम करें। गाड़ी वाला जब कम रोपया द स त, ई मारपीट पर उतारू हो जात रहन स। जतना रोपया मिले त ओह मे ओकरा के कमे हिस्सा मिले। कुछ महीना बाद गोरख दलिते के लइकन संगे हाईवे पर जाय लागल। गाड़ी रोक के उगाही करे लागल। एक बेर एगो आदमी दुधारू गाय किन के गाड़ी में अपना घरे ले जात रहे। ओकरा कमे रोपया रहे। ई मांगत रहन स जादे। एह खातिर ओकरा के बड़ी मार ,मार देले सा। ऊ अस्पताल में दू दिन इलाज भइल बाकिर ना बाचल। संयोग से ऊ ब्राह्मण रहे। केस हो गइल। गोरख के साथ जवन रहन स सब धरा गइले। आजीवन सजाय हो गइल। राष्ट्रीय लोक सेवक संघ आ हुडदंग दल पाला झार देलस आ कह देलस कि ऊ हमनी के सदस्य ना रहे।

(7)

गोरख के जेल से छोडावे खातिर खूब कोशिश कइले आ रोपया खूब खर्चा कइलें दसई ।बाकिर कुछ ना भइल। संघ के लोग केहू सहयोग करे खातिर खाड ना भइले।

एने बेटी सरिता बरियार भंवर में फंस चुकल रहे। प्रशिक्षण के बेरा प्रांतीय कार्यवाहक रंगेश चौबे के नजरी में चढ़ गइल रहे। अय्यास किसिम के आदमी रहे। महीना में दू दिन कार्यक्रम लागत रहे। प्रशिक्षण देला के बाद शहर के बढ़िया होटल में ठहरत रहे। महिला संघ के नगर सेविका शांति, रंगेश चौबे के सेवा में लागल रहत रहे। रात में रंगेश चौबे के सेवा कके देर रात में लवटे। दारू से परहेज ना रहे शांति के। बहुत दिन से सरिता पर गिद्ध दृष्टि गडल रहे रंगेश चौबे के । शांति से बोल देले रहे कि कसहू ओकरा के पटा के होटल लेके आव। शांति एह मुहिम में लाग गइल रहे। महिला संघ के प्रमुख होखे से शांति के बात मानत रहे सरिता। एक बेर सरिता के होटल तक ले जाय में सफल हो गइल शांति। रंगेश चौबे एक बोतल दारु आ तीन गो गिलास लेके रखले रहे। सरिता के बइठा के कुछ बात समझइलस । तीनो गिलास में दारू ढार देलस आ पहिले शांति के देलस फेर एगो गिलास सरिता ओरे बढ़इलस तो सरिता माना कइलस आ कहलस कि हम दारू ना पी। बाकिर शांति कमान सम्हरलस आ कहलस दारू त हमहूं ना पी। बाकिर साहेब के बात के उल्लंघन ना नू कर सकी। महिला संघ के प्रमुख बने के नम्बर तोरे बा। साहब के कृपा से हम प्रांतीय महिला संघ के प्रमुख बनब। तोरा के इहां जिला के प्रमुख बनावल जाई। ई सब पावर साहब के हाथ में बा। राष्ट्रीय लोक सेवक संघ , महिला संघ चाहे , हुड़दंग दल में ऊपर के केहू पदाधिकारी के आदेश नइखे ठुकरावे के। अनुशासन के पालन बड़ी कड़ाई से होला संघ में। एक पैग पी के त देख। शांति अपने हाथ से पिआ देलस सरिता के। हलुका

फुलका नशा हो गइल सरिता के। फेर दुसरा पैग, तीसरा पैग पिआ देलस शांति। सरिता बिछावन पर सूत गइल। नशा में बेहोश हो गईल। शांति ओकर शरीर के कपड़ा उतार देलस।ओकर खुबसूरत देह देख के बेकाबू हो गइल रंगेश चौबे। आपन हवस मेटा लेलस।

जब नशा टूटल त ओकर शरीर में टूटन महसूस होखे। ऊ शांति से पूछलस, " अइसे काहे होत बा? "

शांति कहलस," पहिला बेरा पिअला से अइसन होला। "

दू महीना बितल त ओकरा उल्टी होखे लागल। उल्टी के दवाई खइलस । कुछो फायदा ना। ओकरा कुछुओ बढ़िया ना लागे। शरीर सुस्त आ आंख पर नींद छोपले रहत रहे। शांति ओकरा के अपना घरे भेज देलस। गोरख के जेल जाय से दसई बड़ी तनाव में। सरिता के तबीयत गड़बड़ाय से घर में सभे चिंता में। दसई एक दिन सरिता के डांक्टर से देखावे खातिर रेफरल अस्पताल में ले गइले । लेडी डाक्टर से सरिता के देखवलें। पेशाब जांच वाला कीट से पता चल गइल कि सरिता के पेट में बच्चा पल रहल बा। दसई ई बात सुनलन कि पेट में बच्चा बा। डाक्टर के क्लिनिक से ह ह … हंसत , आ हिन्दू राष्ट्र आ गइल, हिन्दू राष्ट्र आ गइल । बोलत कहां गइलें? आज तक पता ना चलल।

❑❑

पकड़ी , आरा ,भोजपुर , बिहार

प्रियंका पाण्डेय

हो झुलावै हिण्डोलना लांगुरिया

झूला निमिया के डार झूले मैया हमार,
हो झुलावै हिण्डोलना लांगुरिया

चन्दन काठ औ रेसम के डोरी,
जेपे झूलेलि मैया जी मोरी,
बरसे रिमझिम फुहार,गाये पपिहा मल्हार,हो झुलाव__

झूले मायी बहेले पुरवइया,
पैंग धीरे बढ़ाओ रे लांगुरिया,
माँ कि उड़ै चुनरिया लाल,
मायी मोरी सुकुवार,हो झुलावे-----

लाल लहंगा सुरग रंग चोली,
लागे मायी सुरतिया बड़ी भोली,
करिके सोरहौ सिंगार पहिरे फुलवन के हार ,हो झुलावै-----

रूप मैया के हम का बताई,
चाँद सुरुज भी फीका पड़ी जाई,
माई के महिमा अपार,करें सबके उद्धार ,हो झुलावै ----

❑❑

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

(अध्यक्षा-कंठ कोकिला म्यूज़िकल ट्रस्ट)

डॉ मोहन पाण्डेय 'भ्रमर'

अँगना में उतरे लें सूरज मुंडेर से

अँगना में उतरे लें सूरज मुंडेर से
बहे पुरुवाई बयारि धीरे धीरे।
चमकत अकसवा में लाली पसरि गइल
झुनुक झुनुक बाजेला लोरि धीरे धीरे।।

बोलेलें कागा बइठल मुंडेर से,
झूमे कोयल गावे डार धीरे धीरे।
ललना के अँखिया के कजरा निहारि गइल
पोछेली मैया कोरि धीरे धीरे।।

विहँसत धरतिया उचरे सबेर से,
निकलें किसान कान्हें कुदार धीरे धीरे।
गोरिया के घुंघटा के कोरिया उघारि गइल
भोरहीं के मधुरे बयारि धीरे धीरे।।

हरी हरी घसिया बोले बटेर से
बचिहऽ सिकारिन से यार धीरे धीरे।
निसना निसानी जे काल्हे निहारि गइल
करिहऽ तूँ बचिके,बिचारि धीरे धीरे।।

अँगना में उतरे लें सूरज मुंडेर से
बहे पुरुवाई बयारि धीरे धीरे।।

❑❑

❍ कुशीनगर,उ.प्र.

शरण आशुतोष

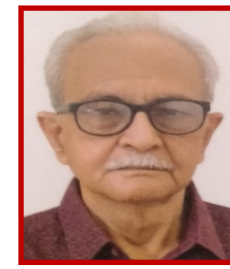

धीया के बिदाई

लोरवा चूआवत डोलिया बैठावेलें, भइया तोहार
भींगल मनवा उदासल अँखिया, देखेलें बाबा तोहार
खम्भवा के पीछे ठाढ़ रोअऽता, छोटका तोहार
कुहुकऽ जनि बेटी, अँखियाँ के लोरवा हमार
काँपऽता मनऽवा,काँपऽता धीरजऽ के दियना
रखीहऽ बेटी ससुररिया में नइहर के लाज
जात बाड़ी आँखऽ के पुतरिआ हमार
धीरे-धीरे डोलीया ले जइह हे कहरवा नाजुक धीयवा हमार।

जगरम के मारल,निनिआ के मातल
अँचरा के लाज,अँखिया के अंजन हमार
जात बाड़ी पिआ घर अनजानल देस
हवले-हवले डोलीया उठावऽ हे कहरवा निंदासल बिटिया हमार
धीरे-धीरे डोलीया ले जइह हे कहरवा नाजुक धीयवा हमार।

सूना भइल अँचरा, सूना बाबा के दुलार
सूना भइल अँगना, सूना सहेलिअन दुआर।
सुबकी-सुबकी जब रोअस बबुनी हमार
ममत उडेलऽ लोरवा पोछी हे लोकनीया भावुक बिटिया हमार।
धीरे-धीरे डोलीया ले जइह हे कहरवा नाजुक धीयवा हमार।

जेठ महिनवा तपिस के दिनवा
लमहर ससुरारी डगरिया
ठौरे-ठौरे रुकी-रुकी जइह हे कहरवा
पियासल होइहें करेजवा हमार।
पनीआ के पूछीह हे लोकनीया
भूखल रह जइहें तरास पी जइहें
मुँहऽवा ना खोलीहें हे लोकनीया संकोची बिटिया हमार।
धीरे-धीरे डोलीया ले जइह हे कहरवा नाजुक धीयवा हमार।

सुखी रहिहऽ ससुरारी में अरदास हमार
सुगनी रे मोह लीहऽ सासूजी के मनवा
हँसत-खेलत बीती हर एक दिनवा
गते-गते डोलिया उतरीहऽ हे कहरवा अनजान ससुरारी के दुअरिआ,
धीरे-धीरे डोलिया ले जइह हे कहरवा, नाजुक धीयवा हमार।

❑❑

❍ पटना,बिहार

भोजपुरी भाषा : एगो पड़ताल

डॉ रजनी रंजन

भोजपुरी भाषा मुख्य रूप से पूर्वांचल, बिहार ,उत्तर प्रदेश, झारखंड तथा नेपाल के तराई इलाका में बोलल जाला।वर्ष 2011 के जनगणना के अनुसार लगभग 50 मिलियन लोग भोजपुरिये बोलेला। दुनिया भर में करीब 20 करोड़ लोग भोजपुरी या इससे मिलत-जुलत भाषा बोलेला। मॉरीशस ,फिजी, त्रिनिदाद, टोबैगो गुयाना हरियाणा दक्षिण अफ्रीका आदि में भोजपुरी के उपस्थिति लउकत बा।भोजपुरी भाषा मागधी प्राकृत से विकसित भइल बा।एकर पहिला लिखित उदाहरण 18वीं सदी में कैथी लिपि में सबसे पहले दस्तावेज के रूप में उपलब्ध मिलल । आरंभिक समय में भोजपुरी में ही सिनेमा जगत भी अपन गीतन के रचनाकारन से लिखववले जेसे भोजपुरी के हर क्षेत्र में पैठ बनल। धीरे-धीरे एकर रूप, स्तर बदल रहल बा। समय समय पर बदलाव देखे के मिलता।आज भोजपुरी देवनागरी लिपि में लिखल जाता लेकिन भोजपुरी के वास्तविक अगर लिपि कहल जाए तो कैथी भाषा ही भोजपुरी के लोक संस्कृति के खूब समृद्धि दिअवलस। भारत में जहां भोजपुरी सिनेमा से लेकर के हर क्षेत्र में, लोक व्यवहार में, देखे के मिलेला उहें मॉरीशस में भी गीतन के 'गीत गवनई' के रूप में यूनेस्को द्वारा मान्यता मिलल बा। भोजपुरी फिल्म में हिन्दी अंग्रेजी मिला के जब तड़का लागल तब एकरा के भोजीवुड कहल गइल।

बड़ी दुख के बाद बा कि एतना दूर तलक फइलल भाषा के हमनिये के भारतीय संविधान में अभी ले शामिल नइखे कइल गइल बा।एकर मांग लगातार भोजपुरी भाषा-भाषी के द्वारा उठावल जा रहल बा।झारखंड सरकार में एकरा के दूसरा राजभाषा के रूप में दर्जा भी देवल गइल बा। भोजपुरी मागधी- प्राकृत के रूप में अवतरित इ लोककथा आ श्रूत के रूप में आपन पहिलका पहचान बनवलस।

कहल जाला कि कैथी लिपि से विकसित भइल इ भाषा 16वीं सदी में आपन प्रभाव देखावे के शुरुआत कर दिहलस। अरबी फारसी के प्रभाव में भी आइल।लोरिकायन (Lorikayan) भोजपुरी के सबसे पुरान आ प्रसिद्ध लोकगाथा (Epic Folk Tale) में से एक बा। भोजपुरी के सबसे प्रारंभिक साहित्य सिद्ध संत आ चर्यापद में (7वीं-8वीं शताब्दी) के रचनाओं में भी मिलेला, जेकरा के सिद्ध साहित्य कहल जाला। हालाँकि, लिखित रूप में ई मुख्य रूप से लोकगीत आ मौखिक परंपरा में रहल, बाद में संत साहित्य (कबीर) एकरा में जान फूंक दिहले। ओकरा बाद भोजपुरी के शेक्सपियर भिखारी ठाकुर (1887–1971) के नाटक (बिदेसिया, गबरघिचोर) सहित अनघा रचना बा जबकि अवध बिहारी सुमन के पहिला कहानी संग्रह 'जेहलि क सनदि(1948) आ पहिला लिखित उपन्यास रामनाथ पांडे द्वारा रचित 'बिंदिया' (1956) बाटे कुल मिला के कहल जा सकेला कि भोजपुरी 19वीं सदी में कैथी से अलग होके देवनागरी में मिलके आम हो गइल भोजपुरी सिनेमा के गीतन के आधारशिला में भी भोजपुरी के महत्वपूर्ण योगदान बा।'हे गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो' मूल गीत के रूप में उभर कर के 1963 में आइल । भोजपुरी भाषा के पहिला व्याकरण साहित्य पंडित शिवदास ओझा द्वारा लिखित "भोजपुरी ठेठ भाषा व्याकरण" मानल जाला जे 1915 में लिखल गइल बा। ई 'भाषा प्रकास' पर आधारित बा, एकरे के भोजपुरी के संरचनात्मक अध्ययन के नींव मानल जाला ।

भोजपुरी साहित्य क्षेत्र में भोजपुरी के लोकगीत कथा कविता नाटक रंगमंच से भरल पडल बा। वर्तमान संदर्भ के अगर बात कहल जाव तऽ यूट्यूब पर भी भाषा के रूप में भोजपुरी के सर्च देखल जा रहल बा। बिहार विश्वविद्यालय में भोजपुरी के पढ़ाई हो रहल बा।आज अनेक संस्था भोजपुरी के विकास खातिर काम कर रहल बा। भिखारी ठाकुर संस्थान भोजपुरी के क्षेत्र में अभूतपूर्व काम कर रहल बा। भोजपुरी के क्षेत्र में वर्तमान में काम करे वाला विशिष्ट कुछ लोग के भी नाम अवश्य लेवे के चाहीं ।एमें डॉ बृजभूषण मिश्रा, डॉ जयकांत सिंह जय, श्री विष्णु राय, जयशंकर प्रसाद द्विवेदी, डॉ अशोक द्विवेदी, डॉ बलभद्र ,डॉ प्रकाश उदय, दिनेश पाण्डेय, भगवती प्रसाद द्विवेदी, डॉ संतोष पटेल, डॉ राजेश कुमार मांझी, कृष्ण कुमार, केशव मोहन पाण्डेय,कनक किशोर, शुभनारायण सिंह शुभ, मनोज भावुक, डॉ सुमन सिंह ,गंगा प्रसाद अरुण (हाल ही में दिवंगत)जइसन आनघन नामी गिरामी लोग भोजपुरी साहित्य के माध्यम से भोजपुरी के सेवा कर रहल बानी।

आंदोलन के माध्यम से भोजपुरी के मान खातिर लड़ाई लड़े खातिर संतोष पटेल जी,राजेश भोजपुरिया जी,पुष्कर जी,आदि संवैधानिक मान्यता (आठवीं अनुसूची) खातिर विश्व भोजपुरी सम्मेलन और भोजपुरी जन जागरण,आ अन्य संस्थाएं भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे खातिर लगातार आंदोलन खातिर काम कर रहल बानी ।अश्लीलता के खिलाफ आंदोलन में भोजपुरी गीतन में अश्लीलता के खिलाफ भी आवाज उठ रहल बा। लोक गायिका मालिनी अवस्थी जी,मनीषा श्रीवास्तव जी, प्रियंका पाण्डेय जी,चन्दन तिवारी जी कईयन मंच व साक्षात्कार में स्पष्ट आवाज उठावत नजर आवेली।

कुल मिला जुला के कहल जा सकेला कि भोजपुरी हर व्यक्ति के मन में आपन स्थान बड़ा जल्दी बना लेवले ।सिनेमा

छाया प्रसाद

सुखिया के माई

जेकरा के देख..अ, सभे कोई सुखिया के माई, सुखिया के माई के रट लगावते रहेला, हमरो त उमिर हो गईल केतना देह घसीट के काम करत रही, अरे तनी अपनो देह चलाव लोग। जब जवान रही त घिरनी अईसन दिनभर काम करत नाचत रही। सुखिया मने-मने बुदबुदात रहे आ आंगना के एगो कोना में गोड़ पसार के घाम तापत रहे।अइसे त सुखिया माई के खीस ना बरे बाकिर कभी-कभी खीसियाले त अइसही अपने मने -मने बुदबुदाहट रहेले, एकर इ पुरान आदत ह।

" तले चौधराइन ओकरा पीछे आके ठाड़ होके कहे लगली, का बुदबुदात बाड़ू, तोहरा के कबे से बोलावत रही।"

आवते रही, ए मलकिनी, का कहीं बड़ा गोड़ दुखाता, उहे तनी बईठ के घाम तापे लगनी ह...। अब हमरो उमिर हो गईल देहिया से अब काम नईखे होत, केतना बरिस भईल रउआ घरे काम करते, बीस बाईस बरिस भईल होई ना... ? कही ना मलकिनी , तब से अबले राउर सभे काम - काज सम्भारते बानी नू...।, बाकिर अब देहिया घिस गईल बीया, कमवा त.. सब करते बानी जानी की घसीट-घसीट के।

कहि ना काहे के बोलावत रहीं।कुछ काम बा का?

" कुछो ना, आराम करे जात रहीं, सोचनी तनी गोड़वा सहला देतू त तनी सुत रहती। चलऽ हमहूं तनी घाम ताप ले तानी, उ, मचिईउवा ले आव... त हमहूँ तनी देर एजीगे बईठ जा तानी, साचो ढ़ेरे जाड़ लागता।"

रुकी, ले आवतानी। हई लिही ईहही बईठी, दिही गोड़वा, हेने बईठल-बईठल दबाईयो देत बानी।

चौधराइन के मन में सुखिया के माई के बात बईठ गईल, साचो ई हमरा घर में जवान से बुढ़ा हो गईल ठीके कहत बिया, देह त थाकिये गईल बा। बाकी एगो बात सोचे वाला बा कि सुखिया के माई हमरा कन बरिसो से काम करत बिया, जवान से बूढ़ हो गइली, एकरे सामने हमरा बेटा, बेटी के बियाह भईल सभे काम सम्भरले रहे खुबे खटत रहे, सभे के खियाल रखत रहे, एही से खुश हो के लोग खुबे बक्शीश आउर कपड़ा आ लत्ता दे के गईल। एही बीच में अपनो बेटी के बियाह कर देलस। हमहूं एकर एहसान चुकावे में कौनो कसर ना छोड़नी। सुखिया के बियाह के सब तईयारी, कपड़ा लत्ता, मर -मिठाई, तनी-

जगत और भारतीय संस्कृति में भोजपुरी के महत्वपूर्ण भूमिका बा। हर संस्कार, हर रीति रिवाज, परंपरा आदि सब भोजपुरी के गीत से सराबोर बा। लोगन के मन में गीतन के माध्यम से अपन मनोभाव व्यक्त करें के साधन बड़ी आसानी से भोजपुरी दिलवा देवली। एतना सुंदर आ मधुर भाषा के विकास में हमनी भारतीय नागरिक के जरूर योगदान देवे के चाहीं। जवन भाषा के आपन लिपि बा आ जेकर आतना समृद्ध साहित्य आ लोक दुनों बा, आज पोखरा खातिर संघर्ष करें कि पड़ता काहे की भोजपुरी भाषा अपन भाषा पर संवाद काम करात बरन अंग्रेजी के नाम पर अपन भाषा के कुर्बानी देके अईठे वाला लोग भाषा के अस्तित्व पर ही संकट डाल देले बाड़ें। अन्य भाषा के स्वीकृति आ अपना भाषा से विकृति इ साफ साफ कुंठित मानसिकता के परिचायक बा। जे साहित्य के समृद्ध करे में आपन मुख्य भूमिका में रहे ओही भाषा के आज अपना अस्तित्व खातिर लड़े के पड़ऽता। अंग्रेजियत से ही ओहदा बढ़ावे के प्रयास के बदले अंग्रेजियत के साथ आपन माईभाखा के सम्मान दिहल आपन मुख्य कर्तव्य समझ के सभे फेर से अलख जगाई आ पुनर्स्थापित करीं सभे। संदर्भ खातिर गुगल से सहयोग लिहल गइल बा।

❑❑

घाटशिला,झारखंड

मनी गहना गुड़िया सब त..अ करिये देनी, आँख मुदले चौधराईन ईहे सब सोचत रही तबे सुखिया के माई एकदम से ध्यान तोड़ देलस, कहे लागल सुत गईनी का मलकिनी ?

"ना हो कुछो-कुछो सोचत रहीं।"

हम सोचनी कि रउआ सुत... गईनी।

" बताव...मचिया पर कईसे कोई सुती, दूनो लोग हंसे लागल।"

ठीके कहत बानी।

सुखिया के माई के सुभाव बात ठीके बा,ख्याल बात रखेले पर अपन मन के बात ना बतावे , हमरा कन एतना दिन से बिया बाकी का कही, चौधराइन के मन में भईल आज ऐकरा से पूछ के रहब कि ऐकर दुल्हा कहां बा, ई काहे सब छोड़छाड़ के नईहर भाग आइल, जब पूछिला त टाल जाले, घाघ ही अ केहू के कुछो ना बतावेले इहे सोच के चौधराइन ओकरा से पूछे लगली। कहली -

"ए सुखिया के माई तू...त केतना बरिस से ईहां बाड़ू, जवान से बूढ़ हो गईलू बाकी अपन पहिले के जिनगी के बारे कुछो ना कहेलू, ना कुछो बतिआवेलू का...हे , हो , तूत हमरा घर के एगो बैक्ति निअर बाड़ू हमनी से कहे में का बा ।"

से...त ठीके कहत बानी बाकिर का कही हमार जिनगी जईसन बितल बा नू, का कही, सात घर दुश्मनों के भी भगवान ना देस। जब उ दिन याद आवेला नू मलकिनी, मन करेला कि भोकार पार के रोई, किस्मते खराब बा त का कही, केकरा से का कही बाकी रउरा कहत बानी त...सुनी -

जानी कि माँ-बाप त सभे देख दाख के निमन घर में बियाह देलस लोग। निमन नौकरी-चाकरी, कलकत्ता कारखाना में काम करत रहस, आच्छा तनख्वाह मिलत रहे, देखे सुने में भी गोर-नार, लम्बा-तगड़ा, एकदम हमर बुच्चीया सुखिया निअर..

"हा, तोहार सुखिया त...ढ़ेरे सुन्दर बिया।"

हा त..जानी कि ओईसने रहस, सास ससुर भी ठीके रहे लोग। हम गांवे में रहत रही, बुचिया के बाबूजी आठ दस दिन में आ जात रहस। एक साल के बाद सुखिया भी हो गइल। दिन बढ़िये से गुजरत रहे बाकी कपार पर त कुछो आउर लिखल रहे।

एक दिन जानत तानी कलकत्ता से खबर आईल कि बुचिया के बाबूजी के सिपाही पकड़ के जेहल में डाल देले बा, सुनके सभे के करेजा दहल गइल। रोना -धोना मच गइल, हमहूं डेरा गईनी, का जाने का भईल दादा। भिनसहरे हमार ससुर कलकत्ता ला निकल गईले। बुचिया दू साल के रहे। चिन्ता के मारे ना कोई खाय ना पिये, कईसहू दू दिन बितल तब जाके बाबूजी, हमर ससुर कलकत्ता से अईले। सभे के मन में चिन्ता लगले रहे का भईल सभे पूछे लागल, हमहूँ केवाड़ी के पीछे ठाड़ हो गईनी सुने ला।

माई पूछे लगली का भईल बबुआ के काहे जेहल हो गईल बा, कही ना...।

.बाबूजी चिल्ला के कहे लगलन का कही गमछा से मुंह ढांपके रोये लगलन कहे लगलन, उ अईसन कपूत निकलल कि मुंह दिखावे लाईक ना छोड़लस, चोरी-चकारी में पकड़ाईत त कहती कि केहू झूठे बोल के फंसा देलस, मारे पिटे में पकड़ाईत त.....एगो बात रहे बाकिर ई..त अईसन नीच काम कईलस ह... कि कवन मुंह से कही, कारिख पोत देलस मुंह में।

सभे के परान अटकल रहे, माई तनी जोर से कहली का कईलस ह... कहब?

कहतानी सुने के ताकत रख....अ , हरामी अपना एगो यारी के साथ एगो लईकी के उठा लेलन स आउर सुनसान जगह में ले जाके ओकर इज्जत लूटलनस। उ लईकिया थाना में नालिश कईलस ओकर हालत भी ठीक नईखे।

ई सुनते सभे के काठ मार गईल। हमरा त जानी की आग लाग गईल, बताई बियाहल मरद एगो बेटी के बाप अइसन करी।

चौधराइन - "साचो अइसन घिनौना काम कौनो माफी के लायक नईखे।"

अइसन-ओइसन घिनावन काम, हमरा त ओही दिन से ओकरा से अइसन नफरत भ गईल ओकरा सूरत से ओकाई आवेला।

बोलते-बोलते सुखिया के माई के सास फूले लागल।

"चौधराइन- तोहार सास फूलता पानी पी...ले।"

सास हमार त.... सउसे देह फूले लागेला जब उ इयाद आबेला। का कही मलकिनी सास- ससुर के मुंह जोह के रही, आखिर उ लोग के का गलती रहे, बाकिर पूरा गांव में थू-थू होखे लागल..। गांव गवार में त कोनो बातछूपे ला हवा नियर सगरो फइल गईल चारो तरफ बदनामी होखे लागल। गांवे में कोई आवत-जात ना रहे। घर में मनहूसित छा गईल रहे, उ बूचिया तनी खेलत-कूदत रहे, हँसे हँसावे त दिन कटत रहे। जानतानी सास कहस का कि चिन्ता मत कर...अब सब ठीक हो जाई, बबुआ आ जइहे, सुनते एतना खिस बरल नू की का कही कबहू पलट के उनका के जबाब ना देले रहीं, बाकी ओ दिन कह देनी, उनकर नाव मत लीं हमरा सामने, जे दिन उ अइहें उ दिन हम इहाँ से चल जायब अब हमार उनका से कौनो रिश्ता नईखे उत रउरा लोगिन के खियाल करके इहाँ बानी।

सुन के उनका अच्छा ना लागल, कहे लगली अइसे काहे बोलत बाड़ू कि तोहार रिश्ता नइखे, रिश्ता जे दिन तोरा मांग में सेन्दूर डललस वोही दिन हो गइल, आ...बेटी केकर ही..अ, अट बट कुछो-कुछो बोलते जात रही, तले बाबूजी आ गईलन, सब बतवा सुनत रहस आके कहे लगलन कि कनियाँ ठीके कहत बाड़ी, जे अदमी मेहरारू बच्चा के रहते अइसन नीच काम करी, ओकरा से कौनो रिश्ता रखे के कौनो जरुरत नइखे। जहां तक रिश्ता रखे के बात बा उ...त जेल से छूटिहे तब नू, आज काल अइसन घिनावन काम कइला से जिनगी भर के जेल होई ना त फांसी के सजा होला।

माई कहे लगली का कहत बानी, कुछो कहत रहेलन आ खुबे रोये लगली।

हमरा त..उ मरद से अइसन घीन बरत रहे कि का कही, बताई...ओइसन अदमी खातिर रोआई बरी।

ओ घड़ी त... बाबूजी चुप हो गइले।

बाकिर दू-तीन दिन के बाद हमरा के बुलवले आ कहले कि बईठ तहरा से कुछो बात करेके बा। बाबूजी से कबहूँ बात ना कईले रही लाजे किवाड़ के पीछे ठाड़ हो के कहनी कि कही ना।

बाबूजी कहले ईहा आके बईठ...ढ़ेरे जरुरी, आ सोचे वाला बात बा, दे....ख, बुच्चीया के अभागा बाप के आवे के कवनो उमीद नईखे, बुच्चीया अब बड़ होखे लागल बा, सउसे गांव में हमनी के ढ़ेरे बदनामी हो गईल बा। बुच्चीया ईहा रही लोग ओकरा के दस बात कही, ताना मारी लड़की हि...अ, आज छोट बिया, काल बड़ होई, शादी-बियाह करे के होई, जे हमनी के भईल से भईल ई लयकी के जिनगी के सवाल बा, देख...अ तू तनिको खराब जन मनिहऽ, हम करेजा पर पत्थर रखके ई फैसला कईनी ह कि तोहार ईहाँ बुच्चीया के साथे रहल ठीक नईखे, तू अपन नईहर चल जा, उहही रह...अ, हम तोरा खर्चा पानी के पईसा देत रहब, हम तोहरा से आ बुच्चीया से मिले आवत रहब, आखिर हमरे खून हिय, बिना देखले कइसे मन मानी, तू दूनों मतारी बेटी के जिनगी सुख चैन से बीते ईहे सब बहुते सोच-बिचार के अईसन कहत बानी। हमनी के चिंता नईखे केहु तरह कटिये जाई बाकिर तोहनी के अभी पूरा जिनगी बाकी बा। बाकिर सु...नअ ई बात केहु पता ना चले के चाही सभे कुछ चुपे-चुपे करे केबा। बूझलू नू, ठीक बा नू, हमरा के कह...अ।

हमहूं मलकिनी, सोचनी कि बाबूजी ठीके कहत बारन, एगो त बिना मरद के का ससुराल , आउर दूसर बुच्चीया के जिनगी, हम कह देनी ठीके सोचत बानी।

फिरु जानी कि एक दिन अन्हेरिये में बाबूजी मतारी बेटी के लेके निकल गईले कि केहु के कानो कान पता ना चलल।

तबे से ये मलकिनी ईहां आ गईनी। नईहर में भी केहु के हमार आइल नीमन ना लागल बाकी सब जान के भी मन दबा के रह गईनी। केहु के कुछो पता ना लागे, एह से खुबे खुश रहे के नकल करत रही, रात के सुते जाई नू त मन भर रो लेत रही, भगवान के कही, हे भगवान मातारी बेटी के सही ठिकाना लगा दी जहां ईज्जत के साथ जिनगी कट जाये। लागल की भगवान ई दुखिया के पुकार सुन लेले आ तब राउर दुआरी के आसरा मिल गईल। बे-बुलवले नईहर में, जे दिन- रात वेलावल निअर रहत रही ओकरा से जान बचल, अपन भी त ईज्जत होलानू। रउरा घर में आसरा मिलल तनी मन निश्चिंत भईल, बाकिर

बुच्चीया के बियाह के चिन्ता लागल रहे।

रउरा कहनी कि एतना दिन ईहां बानी बाकी अपन पहिले के किस्सा केहूं से ना कहनी, हां मलकिनी ठीके कहनी, जब तक बुच्चीया के बियाह ना भईल हम अपना मुंह पर ताला लगा देले रही, केहु के बुच्चीया के बाप के करतूत मालूम हो जाईत नू, त बियाह कइल मुश्किले रहे। ऐही से चुप रही, अबे रउरा पूछनी त बता देनी। ईहे त हमार कारिख पुतल जिनगी के कहानी बा।

"आ..ऐ सुखिया के माई,तोरा सास -ससुर के का भईल ?"

उ जबले माई कन रही छुपत-छुपत आवत रहस, जब से रउरा ईहां आ गईनी ओकरा बाद से आना-जाना छोड़ दिहले, हमु कहनी कि हम रउरा कन से कमाये लागल बानी अब हमरा के पईसा-कौड़ी के दरकार नईखे। उहो निचिंत हो गईले, फिरु के जाने का भईल का ना भईल। कुछो ना जानी। ना उ लोग के कुछो खबर आइल ना हम ही जाने के कोशिश कइनी का करती जान के ना आना ना जाना।हमार सास के त बड़ा खराब लागल होई, बाबूजी जे हमरा के भेज देलन। खूब कुड़बुरात होइहे।बाबूजी जे सोचलन से ठीके सोचलन कि ना बताई मलकिनी आजले उहां रहती त का चैन से रहती सगरो गांव मे बदनामी हो गईल रहे, इहां त बूचियां के कुछ नइखे मालूम उहां रहित नू त अपन बाप के सब करतूत जान जाइत। अइसे त इहे जाने ले कि बाप नइखन।हमहूं त ओइसही बिना सिंगार-पटार के रह गइनी, रउरा त देखबे कइनी।

इहे त कहानी बा हमार कर्म फूटी जिनगी के आज सभे सुना देनी रउरा के बाकी एगो बिनती बा रउरा से कि हमरा बूचियां के कुछो मत बतायेंब जइसे चलत बा चले दी।रउरा के सब बता देनी, मन हल्का हो गइल बाकिर इ बात अपना मने मे राखब।

सुखिया के माई हड़बड़ाहट के ठाड़ हो गईल आ कहे लागल आईहो दादा बातें करत रह गईनी, सांझ हो गइल, ढ़ेरे काम बाकी बा, च....ली, रउरो त बईठले रह गईनी ई कह के सुखिया के माई काम में लाग गईली।

सुखिया के बाप के कोर्ट जे सजा देले होय, ना देले होय, चाहे जब देले होय लेकिन सुखिया के माई जे सजा देली उ भूलावे लाईक नईखे।

❑❑

❍ जमशेदपुर, झारखंड

उदय शंकर प्रसाद

अचरा

अचरा के पचरा से जीव ना ओराइल माई
खचड़ा से खचड़ा भी भाग के लुकाये माई
बाबू जी के डाट के तूफान जब मड़राये
ईयाद तोर अचरा के बहुते सताये माई।

दादा भइया फूफा चाचा होये ना सहाये माई
देख देख दूसरा के जीवा छछनाये माई
दशा आपन केकरा से कइसे सुनाई माई
अचरा के पचरा से जीव ना ओराये माई।

सब सुख एक ओरि ना अचरा भेटाई माई
कवन तूफान जवन ना ओसे रोकाये माई
स्वर्ग अउर जन्नत जे ना हमके भेटाइल माई
तऽ अचरा मे केकरा भाग के लुकाई माई।

❑❑

❍ चंपारण,बिहार

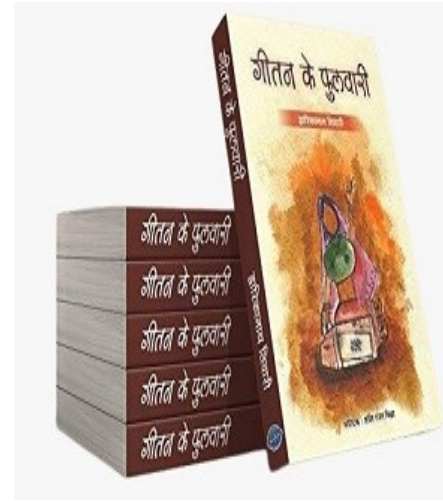

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

दू गो कविता

आरक्षण दे !

चर-अचर, जड़-जंगम के,
वरदान, करऽ के भक्षण दे।
दिल्ली ! तूँ आरक्षण दे॥

बनि बी जे पी भा कांगरेस
मार-काट के मचा रेस।
बस वोट-चोट के खेला में
जरिको आपन बची देस ?

बिख बोवऽ, बिख बोलऽ के ,
मनई-मनई के लक्षण दे। दिल्ली ! ---

कुछ बचि जाये फिर धरम खड़ा
जाति–जाति से खूब लड़ा।
फिर एस सी, एस टी, यू जी सी
जनता के जेलन में सड़ा॥

फिर लूट, लूट से छूटऽ के
कानून बना,संरक्षण दे। दिल्ली !---

शिक्षा शिक्षा से आरोपित कर
रोजगार के लोपित कर।
झूठ–साँच, हल्ला-गुल्ला कर
धूरी में बस रसरी बर।

लबारन के जोड़-तोड़ के
पदवी, कवनो विलक्षण दे। दिल्ली !---

कुरसी सत्ता सबसे बड़हन
धरम करम के हँसी उड़ा।
मांस, मदिरा आ अय्यासी क
माथे पर अब तिलक जड़ा।

संविधान से छेड़-छाड़ के,
अध्यादेस, तूँ तत्क्षण दे। दिल्ली !---

❑❑

दुई गाल बतिया लीं

गाँव घरे, कतने मिलिहें
जेके चाहीं, कउचाँ लीं। दुई-गाल, बतिया लीं॥

ओरियाइल बा नेक नियति
हीत-नाता बिला गइल।
देखि-देखि के मुँह बिजुकावें
परेम परस्पर कहाँ गइल।
पलिहर में बोईं उहे
जवना के उपजा लीं। दुई-गाल, बतिया लीं॥

अपनन में बा गारी-गुपुता
लत्तम-जुत्तम रोज रोज के।
दिन कइसे जाई खाली
झगरा करिहें खोज-खोज के।
कुकुरो सरमाये लगलें
अबो त मुँह छुपा लीं। दुई-गाल, बतिया लीं॥

बूढ़ा-बूढ़ी निपट अभागा
केकरा से आस लगइहें।
नमक हराम भइल बेटवा
सरहज-साली लगे भेटइहें।
उनही खातिर जरल जिनगी
अब केकरा के छतिया लीं। दुई-गाल, बतिया लीं॥

अऊँघाईं अब भा निनिआईं
सपनों अब राउर नइखे।
घरे घरे के रहन भइल
कुछो अब बाउर नइखे।
उधियाइल हाँथे से सब
बाचल जवन, गठिया लीं। दुई-गाल, बतिया लीं॥

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

कुँवर सिंह के आखिरी रात

मनोज भावुक

कुँवर सिंह- पुण्यतिथि विशेष

26 अप्रैल 1858 के रात कुँवर सिंह के आखिरी रात रहे. तीन दिन पहिले 23 अप्रैल के 80 बरिस के एह घायल शेर के कटल हाथ पर कपड़ा बन्हाइल, ओकरा ऊपर से चमड़ा के पट्टा से ढ़ाल के बान्हल गइल, तिलक लगावल गइल. फेर त ई राजपूती तलवार अंगरेजन के गाजर-मूली के तरह काटल शुरू कइलस. ली ग्राण्ड के जान गइल आ बाकी बाँचल अंग्रेज सैनिक जान बचा के भगलन सन. जगदीशपुर आजाद हो गइल. यूनियन जैक के झंडा उतार के परमार वंश के भगवा पताका लहरावल गइल. लोग खुशी के मारे पागल रहे आ कुँवर सिंह भी. 23 तारीख के कुँवर बाबू के सबसे छोट भाई आ युद्ध में उनके सबसे मजबूत हाथ बनके तैनात रहल अमर सिंह के जगदीशपुर के जमींदारी सौंप दीहल गइल. अमर के बेटा रिपुभंजन के उत्तराधिकारी बनावल गइल. सभा समाप्त भइल. बाबू कुँवर सिंह महल के भीतरी गइलें त उनका कटल हाथ में होत असह्य दर्द के ध्यान आइल. अचानक उ लड़खड़इलें, भाई आ भतीजा उनके सम्हारल लोग आ ले जा के उनका बिछौना पर सुता दिहल लोग.

विजय दिवस से मृत्य दिवस के बीच एक-एक पल उ जिंदगी खातिर मौत से लड़त रहलें. जिनगी के बीतल पन्ना सिनेमा के रील के तरह पलटत रहलें. जब इंसान अपना जिनगी के सफर के अंतिम पड़ाव पर रहेला त ओकरा आपन हीत-मीत, मोखालिफ़, जानकार सभे इयाद आवेला. उनका आँखिन का सोझा उनकर बाबूजी साहबजादा सिंह, माई पंचरत्ना, पत्नी देवमूंगा, भाई अमर सिंह, साथी हरीकिशन सिंह, बंसुरिया बाबा, अंग्रेज अफसर विलियम टेलर, विन्सेंट आयर, डगलस आ ना जाने केतना लोग के तस्वीर नाचत रहे. ओही में सबसे तेजी से नाचत रहली धर्मन बाई.

त ई धर्मन बाई के रहली आ कुँवर सिंह से इनकर का नाता रहे? धर्मन बाई आरा शहर के एगो नर्तकी रहली; बहादुर स्त्री, अप्सरा लेखां सुंदर, मध जइसन गला वाली, नृत्य अउरी गीत गवनई में मँझल, वीरांगना आ कीचड़ के बीच रहे वाली कमल. बहुत लोग कहेला कि उ त नाचे वाली रहली बाकिर उ लोग ई ना जानेला कि उ माटी के रक्षा खातिर कुँवर सिंह के स्वतंत्रता अभियान में शामिल हो गइली आ अपना शरीर पर गोली, तलवार, भाला के घाव लेहली बाकिर पीछे ना हटली. धर्मन बाई अपना बहिन करमन के साथे रहत रहली आ नाच गाना उनकर पेशा रहे. उनके प्रसिद्धि पूरा शाहाबाद क्षेत्र में फइलल रहे.

उनके कुँवर सिंह से मुलाकात तब भइल जब एगो उत्सव में उ अपना बहिन के साथे प्रस्तुति देबे आइल रहली. उनके सुरीला कंठ से मार्मिक गीत अउरी भाव भरल नृत्य देखके बाबू साहेब काफी प्रभावित भइलें. बाबू साहब एगो कुशल शासक त रहबे कइलें, साथे गीत-संगीत के पारखी रहलें. कुँवर बाबू खुद गावे-बजावे में निपुण रहलें आ साल भर में फगुआ, चइता जइसन कवनो आयोजन ना छोड़ें जहां गीत-संगीत के उपासना होत होखे. उहाँ के नजर में हर एक कलाकार महादेव के रूप नटराज के उपासक रहे. एही से ओह कलाकार के कला के सराहना ईश्वर के उपासना से कम ना रहे. कुँवर बाबू धर्मन के एह प्रस्तुति खातिर खूबे बड़ाई कइलें. धर्मन कुँवर बाबू के बारे में सुनले रहली. आज उनका बात-विचार से बहुते प्रभावित भइली. इ दुनू जाना के पहिला मुलाकात रहे.

एक बार धर्मन आ करमन जंगल में घूमे गइल रहे लोग. उहवें एगो अंग्रेज दुनू बहिन से छेड़खानी करे के कोशिश कइलस. भाग्य से ओही जंगल में कुँवर सिंह अपना दल बल के साथे शिकार खेले गइल रहलें. उ समय पर आके दुनू बहिन के सम्मान आ प्राणरक्षा कइलें जवन धर्मन के मन में कुँवर सिंह के बहादुरी के प्रति अनुराग जगा देहलस. एकरा बाद कुँवर सिंह से उनके एक दू मौका पर अउरी भेंट भइल. धर्मन के नृत्य देखे कई गो अंग्रेज अफसर आवsसन आ उनका सामने मदिरा के नशा में बहुत कुछ अइसन बक द सन जवना गुप्त जानकारी होखे. धर्मन एगो सहृदय देशभक्त नारी रहली. उनका अंदर भी भारतीय लोग पर हो रहल अंग्रेजन के अत्याचार खातिर खीस रहे. जब उ कुँवर सिंह से मिलली त एह आक्रोश के आग के हवा मिलल. धर्मन कुँवर के अंग्रेजन के अत्याचार आ ओकनी के प्रपंच के जानकारी देबे लगली. कुँवर सिंह शुरुए से बागी रहलें, आ अपना सीना में कंपनी सरकार खातिर गुस्सा दबवले रहलें. उ धर्मन के एह राष्ट्रभक्ति से बड़ा खुश भइलें.

ओह समय कुँवर क्रांतिकारी नेता आ जमींदारन के संपर्क में रहलें. सभे कंपनी सरकार के खदेड़े खातिर गोलबंदी करत रहे, योजना बनावत रहे, संसाधन जुटावत रहे. धर्मन धीरे-धीरे कुँवर के नजदीक होत गइली. कुँवर के आपन पारिवारिक जीवन बहुत उथल-

पुथल अउरी नकारात्मकता से भरल रहे. कुँवर अक्सरहाँ एकांत में समय बितावे जितौरा जंगल के अपना शिकारगाह में आ जास. धर्मन सहृदय त रहबे कइली, जीवन दर्शन के बड़ा समझ रहे उनका. उहो अक्सरहा जितौरा चलि आवस. कुँवर बाबू के अंतरमन में बरिसन से लागल जाला साफ करे लागस. इंसान कई बार अपना उलझन के हल जानेला आ ओकरा से निकलहूँ के चाहेला बाकिर निकल ना पवेला. ओकरा एगो अकुंसी लगावे वाला के गरज होला जवन ओकरा माछी जइसन छटपटात मन के विचारन के मकड़जाल से बाँहि पकड़ के बाहर निकाले. धर्मन उहे अँकुसी रहली.

धर्मन त बाते बात में कुँवर बाबू के प्रति अपना अनुराग के प्रकट कs देहले रहली बाकिर कबो बदले में बाबू साहब से कवनो मोह आ माया के इच्छा ना कइली. ई निःस्वार्थ प्रेम ही रहे कि कुँवर बाबू हमेशा धर्मन के साथ देहलें. उनसे कबो बियाह ना कइलें बाकिर उनके ओसहीं सम्मान देहलें जइसे उ अपना परिवार के देत रहलें. कुँवर बाबू साहेब के चरित्र के ई बड़प्पन रहे कि सगरो समाज खातिर जे धर्मन बाई रहली, उनका खातिर उ धर्मन देवी रहली; उ धर्मन जे बाबू साहब के हर छोट-बड़ फैसला में सलाह देस, उ धर्मन जे बाबू साहब के देश खातिर लड़ाई में साथे साथे चलली, उ धर्मन जे कबो उनके पत्नी त ना बनली बाकिर कुँवर बाबू के रास्ता में आवे वाला बाधा के सामने खुद खड़ा होखे खातिर तैयार रहली.

साल 1857 के आखिरी में ग्वालियर के नजदीक काल्पी में अंग्रेजन से आमना-सामना के लड़ाई में धर्मन दुश्मन से खूब लोहा लेहली. एक ओर से कुँवर लड़त रहलें, एक ओर से उनके साथी लोग लड़त रहे. घमासान युद्ध मचल रहे. काल्पी के बगइचा लड़ाई के खून से पाटल मैदान हो गइल रहे. अचानक एगो अंग्रेज के गोली चलल आ सामने के तोप पर तैनात कुँवर के एगो सिपाही मर गइल. तोप से आग गरजल बंद भइल त अंग्रेजन के ओह साइड से कुँवर सिंह के बनावल चक्रव्यूह में घुसे के राह लउकल. तले धर्मन बिजली के रफ्तार से गोलियन के बीच से ओह तोप के लगे पहुँच गइली आ मोर्चा सम्हार लेहली. गोला पर गोला दगली आ अंग्रेजन के आगे ना बढ़े देहली. तले कुँवर सिंह अउरी उनके सेनापति आके अंग्रेजन के घेर लिहल लोग. अंग्रेज तीन ओर से घेरा गइलन सन अउरी उलटे पाँव भाग गइलन सन. तोप गरजल शांत भइल. धर्मन अपना जगहि से उठे के चहली बाकिर बेजान होके बइठ गइली. कुँवर बाबू दउड़ के अइलें, धर्मन के सर अपना गोदी में रखलें. उ धर्मन के जल्दी ठीक होखे के ढाँढ़स देत रहलें, उनका आँखी में लोर भरल रहे, सभे अकबकाइल रहे. धर्मन कहे चहली कि बाबू साहब अब हम जा तानी, माफ करब रउआ साथे अउरी दूर तक ना चल पवनी. बाकिर कहि ना पवली, कई गो गोली आ तीर के चलते उनके ढेर खून बही गइल रहे, देह में हूब ना रहे. हाथ उठवली, कुँवर बाबू के लहलहात गलमुछ छुअली, एक बार पीला पड़त चेहरा पर मुस्कुराहट लिअवली आ एगो सच्चा वीरांगना अउरी प्रेयसी के जइसन एह माटी अउरी कुँवर बाबू के आलिंगन में आपन प्राण छोड़ दिहली. कुँवर बाबू के आँख से झर झर लोर गिरत रहे.

बिस्तर पर सुतले-सुतल करवट बदललें कुँवर बाबू. बाबू साहब के आँख से लोर झर झर गिरत रहे जइसे अचानके सुखल झरना में पहाड़ से पानी आके झरे लागल होखे.

❑❑

(लेखक मनोज भावुक भोजपुरी साहित्य आ सिनेमा के जानकार हईं .)

❍ नोएडा (उ०प्र०)

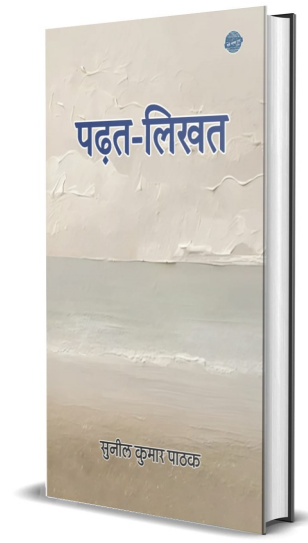

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के बिहार में आयोजित पहिलका अधिवेशन - *1976 के रिपोर्ट*

अंकुश्री

अधिवेशन के स्वर्ण जयंती वर्ष पर

{वर्ष 1976 में बिहार के पहिलका अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन 15 आऊर 16 मई के पटना स्थित राम मनोहर राय सेमिनरी हाई स्कूल परिसर में भइल रहे। ओह घड़ी हम पटना में 'नालन्दा ब्लौक सेन्टर' (नया टोला, पटना-4) से आर्टिस्ट के पोस्ट छोड़ के पटना के प्रकाशन-बजार में स्वतंत्र रूप से पत्रिका आ किताब के कवर आदि के आर्ट-डिजाइन करत रहीं। हम सम्मेलन के रिपोर्ट तइयार त कइनी, बाकिर अगले महीना पटना से राँची आ गइनी आऊर नोकरी के प्रयास में लाग गइनी। जाँच आउर साक्षात्कार देवे खातिर जहाँ-तहाँ जाए में समय निकलत गइल। एहसे सम्मेलन के रिपोर्ट के ओर धेयान ना दे पइनी आ ऊ फाईले में दबल रह गइल। तेंतीस बरिस बाद 2009 में ओह रिपोर्ट पर नज़र पड़ल तब ऊ टंकित हो पाइल। ओह घड़ी 'भोजपुरी माटी', कोलकाता में हमार रचना खूब छपत रहे। टंकित रिपोर्ट छपे खातिर ओहीजा भेज देहनी। बाकिर सम्मेलन के रिपोर्ट छपला ना छपला के कवनो जानकारी ना मिल पाइल। जानकारी लेवे खातिर हम दू गो चिठियो लिखनी। लेकिन जादेतर भोजपुरी पत्रिकन लेखा उहवों से कवनो जवाब ना आइल। ओकरा बाद फेर ई रिपोर्ट दब के रह गइल। आठ महीना से हम दिल्ली-प्रवास में बानी। एही दौरान फाइल में एह पर नज़र पड़ल ह त निकाल के फेर से पढ़नी हँ।

सम्मेलन के दौरान मैदान में लागल कुर्सी पर बइठ के रिपोर्ट लिखले रहीं। सुने, समझे, लिखे आ पढ़े में सब कुछ हू-ब-हू नइखे हो पाइल। एहू बात से इन्कार नइखे कइल जा सकत कि सम्मेलन के दौरान एकरा में हमरा खातिर आइल नया-नया नाम आ संदर्भ सुने आ लिखे में कुछ गड़बड़ा गइल होखे। एहसे निहोरा बा कि एह तरह के गड़बड़ी पर धेयान ना दीहल जाई भा ओकरा खातिर अन्यथा ना लिहल जाई - अंकुश्री}

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिलका अधिवेशन साहित्य सम्मेलन भवन, इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में सन् 1974 में भइल रहे। दूसरका अधिवेशन 16 आउर 17 मई, 1976 के पटना में अशोक राजपथ पर अवस्थित पुस्तक आ अभिलेख के संग्रहालय खुदाबख्श खाँ लायब्रेरी के सामने गली में राम मनोहर राय सेमिनरी हाई स्कूल के प्रांगण में भइल। साँझ 5 बजे से आयोजित अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में शामिल होखे खातिर लोग दूर-दूर से आइल बाड़न। भारत के करीब-करीब हर कोना से श्रोता त ना बाकिर वक्ता आऊर सभा में शामिल होखे वाला लोग आइल बाड़न। आज के कार्यक्रम के सभापति प्रकांड विद्वान आचार्य डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी जी बानी। उहाँ के साँझ 7 बजे अइनी। उनकरा आवे के इंतजार में कुछ लोगन के कविता -पाठ भइल।

श्री राकेश जी 'वीर कुंअर सिंह' से कुछ छंद पढ़लन। श्री रामनाथ प्रसाद 'प्रणयी' एगो गीत सुनवले, ''उतरेला सोना अइसन भोर। नीमवा के गछिया से फूस के मड़इया पर। चल तनी गँऊआ के ओर।''

छपरा से आइल श्री सतीश्वर वर्मा, जे बिहार विश्वविद्यालय में भोजपुरी के पहिलका अध्यक्ष हईं, कहत बानी, ''कहनी ना मानेला बदरा गुमानी, महला के साथ धोवे हमरी पलानी - - -।''

एगो आऊर कवि के कविता पाठ भइला के बाद श्री अनिरुद्ध जी गइलें, ''रतिआ के घुंघटा के उघारे असमनवा, हँसेला मिलन में पेआर - - -'' गीत बहुत अच्छा रहल।

श्री गणेश दत्त 'किरण' आपन वीर रस के कविता गावेलें। ई भोजपुरी के 'भूषणजी' कहालन। इनकर पहिलका कविता रहे, ''अरजी दशो नोह जोरि शारदा से करीं विनती कि भारत के बचावे के मौर द। - - - ककरी के चोर ना कटाला कटारी से। भभक मत अब, केरासन के ढिबरी जस - - - राख में लपेट जीभ सट से उखारी लेब।'' ई कविता चीन के लड़ाई के समय लिखाइल रहे। उनकर दोसर कविता बा - ''लड़कइयाँ''। ''धनी लड़कइयाँ के रहे बेवहार, धनी - - -। कबो खेलीं गोली, कबो गुल्ली डण्डा, कबहीं तुरेंली रामकिशुन कोईरी के भण्डा - - -।''

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी आ गइल बानीं। कविता-पाठ बंद हो गइल। कुमारी सावित्री आउर कुमारी सुभद्रा के स्वर में भोजपुरी के राष्ट्रीय गीत ''बटोहिया'' से मंगलाचरण भइल, ''सुंदर सुभूमि भैया भारत के देशवा से मोरे प्राण बसे गंगा धार रे बटोहिया। जाऊ-जाऊ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ, जहाँ ऋषि चारों वेद गावे रे बटोहिया - - -।''

मंगलाचरण के बाद बिहार के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री केदार पाण्डेय जी के छपल स्वागत भाषण सुनावल गइल। ऊ भाषण पढ़े में समय ढेर लाग गइल आ ठीक से पढ़ाइलो ना। इनकर स्वागत भाषण के बाद अध्यक्ष आचार्य हजारी प्रसाद जी द्विवेदी के आसन-ग्रहण करे खातिर पटना विश्वविद्यालय के उप कुलपति आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा जी संक्षेप में, गोलिआ के निवेदन-भाषण कइलन।

आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा जी कहलन, ''आज 9 करोड़ लोग भोजपुरी बोलत बा। मारीसस आ त्रिनिदाद तक में भोजपुरी में बतकही होला। - - - हिन्दी भाषा के इतिहास बनावे में आधा भोजपुरी भाषा के हाथ बा। भोजपुरी क्षेत्रे में बड़हन-बड़हन लोग के जनम भइल बा। कबीर, भारतेन्दू, नाटककार जयशंकर प्रसाद, उपन्यासकार प्रेमचन्द - - - पूर्ण साहित्यकार आचार्य द्विवेदी जी भी भोजपुरिए क्षेत्र (बलिया) के हवन। हिन्दी निर्माता भारतेन्दू जी से द्विवेदी तक भोजपुरिए रहल बा लोग। - - - भोजपुरी में राजनीति ना घुसे के चाहीं, शुद्धता रहे के चाहीं।'' श्री शर्मा जी के निवेदन भाषण के श्री कृष्णकान्त बाबू, विधायक समर्थन कइलन।

अध्यक्ष पद से आचार्य श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी जी बोले के शुरू कइलन। बुढ़ापो में उनकर बोली में कतना कड़क आ ओज बा - ई सुननीहारे के बुझा सकेला, ''- - - हमरा बड़ा अफसोस बा कि हम आज तकले भोजपुरी में ना लिखनी। पाण्डेय कपिल जी के निवेदन पर आवे के सकार लेनी। ऊ हमार भाषण लिख के मंगले रहलन। सोचनी आपन भाषा ह, लिख लेब। बाकिर सोझ लकीर पाड़ल बड़ा टेढ़ होला। - - - बधना में पानी होखे तब नू गिरो - - - । भोजपुरी भाषा बड़ी सशक्त भाषा ह। एमे लोकगीत के त भण्डार भरल बा। बाकिर एकनी के खोजे के होखी। भोजपुरी में लोकगीत समेटल गइल बा, मुहावरा बटोरल गइल बा। - - - एसे काम ना चली। एकनी के खोज-खोज के जमा करे के आऊर ओकर अध्ययन आ शोध करे के होई।''

धातु रूप के बारे में उहाँ के कहनी, ''पूछताछ' का ह ? लोग कहेला निरर्थक शब्द ह। हम बहुत खोजनी त मिलल। पूछत-आछत माने पूछ त अच्छा बा। पूछ के करब त अच्छा होई। इहे 'पूछत-आछत' से 'पूछताछ' भ गइल बा। भोजपुरी बड़ा शक्तिशाली भाषा ह। देश-विदेश में जे जहवाँ बा, अपना घर पर भोजपुरिए में बतिआवेला। अतना शक्तिशाली भाषा ह त एमे कामों ऊपरे-ऊपर ना, बलुक गहराई से होखे के चाहीं। खोज-खोज के शोध करे के पड़ी।'' ऊहाँ के आगे कहनी, ''भोजपुरी में एगो शब्द बा - 'सोगहग'। खोजत-खाजत अबहीं हाल में शिवसागर जी के आंचलिक उपन्यास 'अलग-अलग वैतरणी' में एकहग ई शब्द मिलल। आ एक जगह हमरा महाभारत के दूनो खण्ड एके साथ - सोगहगे मिल गइल। तब हम जननी कि सोगहग का ह। एगो आऊर शब्द बा - 'नीमन'। प्राकृतिक में 'निर्मल' के 'निम्बल' कहल जाला। ऊहे भोजपुरी में 'नीमन' हो गइल बा।

द्विवेदी जी आगे कहनी, ''भोजपुरी में साचहूं एगो बात बा - गरीबी के शराप लागल बा। - - - भोजपुरी श्री शदल मिश्र जी से आरम्भ होखेला। पता ना ऊ लिखले बाड़न कि ना ! लिखलही होइहें। भारतेन्दू जी त बनारसी में खूब लिखले बाड़न। - - - शुद्ध हिन्दी लोग के पचत नइखे। भोजपुरी चाहेला - 'सोगहग' आ 'नीमन'। - - - भोजपुरी पर त हिन्दी टीकल बा। राहुल, भारतेन्दू, आदि अपना के एही में खपा देलें बाड़न। ई लोग के रहे ? - भोजपुरिया ! - - - पाली, जवना भाषा में बुद्धजी उपदेश देले बानी, का ह - भोजपुरी के बदलल रूप ह। आज लोकभाषा के जीआवल जरूरी बा। आ ई काम होखी संगठन बनवला के बाद। - - - भोजपुरी हिन्दी के ना छोड़ी, काहे कि ओकरा त सोगहगे चाहीं। भोजपुरी में ई बा कि ई बिकाई कम। भोजपुरी में दू काम करे के पड़ी। एगो त ई कि संग्रह आऊर ओकर अध्ययन आ दोसर ई कि अइसन कविता, कथा, लोकगीत, गाना लिखाओ कि लोक-चित्त में समा जाये।''

द्विवेदी जी आगे कहत बाड़न, ''हिन्दी आ भोजपुरी अलग नइखे हो सकत। ई दूनों दू आँख ह। एकर झगड़ा कि बांया आँख मजबूत बा कि दांया आँख, बेकार बा - - - लोक भाषा के संरक्षण जरूरी बा। नीमन चीत्त से सोगहग लिखाओ। - - - राजनीतिक घुसपैठी त एहमें होइए जाई। ऊ लोग कहे लागी कि भोजपुरी पर अतना जोर एगो अलग स्टेट बनावे खातिर त नइखे दिआत। ईश्वर के बाद राजनीतिके लोग बा जे सर्वबेआपक बा। बाकिर अतना प्राणवन्त भाषा गलत रस्ता से नइखे जा सकत। राजनीति एमे प्रधान नइखे हो सकत - - - सब भाषा में पुरस्कार मिलेला। आ साहित्यकारन के मजदूरी काहे ना मिलो ? भोजपुरी में लागल साहित्यकारन के उपेक्षा ना होखे के चाहीं। - - - भोजपुरी आ हिन्दी दूनो के समान भाव से जे प्रतिभा के परिचय देता उनकर सम्मान होखे के चाहीं। हम दूनो भाषा के प्रणाम करत बानी।''

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के भाषण के बाद श्री दारोगा प्रसाद राय जी के लोग बोले खातिर खड़ा कर देलन त ऊ आपन बोली आऊर बोले के तरीका से लोग के खूब हँसवले। ऊ अपना के रोकते-रोकत तीन बेरा भोजपुरी बोलते-बोलते हिन्दी बोले लागल रहस।

ओह दिन अंत में डा0 *बसन्त कुमार जी धन्यबाद ज्ञापन कइलन। रात के 9 बज गइल रहे। एकरा बाद कवि सम्मेलन के आयोजन भइल। कवि सम्मेलन के अध्यक्षता कोई दोसर आदमी के दिआइल रहे, जे ना आ पइलन। एसे पाण्डे नर्मदेश्वर सहाय जी (वकील, हाईकोर्ट आऊर त्रैमासिक भोजपुरी पत्रिका 'अंजोर' के संपादक) के कवि सम्मेलन के अध्यक्षता के भार दिआइल। कवि सम्मेलन के समहुत मंगलाचरण से ईहे कइलन। राग बिरहा में गवलें, ''लोहवा देहिआ दीह से दुरगा हो पथरा के दीह करेज। सुर-धुन तू दीह कोइली के बोलिया में - - संपवा-संपिनिया छोड़ेले केंचुलिया, गंगा मईया छोड़ेली अरार। एतने विनतिआ सुनीह शारदा तू, - - - रखीह लाज हमार। तोहरा दुआरी से अइसन भीख माँगऽ तानी कि सजीह जिनिगिआ के साज।''*

एकरा बाद आऊर लोग आपन-आपन कविता-पाठ कइलन। पहिले गीतकार माधव पाण्डेय 'निर्मल' जी अइलन। रोहतास के रहनिहार आ जमशेदपुर से पधारल 'निर्मल' जी दस बरिस से गीत लिख रहल बाड़न। इनकर गीत के संग्रह बा ''राही''। ''बिआह के रात'' गीत गवलें, ''ओरी तर अंगना में बइठल बरतिआ, ओरी तर अंगना में ॥

गाँव घर- - - - - - - बतिआ। ओरी तर अंगना में ॥

- - - -माई-बाप के छतिआ। ओरी तर अंगना में ॥
- - - - -जेकास नईखे दंतिआ। ओरी तर अंगना में ॥
- दुलहा कनखी से देखे ले सुरतिया। ओरी तर अंगना में ॥''

तीसरका कवि श्री चितरंजन जी के कविता भइल, ''ईमरजेन्सी''।

''जान तानी राम रहीम तहार दादा।
बात करीं कम तनी काम करी जादा ॥''

उनकरा बाद प्रो0 *उमाकांत वर्मा जी कविता पाठ करे अईनी। मसरख (सारण) घर बा, आर0 एन0 कालेज, हाजीपुर में हिन्दी के विभागाध्यक्ष बानीं। रेडियो पर ढेर प्रोग्राम भइल बा। कएठो भोजपुरी फिलिम में गीतो लिखले बाड़न। आपन गीत सुनवलन, ''इयाद भरल अंजूरी में, गंध भरल अंजूरी में। ओर-सोर सपना कोंचाइल, टहनी के टेसवा टेसुआइल ॥''*

श्री रामजी सिंह 'मुखिया' हास्य-व्यंग्य के कविता सुनवलें - ''धरती के बेटा''।

श्री सतीश्वर शर्मा 'सतीश' बिहार विश्वविद्यालय में प्राध्यापक बानी। गज़ल सुनवलें, ''जल के धरम बिना ना हमार जिनिगी - -।''

सातवाँ कवि अइलन श्री भोलानाथ 'गहमरी'। इलाहाबाद से आइल बानी। ''बयार पुरवइया'' इनकर प्रकाशित गीत संग्रह बा। फिलिमों में इनकर गीत लिआला। दूगो गीत गइलन। एगो ''अलंकार'' आ दोसरका प्रतीक्षा-गीत ''भींजे द, भींजे द - -।'' गइलन।

उनका बाद बारी आइल श्री विश्वनाथ प्रसाद 'शैद' जी के। ईहाँ के डुमरांव से आइल बानी, ''धन्य भोजपुरी ह धन्य हमार भोजपुरी के माटी। एसे ना केहु आंटल ना केहु आंटी।''

कवि श्री कुंज बिहारी प्रसाद 'कुंजन' जी के आमंत्रित कइल गइल। इनकर प्रकाशन ह - ''सीता के लाल'', ''कुंजन रमायण''। अबहीं ईंहा के ''कुकरहट'' लिख रहल बानी, जेकरा में से हास्य-व्यंग्य से भरपूर दू ठो कविता सुनवलन, ''जहिआ से अँखिआ के दूनो बवलिया हो गइल फ्यूज, तहीआ से कह तानी प्लीज एक्सक्यूज - - -।''

गाजीपुर से आइल कवि श्री कपिल मुनि 'पंकज' कविता पढ़लन, '' - - थक गइल टंगरी ठेकाना ना भेंटाए रे, लमहर डगरी, ना हमार ओराए रे।''

इगारहवाँ कवि श्री गंगा प्रसाद 'अरूण' जी अइलन। जमशेदपुर से पधारल 'अरूण' जी नया उमिर के बानी। इनकर प्रकाशित संग्रह बा, ''हहरत हियरा''। ''छुछ मन में हो रहल बा दरद के विस्तार, साथी बोल द एक बार। एक तड़पत प्राण के बा अब कहाँ निस्तार, साथी बोल द एक बार - - -।'' प्रयास अच्छा लागल।

रोहतास से आइल श्री राम प्रवचन 'अंजोर' जी दू गो कविता सुनवलन, ''कहली कौसल्या माई का कइलू बहिनी, हई कइसन जीदिआ धइलू।'' दोसर कविता एगो गरीब भाई आ ओकर अमीर बहिनी के आपसी परेम पर सुनवलें, ''दुअरिआ मोर अइह बिरनू, भइआ नेवता बिआहे ले अइह नू - -।''

श्री कुबेर नाथ मित्र 'विचित्र' देउरिया से आइल बानी। आज के बबुआ पर दू ठो गज़ल सुनवलें, ''हमरा त बुझाता कि केहू के केहू से निबही ना नाता।''

चम्पारण से आईल श्री योगेन्द्र शर्मा जी कविता पढ़लन। बाकिर जादे आधुनिक बने के कोशिश में प्रयास बिगड़ गइल।

उनका बाद डुमरांव से आईल नाटककार आ अभिनेता श्री बेकार 'भोजपुरी' जी बबुआ पर आपन कविता पढ़लन, ''हम आपन माथ पकड़ लेनी, जब गिर पड़ल हमरा माथे।''

सोलहवाँ कवि भभुआ से आइल बानी - श्री सिपाही प्रसाद 'मनमौजी'। तीस-बत्तीस बरिस के उमिर, पातर देहि पर हलुका मुस्कान आ ओपर से गीत के शान। पहिले त मुक्तक सुनवले। ओकरा बाद गीत। प्रयास अच्छा लागल।

अब बारी आईल श्री संतराज सिंह 'राकेश' के, जिनकर घर आमी (सारण) ह और जे रेडियो के गीतकार इवन। गीत गवलें, ''कते दिन रामा भरब हम गगरी। ठारी भरीं त गगरियो ना डूबे, निहूरी भरीं त भिंगेला हमर चुनरी'' आऊर ''लहरात बदरिआ आईल रे !''

श्री सुरेश कुमार 'देहाती' पलामू से आईल बानी। ई कहलन कि लोग हँसावे ला, हम रोआवत बानी। बेटी के बिदाई के करूण गीत गवलें, ''माई तोरा अँचरवा में फूलवा फुलाइल कि आज बाबू दिहलें दिलहीं लगाई रे माई।।''

भोजपुर के श्री भुवनेश्वर प्रसाद 'भानुजी' वीर रस में दू ठो कविता सुनवलें, ''भोजपुरी वर्णन'' आ ''मरद भोजपुरिया''।

श्री चतुरी चाचा बनारस से आईल बानी। पूरा नाम ह - डा0 मुक्तेश्वर प्रसाद 'बेसुध'। भोजपुरी में एगो मुक्तक सुनवला के बाद खड़ी बोलियो में एगो मुक्तक सुनवलें। फेर दू गो गीत गवलन, ''झूठ-मूठ चान्द कविअन के मनभावन बा। देवता के खंडहर आ चेहरा भकसावन बा।।''

बक्सर निवासी श्री अविनाश चन्द्र 'विद्यार्थी' जी पटने में रहिला। आपन प्रकाशित ''कौशिकायन'' पढ़ के सुनावे लें, आजहूं सुनवलें।

श्री मदन जी के कविता रहे, ''पुषवा के रतिआ गिरेला तुषार रे - - ।''

श्री बालकवि अंगद मिश्र 'राकेश' (नेपाल), श्री प्रसाद 'किरण' (चम्पारण), श्री कुंज बिहारी सिंह 'कुंजन' दोहरउआ फरमाइस पर अइलन। 'कुंजन' जी ''कुकरहट'' में से ''देश के जवान'' (व्यंग्य) आ ''दरजिए बा चोर'' सुनवलें।

इनकरा बाद श्री कालू राम 'अखिलेश' जी, श्री देव कुमार 'अलमस्त' जी, श्री वकील शरण 'शरणार्थी' जी अइलें। श्री 'कुंजन' जी गीत सुनवलें, ''एक दिन छूटी जइहन सब नगरिआ, डगरिआ छोड़ के जाए के पड़ी।''

श्री अनिरुद्ध जी, श्री चन्द्रकान्त जी (हुगली) आदि के बाद चार-पाँच कविअन के फेरू दोहरउआ भइल। फेर नया लोग के कविता-पाठ भइल। कुल मिला के करीब चालीस कविअन के कविता आ गीत भइला के बाद एक बजे राति के ओह दिन के सम्मेलन पूरनाहूत भइल।

दोसरका दिन सांझो के सम्मेलन चलल। अतिथि के रूप में केन्द्रीय कृषि मंत्री आरा निवासी श्री जगजीवन राम जी आइल बानी। इनकर भाषण के बाद दू-तीन वक्ता लोग आपन-आपन वक्तब्य दिहलस।

अंत में सांस्कृतिक कार्यक्रम भइल, जवना में गीत-नाटिका, गीत, नाटक आदि भइल। साढ़े ग्यारह बजे राति ले सम्मेलन पूरा भइल।

सब मिला के ई सम्मेलन भोजपुरिया के अलावे गैर-भोजपुरियन लोगनो में भोजपुरी पढ़े-लिखे के चाव कइलस - एह में कवनो सक-सुबहा के गुंजाईस नइखे। आ कवनो सम्मेलन-अधिवेशन के उद्देश्यो इहे होला। ई सम्मेलन अपना उद्देश्य में भरपूर सफल रहल। एह तरह के चाहे एकरे जइसन अधिवेशन साल में एक-दू गो होत रहे के चाहीं, जवना से भोजपुरी के दिशा आऊर साफ हो सको।

❑❑

❍ 8, प्रेस कालोनी, सिदरौल,
नामकुम, राँची (झारखंड)–834 010
मो0 62049 46844

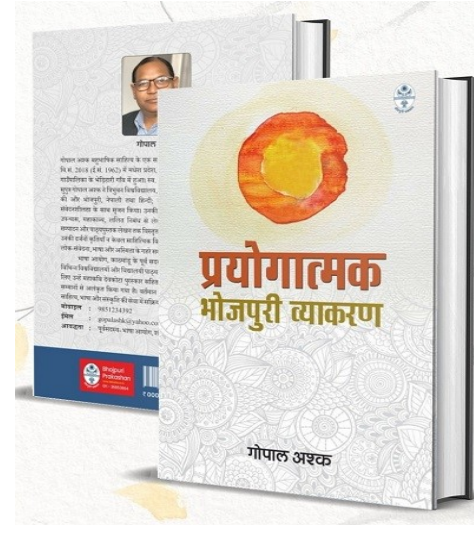

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"

गमछा

माथे पर गमछा सजावल गइल बा,
जइसे सवांग के जगावल गइल बा।

जेठ के दुपहरी में लू से देहि झुलसे,
तऽ माथ के ओहार बनावल गइल बा।

उठे जब बबूला के बेजोड़ झोंका,
त मुँह के पट्टी से बचावल गइल बा।

कबो बींड़ बन के ई माथा पे सोहे,
तऽ माथा पऽ बोझा उठावल गइल बा।

खेतवा में मोटरी में सतुआ बँधाइल,
त फाँस के झोरी बनावल गइल बा।

चले जब ना पुरवा तऽ बनि के बेना,
कि खुद के हवा ई खियावल गइल बा।

कुँआ के जगत पे जो लोटा ना डूबे,
त डोरी के कामो चलावल गइल बा।

अमवा के टिकोरा जो गिरल बग़इचा,
त खोंइछा बना के उठावल गइल बा।

सहर के उ टाई के चमक बा फीका,
कि इज्जत के गाँठ लगावल गइल बा।

'विनायक' ई माटी के अइसन महक बा,
जेके रोम-रोम में बसावल गइल बा।

❑❑

❍ श्रीकरपुर,सिवान

अभियंता सौरभ कुमार

नेह के पाती

सोचनी कि पन्ना पर लिख दीं सनेहिया तोहार
लिख देहलस तकदीर बीच डगरिया में हार
अब कलम रोवत बा कि लिखल छोड़ दीं!
कि ई कोरा कागज के मरोड़ दीं।

सुनीं ला जब पायल के ओही पुरान झंकार
लागेला जैसे करेजा पर चलत बावे कटार
अब कान मूँद लीं कि पाजेब तोड़ दीं!
कि याद के गलिया से मुँह मोड़ दीं।

गइनी चमन में जहाँ खिलल रहे फूल
ओहपर भी जम गइल रहे विरह के धूल
अब बगिया उजाड़ दीं कि फूल तोड़ दीं!
कि काँटा से नाता आपन जोड़ दीं।

वक्त के थपेड़ा मारत बावे अब तान
सुनसान भइल बावे ई दिल के मकान
अब साँस लेवे के आस छोड़ दीं!
कि ई जिनगी के पन्ना ही फाड़ दीं।

सोचनी कि चाँदनी से रउशन करीं ई रात
बाकिर अँधियारा दे देहलस दुख के सौगात
अब टिमटिमत तारा देखल छोड़ दीं!
कि चकोर निहन चाँद से नेह तोड़ दीं।

लोगवा त पूछेला कि काहे बाड़ऽ चुप
तड़पत बा धूप में ई सपनन के रूप
अब महफिल में जाइल छोड़ दीं!
कि दुनिया के रीत से नाता तोड़ दीं।

सोचनी कि सँवार दीं ई उजड़ल संसार
बाकिर लहरिया ले गइल बीच मँझधार
अब पतवार धइल छोड़ दीं!
कि लहरन के साथे खुद के मरोड़ दीं।

❑❑

❍ सिवान, बिहार

माई हमार!

महेन्द्र तिवारी

माई हो तुहीं आदि शक्ति, तुहीं श्रद्धा के पावन धाम।
तोहरे चरन में हम झुकींले, बेरी बेरी करीला परनाम॥
ममता के शीतल लहर हउ, अउर करुणा के विस्तार।
तोहरा बिना ई जग सुना बा, तुहीं जीवन के आधार॥

तुहीं हमके चलेके सिखवलू, दिहलु पहिला संस्कार।
छाती से लगाके हमके, दिहलु जिनीगिया के आकार॥
दुःख सहलु तू अनगिनत, मुँह पर रखिके मुस्कान।
लइका सभ के भाग के, तुहीं रहलु अमिट वरदान॥

लोरी गाके थपकी देके, सुतवलु हमके बारंबार।
तोहरे आंचर में छिपल रहे, सुख के सब संसार॥
जरत घाम में छाँह तुहीं, पिआसाला के तुहीं पानी।
शक्ति के रूप हउ तुहीं , ममता के अवघड़ दानी॥

त्याग अउर बलिदान के, तू मूरत रहलु ए माई।
सब्द में हम का लिखीं, बखान भी कम पर जाई॥
भगवान के रूप हउ तू, धरती पर दिव्य अवतार।
तोहरा से ही महकत बा, ई घरवा अउर परिवार॥

दुखवा हर लेहलु माई, अमृत दिहलु हमके पियाई।
तोहरे ममता के कहानी, कहियो खतम ना हो पाई॥
हर बाधा से लड़ गईलु तू, बनके ढाल हरगिश अभेद्य।
सब कुछ तोहरे चरन में बा, हमार भक्ति अवुर नैवेद्य॥

माई तू मूरत हउ प्रेम के, तोहरा अइसन केहूना ओझा।
जग के सब नाता फीका बा, तोहार ममता के सोझा॥
माई के याद पर कलम हमार, गोड़ छुअत बा तोहार।
महतारी तोहरे कोरा में, सुख मिलल हमके बेशुमार॥

❑❑

❍ राष्ट्रीय अभिलेखागार,
जनपथ, नई दिल्ली-110001

सन्नी भारद्वाज

पइचा प पानी

जेठ भइल अषाढ़, इ बताय देती
तनी पइचा प पानी दीवाय देती।

कह देती बदरा से बीचड़ा झुराता
मटीया में चकता दरारी बुझाता।
बुना बुनी गिर के जियाय देती
तनी पइचा प पानी दीवाय देती॥

का जानी कहवा बा रहिया भुलाइल
देऊवा निमोही काहे बा बिसराइल।
कही के जोगिनिया जगाय देती
तनी पइचा प पानी दीवाय देती॥

बगिया बगइचा आ खेत खलिहानी
जिया जन छछने ले पशुआ परानी।
सभकर अरजी लगवाय देती,
तनी पइचा प पानी दीवाय देती॥

अफड़ता पोखरा नहर नदी झरना
भुखल न तलवा के माई बीया खरना।
कुलहीन के जीनीगी बचाय देती,
तनी पइचा प पानी दीवाय देती॥

जेट भइल अषाढ़, इ बताय देती,
तनी पइचा प पानी दीवाय देती॥

❑❑

❍ कैमूर, बिहार

लाल बहादुर चौरसिया 'लाल'

पसीना

यहर पसीना वहर पसीना।
बहेला आठो पहर पसीना॥

उप्पर देखा आगि बरति हौ,
काँपे गउंवा सहर पसीना।
इहै लगै कुछ कयि जायी,
गरमी छिटलै जहर पसीना।

तनिकै घुमि के बइठल बानी,
देंह भयल बा नहर पसीना।

पंखा कूलर फेल भयल बा,
करत न कउनो असर पसीना।

लाली पउडर चुयि चुयि जाला,
ढावै बहुतै कहर पसीना।

गौने कै दुलहिन चिल्लालीं,
सासु भइल बेखबर पसीना।

'लाल' बदरवा कहाँ भुलयिला,
डारि के सबके भँवर पसीना।

❑❑

❍ आजमगढ, उत्तर प्रदेश

दिनेश पाण्डेय

हमरे अछते कुँअरि के बरे

दूर कहीं मानर के थाप प
सहगान उभरता।

टील्हा के पीछे से उचुकत
कुछ माथ जनाता-
अधीर,
अनस में नाक फ़नफुनावत,
पोंछ डोलता
जइसे बौखी में काँपत तार के बलुरी,
भूंक्-भुंक् के कुढ़ल सुर
ससर आइल ह अबे,
हेनेले।

झूमर के माहौल में विलापत गायन
भा ऐन जतरे प सायास छींके के
एगो अलगे फितरत ह।

❑❑

❍ पटना, बिहार

बड़का रंगदार के

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

का जमाना आ गयो भाया, मजबूरी के लोग अपनइत बता रहल बा आ हाल देखि-देखि के थपरी बजा रहल बा। कवनो मउसम विज्ञानी के रिमोट दोसरा के हाथ में थम्हावत देखल कुछ लोगन के अचरज में डाल रहल बा। ढेर लोग त देखि के चिहा रहल बा। कवनो मुँहफुकवना भिडियो बना के सोसल मीडिया पर डाल देले बा। जहवाँ भिडियो देखिके मउसम विज्ञानी के संघतिया लोग के बकारे नइखे फूटत। उहवें उहाँ के गोतिया लोग चवनिया मुसुकी काटि-काटि के माजा मार रहल बा। एक-दोसरा से भुसुरा-भुसुरा के मउसम विज्ञानी के दोसरका भिडियो सोसल मीडिया पर वायरल करे में जी-जान से लाग गइल बा, जवना में मउसम विज्ञानी उनुका संगे ठाढ़ ना होखे के फतिहा पढ़त माटी में मिल जाए के कवल उठा रहल बाड़ें। ओह घरी गोतिया के पाँत वाला लोग थपरी से मेज बजा रहल बा आ दयाद लोग बगली झाँक रहल बा। बगली झाँके वाला लोग मने मन कुछ ठानियों रहल बा। जब ओह लोग का हिसाब से मोका भेंटी,तब उहो लोग आपन खेला देखावे में इचिको ना हिचकी। अचके में कुछ लोग के हिचकियो आ रहल बा । अब आ रहल बा त आ रहल बा, कइलो कुछ ना जा सके। पानी पी पी के हिचकी रोके लोग कि दोसरा के कोसे, ई एगो अझुरहट के मसला बा।अब जवन मसला बा, ओह पर विचार होखबे करी। कब होखी, ई अबही बतावल मोसकिल बा।

तिवारी बाबा के पान के दोकनिया पर एह बाति के लेके गोल प गोल बना के लोग बतकूचन में लागल बा। मुद्दा एकही गो बा 'बड़का रंगदार' के ? इहाँ रंगदारियो के अलगे अंदाज बा । अंदाजो अइसन कि जवन कब बदल जाई, एकर कवनो भरोषा नइखे। भोरे कुछ आउर आ संझा के कुछ आउर। एक्के दिन में कई बेर बदल सकत बा, परिधान मंतरी के परिधान लेखा । ई भरोषा वाली बतिया कुछ समुझ में कमे आवेले। काहे से कि भरोषा नाँव के जीव अब एह दुनियाँ में बाचल नइखे। जहाँ-तहाँ कुछ मिलबो करिहें त उ अल्पसंख्यक के कोटा में मिलिहें। अल्पसंख्यक के मतलब पांचो बखत वालन से नइखे। इहाँ कुरसियो के खेला नइखे कि अल्पसंख्यक के नाँव पर वोट खातिर कुछों बोले भा कुछों करे में एह देस के नेता लोगन के ढेर खुसी होले। ई प्रजातिये अइसन होले, जवन कुरसी खातिर कुछो आ कबों करे खातिर तइयार रहेले। बाक़िर इहाँ बाति जवन बा, उ बा **'बड़का रंगदार'** के। सभे से नाँव बदल-बदल के रंगदारी वसूले के बा । रंगदारी वसूले खातिर कवनो बहाना मिल जाये त ठीक नाही त गढ़ा जाई कवनो नवका बहाना। बाति एतने भर नइखे, एहमें कुछ अउरो खेला बा। दुकनियों चलावे के बा, जवन समान बनल बा, ओकरा बेचहूँ के बा। अइसन खेला जवना में राम के आगे राम आ रहीम के आगे रहीम बोल के आपन काम निकारे के चलाकी भर भर के बा । मजे के बात ई बा कि एकरा कुछ लोग बुझियो नइखे पावत आ अपने नटई के नाप थमा देत बाड़ें। जब नटई के नाप हाथ में आइये गइल बा त दबावे काहे चूके भला। एह फेरा में एह घरी कई लोग फँस चुकल बा आ आपन सत्यानास करवा रहल बा। अइसने लोगन का चलते उनुका दुकनियो जम के चल रहल बा आ रंगदारी के त का पूछेके।

चाह के भा न चाह के उनुका के लोग **'बड़का रंगदार'** मानिये लेले बा आ किलस के भा हँस के रंगदारी चुका रहल बा। अपने लोगन से उनुका के आपन बड़का हितैसी बता रहल बा। एह बतावे वाला काम खातिर बड़का-बड़का मीडिया हाउस लागल बा। पचास रुपिया चुका के दस रुपिया वापिस पाके इहाँ के लोगन के खुस होखे के सिवा अउर कउनो रसतो नइखे लउकत। रउरा के कउनो रसता लउकत होखे त हमरो के बताएम। तब तलक अपना देस के लोगन लेखा हमहूँ राह निहारत रहब।

❑❑

संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

KBS AIR & GAS

KBS Air & Gas Engineering

SALE & SERVICE

* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.

Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India
E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com
MOB. : +91-7042608107, 8010108288

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

लाइक आ सब्सक्राइब करी आ

भोजपुरी साहित्य : रचना-आलोचना

से जुड़ी

@RachanaAalochana